सूरतु बनी इस्राईल-१७

سُورَةُ بَنِي إِسْرَائِيلَ

सूरः बनी इस्राईल* मक्के में उतरी तथा इसकी एक सौ ग्यारह आयतें तथा बारह रूकूअ हैं।

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) पवित्र है[1] वह (अल्लाह तआला) जो अपने भक्त [2] को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا

---

*यह सूरः मक्के में अवतरित हुई। इसलिए इसे मक्की कहते हैं। इस सूरः का दूसरा नाम *अल-इस्रा* भी है। इसलिए कि इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्रा (रात्रि के समय मस्जिदे अक्सा ले जाने) का वर्णन है। सहीह बुख़ारी में है कि आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद स्वयं सुनकर कहते हैं कि *सूरः कहफ़, मरियम* तथा *बनी इस्राईल* यह प्रथम कालीन में से हैं। (तफ़सीर *सूरः बनी इस्राईल*) عتيق का बहुवचन है عتاق (प्राचीन) तथा تلاد भी تالد का बहुवचन है। तालिद प्राचीन धन को कहते हैं। अर्थ यह है कि तीन सूरतें उन प्राचीन सूरतो में से हैं जो मक्का में प्रथम काल में अवतरित हुईं। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रत्येक रात्रि को *सूरः बनी इस्राईल* तथा *सूरः ज़ुमर* का पाठ करते थे। (मुसनद अहमद भाग ६, पृष्ठ ६८ तथा १२२, तिर्मिज़ी संख्या २९२ -३४० तथा अलबानी ने इसे सही कहा है। सहीहः संख्या ६४१, भाग २)

[2] سبحان، سبح يسبح का रूप है। अर्थ है أنزه الله تنزيها अर्थात मैं अल्लाह को प्रत्येक दोष से पवित्र तथा शुद्ध मानता हूँ। सामान्य रूप से इसका प्रयोग ऐसे अवसरों पर होता है जब किसी महान विषय का वर्णन हो। अर्थ यह होता है कि लोगों के निकट प्रत्यक्ष साधन के आधार पर यह घटना कितनी भी असम्भव हो, अल्लाह के लिए कोई कठिन नहीं। इसलिए कि वह किसी साधन के लिए बाध्य नहीं वह तो शब्द कुन (كن) से पलक झपकते में जो चाहे कर सकता है। साधन मनुष्य के लिए हैं। अल्लाह तआला इन बंधनों तथा न्यूनता से पवित्र है।

[2] إســـــراء का अर्थ होता है रात्रि के समय ले जाना। आगे ليلا (रात्रि) इसलिए वर्णन किया गया ताकि रात्रि की अल्पता स्पष्ट हो जाये, इसीलिए वह जातिवाचक संज्ञा है। अर्थात रात्रि के एक भाग अथवा थोड़े से भाग में। अर्थात चालीस रात्रि की यह यात्रा, पूर्ण रात्रि में भी नहीं, अपितु रात्रि के एक थोड़े से भाग में पूरी हुई।

ٱلَّذِى بَٰرَكْنَا حَوْلَهُۥ لِنُرِيَهُۥ مِنْ ءَايَٰتِنَآ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ①

अकसा [1] तक ले गया जिसके निकटवर्ती क्षेत्रों में हमने बरकतें (विभूतियाँ) प्रदान कर रखी हैं,[2] इसलिए कि हम उसे अपने सामर्थ्य के कुछ प्रतीक दिखायें।[3] निःसंदेह अल्लाह (तआला) ही भली-भाँति सुनने देखने वाला है।

---

[1] أقصى दूर को कहते हैं। बैतुल मक़दिस, जो अल-कुदस अथवा इलिया (प्राचीन नाम) नगर में है तथा फ़िलिस्तीन में स्थित है, मक्का से अल-कुदस तक की यात्रा ४० दिन की है, इस आधार पर मस्जिदे हराम की तुलना में बैतुल मक़दिस को मस्जिदे अक्सा (दूर की मस्जिद) कहा गया है।

[2]यह क्षेत्र प्राकृतिक नदियों तथा फलों की अधिकता तथा नबियों की धरती है जहाँ उनका निवास स्थान तथा समाधि स्थल होने के कारण श्रेष्ठ है, इसलिए इसे शुभस्थली कहा गया है।

[3]इस यात्रा का यह उद्देश्य है ताकि हम अपने इस भक्त को विचित्रता तथा बड़ी निशानियाँ दिखायें। जिनमें से एक निशानी तथा चमत्कार यह यात्रा भी है कि इतनी लम्बी यात्रा रात्रि के एक छोटे से भाग में हो गयी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो मेराज हुई अर्थात आकाशों पर ले जाया गया, वहाँ विभिन्न आकाशों पर अंबिया अलैहिस्सलाम से मिलन हुआ तथा "*सिदरतुल मुन्तहा*" पर, जो अर्श से नीचे सातवें आकाश पर है, अल्लाह तआला ने प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा नमाज़ तथा अन्य कुछ वस्तुएँ प्रदान कीं जिसका विस्तृत वर्णन सहीह हदीसों में हुआ है तथा सहाबा एवं ताबईन से लेकर आज तक मुसलमान समुदाय के सभी ज्ञानी तथा विचारक इस बात को मानते चले आये हैं कि यह मेराज शारीरिक रूप में सचेत अवस्था में हुई है। यह स्वप्न अथवा आत्मिक यात्रा तथा दर्शन नहीं है, बल्कि प्रत्यक्ष दर्शन है, जो अल्लाह ने अपने पूर्ण सामर्थ्य से अपने पैग़म्बर को कराया है। इस मेराज के दो भाग हैं। प्रथम भाग इस्रा कहलाता है, जिसका वर्णन यहाँ किया गया है तथा जो मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा तक की यात्रा के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पहुँचने के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सभी नबियों की इमामत की। बैतुल मक़दिस से फिर आपको आकाशों पर ले जाया गया। यह इस यात्रा का द्वितीय भाग है जिसे मेराज कहा जाता है। इस का कुछ वर्णन *सूरः नज्म* में किया गया है तथा शेष विस्तृत जानकारी हदीसों में वर्णित की गयी हैं। सामान्य रूप से इस पूरी यात्रा को मेराज से ही सम्बोधित किया जाता है। मेराज सीढ़ी को कहते हैं, यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख से निकले हुए शब्द «عُرِجَ بِي إِلَى السَّمَاءِ». (मुझे आकाश पर ले जाया गया अथवा चढ़ाया गया) से लिया गया है। क्योंकि इस यात्रा का द्वितीय भाग प्रथम से अत्यधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए मेराज का

وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِبَنِي إِسْرَائِيلَ أَلَّا تَتَّخِذُوا مِنْ دُونِي وَكِيلًا ﴿٢﴾

(२) तथा हम ने मूसा को किताब प्रदान की तथा उसे इस्राईल की संतान के लिए मार्ग-दर्शन बना दिया, कि तुम मेरे अतिरिक्त किसी अन्य को कार्यक्षम न बनाना।

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ﴿٣﴾

(३) हे उन लोगों की संतान! जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था, वह हमारा अत्यधिक कृतज्ञ भक्त था।[1]

وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤﴾

(४) तथा हमने इस्राईल की संतान के लिए उनकी किताब में स्पष्ट निर्णय कर दिया था कि तुम धरती पर दो बार उपद्रव उत्पन्न करोगे तथा तुम अत्यधिक अत्याचार करोगे।

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا

(५) इन दोनों वादों में से प्रथम के आते ही हम ने तुम्हारे समक्ष अपने भक्तों को उठा खड़ा किया, जो बड़े लड़ाकू थे। फिर वह तुम्हारे

शब्द ही अधिक प्रसिद्ध हुआ। इसकी तिथि में मतभेद है, फिर भी इस पर सहमति है कि यह हिजरत से पूर्व की घटना है। कुछ कहते हैं कि एक वर्ष पूर्व की तथा कुछ कहते हैं कि कई वर्ष पूर्व की यह घटना घटित हुई। इसी प्रकार मास तथा तिथि में भी मतभेद है, कोई रबीउल अव्वल १७ अथवा २७, कोई रजब की २७ तथा कुछ कोई अन्य मास तथा इसकी तिथि बताते हैं।

[1]नूह के समय के तूफ़ान (जल-प्रलय) के पश्चात मनुष्य का वंश नूह के उन पुत्रों के वंश से है जो नूह की नाव में सवार हुए थे तथा तूफ़ान से बच गये थे। इसलिए इस्राईल की संतान को सम्बोधित करते हुए कहा गया कि तुम्हारे पिता नूह अल्लाह का अति कृतज्ञ भक्त था। तुम भी अपने पिता की तरह कृतज्ञता का मार्ग अपनाओ तथा हमने जो मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रसूल बनाकर भेजा है, उनको अस्वीकार करके कृतघ्नता न करो।

خِلَٰلَ ٱلدِّيَارِ ۚ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ۝٥

घरों के अन्दर तक फैल गये। तथा अल्लाह का वचन पूरा होना ही था।[1]

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ ٱلْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَٰكُم بِأَمْوَٰلٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَٰكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ۝٦

(६) फिर हम ने उन पर तुम्हारा प्रभाव दे कर (तुम्हारा दिन) फेर दिया तथा धन एवं संतान से तुम्हारी सहायता की तथा तुम्हें बड़े जत्थे वाला कर दिया।[2]

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ ٱلْءَاخِرَةِ لِيَسُۥٓـُٔوا۟ وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا۟ ٱلْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا۟ مَا عَلَوْا۟ تَتْبِيرًا ۝٧

(७) यदि तुम ने अच्छे कार्य किये तो स्वयं अपने लाभ के लिए, तथा यदि तुमने बुराईयाँ कीं, तो भी स्वयं अपने ही लिए, फिर जब दूसरा वादा आया तो (हम ने दूसरे भक्तों को भेज दिया) ताकि वे तुम्हारा मुख बिगाड़ दें तथा प्रथम बार की भाँति फिर उसी मस्जिद में घुस जायें। तथा जिस-जिस वस्तु पर अधिकार पायें तोड़-फोड़ कर जड़ से उखाड़ दें।[3]

---

[1]यह संकेत उस अपमान तथा नाश की ओर है जो बाबुल के राजाधिराज बोख़्त नस्सर के हाथों आदरणीय मसीह के लगभग छ: सौ वर्ष पूर्व यहूदियों पर योरूशलम में घटित हुआ। उसने नि:संकोच यहूदियों का नरसंहार किया तथा एक बड़ी संख्या को दास बना लिया तथा यह उस समय हुआ जब उन्होंने अल्लाह के नबी आदरणीय शअया की हत्या अथवा आदरणीय अरमिया अलैहिस्सलाम को बन्दी बनाया तथा तौरात के आदेशों का उल्लंघन किया तथा पाप करके धरती में आतंक मचा कर अपराधी बने। कुछ कहते हैं कि वोख़्त नस्सर के बजाय जालूत को अल्लाह तआला ने दण्ड स्वरूप उन पर डाला, जिस ने उन पर अत्याचार तथा क्रूरता के पहाड़ तोड़े यहाँ तक कि तालूत के नेतृत्व में आदरणीय दाऊद ने जालूत का वध किया।

[2]अर्थात बोख़्त नस्सर अथवा जालूत के वध के पश्चात हमने तुम्हें पुन: धन-धान्य, पुत्रों तथा सम्मान से अलंकृत किया, जबकि यह सारी वस्तुयें तुमसे छिन चुकी थीं। तथा तुम्हें पुन: अधिक जनसंख्या वाला तथा शक्तिशाली बना दिया।

[3]यह दूसरी बार उन्होंने उपद्रव उत्पन्न किया कि आदरणीय ज़करिया की हत्या कर दी तथा आदरणीय ईसा की हत्या करने की योजना बनाते रहे जिन्हें अल्लाह तआला ने जीवित आकाश पर उठा कर उनसे बचा लिया। इसके परिणाम स्वरूप पुन: रोम के राजा टाईटस को

(८) आशा है कि तुम्हारा प्रभु तुम पर दया करे । हाँ, यदि तुम फिर भी वही करने लगे तो हम भी पुन: ऐसा ही करेंगे ।[1] तथा हम ने नकारने वालों के लिए बन्दीगृह नरक को बना रखा है ।[2]

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ⑧

(९) नि:संदेह यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है जो सबसे सीधा है तथा ईमानदार पुनीतों को जो पुण्य के कर्म करते हैं, इस बात की शुभसूचना देता है कि उनके लिए अति उत्तम बदला (प्रतिफल) है ।

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۙ⑨

(१०) तथा वह लोग जो आख़िरत पर विश्वास नहीं करते, उनके लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है ।

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ⑩ ع

अल्लाह ने उन पर प्रभुत्व दे दिया, उसने योरूशलम पर आक्रमण करके उनके कटे शरीर की दीवार बना दी तथा बहुत से लोगों को बन्दी वना लिया, उनका माल लूट लिया, धार्मिक पुस्तकों को पैरों तले रौंदा तथा बैतुल मक़दिस तथा सुलैमान के धर्मस्थान को गिरा दिया, उन्हें सदैव के लिए बैतुल मक़दिस से देश निकाला दे दिया । तथा इस प्रकार उनके अपमान तथा अनादर के अन्य साधन उत्पन्न किये । यह विनाश ७० ई॰ में उन पर आया ।

[1]यह उन्हें चेतावनी दी गयी कि यदि तुमने सुधार कर लिया तो अल्लाह की कृपा के पात्र वनोगे जिसका अर्थ इस लोक तथा परलोक में सम्मान तथा सफलता है, तथा यदि पुन: अल्लाह की कृतघ्नता का मार्ग अपनाकर धरती पर उपद्रव उत्पन्न किया, तो फिर तुम्हें उसी प्रकार अपमानित तथा तिरस्कार से दो-चार कर देंगे जैसे इस से पूर्व दो बार हम तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार कर चुके हैं । अतएव ऐसा ही हुआ, यह यहूदी अपने व्यवहार को न बदल सके तथा वही व्यवहार मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के साथ दुहराया जो मूसा तथा ईसा की रिसालत के साथ कर चुके थे जिसके कारण यह यहूदी तीसरी बार मुसलमानों के हाथों अपमानित हुए तथा अनादर के साथ उन्हें मदीना तथा ख़ैबर से निकलना पड़ा ।

[2]अर्थात इस दुनिया के अपमान के पश्चात परलोक में नरक का दण्ड तथा उसकी यातना अतिरिक्त है जो उन्हें वहाँ भुगतनी है ।

وَيَدْعُ الْإِنسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنسَانُ عَجُولًا ⑪

(११) तथा मनुष्य बुराई की प्रार्थनायें करने लगता है, पूर्णत: उसकी अपनी भलाई की प्रार्थनाओं के समान, मनुष्य बड़ा ही उतावला है।[1]

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ ۖ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ⑫

(१२) तथा हमने रात तथा दिन को (अपने सामर्थ्य के) लक्षण बनाये हैं, रात्रि के प्रतीक को हमने प्रकाशहीन कर दिया तथा दिन की निशानी को प्रकाशमान दिखाने वाली बनाया है ताकि तुम अपने प्रभु की कृपा की खोज कर सको तथा इसलिए भी कि वर्षों की गणना तथा हिसाब जान सको [2] तथा प्रत्येक विषय को हम ने सविस्तार वर्णन कर दिया है।[3]

---

[1]मनुष्य चूँकि उतावला तथा निरूत्साही है, इसलिए जब उसे दुख पहुँचता है तो अपनी विनाश की कामना इस प्रकार करता है जिस प्रकार सुख के लिए अपने प्रभु से प्रार्थना करता है। यह तो प्रभु की कृपा तथा दया है कि उसके श्राप को स्वीकार नहीं करता। यही विषय *सूर: यूनुस* आयत ११ में आ चुका है।

[2]अर्थात रात्रि को प्रकाशहीन अर्थात अंधकारमय कर दिया ताकि तुम विश्राम कर सको तथा तुम्हारे दिन भर की थकान दूर हो जाये तथा दिन को प्रकाश प्रदान किया ताकि तुम जीविका आर्जन के लिए अपने प्रभु की कृपा क़ी खोज करो। इसके अतिरिक्त रात्रि-दिन का एक अन्य लाभ यह है कि इस प्रकार सप्ताह, मास, तथा वर्षों की गणना तुम कर सको, इस गणना के असंख्य लाभ हैं। यदि रात्रि के पश्चात दिन तथा दिन के पश्चात रात्रि न आती बल्कि सदैव रात्रि ही रात्रि रहती अथवा दिन ही दिन रहता, तो तुम्हें विश्राम तथा शांति एवं व्यवसाय का अवसर न मिलता तथा इसी प्रकार मास तथा वर्षों की गणना भी असम्भव रहती।

[3]अर्थात मनुष्य के लिए धर्म तथा संसार की आवश्यक बातें खोलकर वर्णन कर दी हैं, ताकि उनसे मनुष्य लाभ उठायें, अपनी दुनिया भी सुखमय करें तथा आख़िरत की भी चिन्ता तथा उसके लिए तैयारी करें।

(१३) तथा हम ने प्रत्येक मनुष्य की बुराई-भलाई को उसके गले डाल दिया है[1] तथा प्रलय के दिन हम उसके कर्मपत्र को निकालेंगे, जिसे वह अपने ऊपर खुला हुआ पा लेगा।

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾

(१४) लो स्वयं ही अपना कर्मपत्र आप पढ़ लो। आज तो तू आप ही अपना स्वयं निर्णय करने को पर्याप्त है।

اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾

(१५) जो संमार्ग प्राप्त करता है, वह स्वयं अपने भले के लिए मार्ग प्राप्त करता है तथा जो पथभ्रष्ट हो जाये उसका बोझ उसी के ऊपर है, कोई बोझ वाला किसी अन्य का बोझ अपने ऊपर न लादेगा[2] तथा हमारा नियम ही नहीं कि रसूल भेजने से पूर्व ही प्रकोप भेजें।[3]

مَّنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

---

[1] طائر का अर्थ पक्षी है तथा عنق का अर्थ गर्दन है। इमाम इब्ने कसीर ने तायेर से तात्पर्य मनुष्य के कर्म लिये हैं। في عنقه का अर्थ है, उसके अच्छे अथवा बुरे कर्म, जिस पर उसको अच्छा अथवा बुरा बदला दिया जायेगा, गले के हार की भाँति उनके साथ होंगे। अर्थात उसका प्रत्येक कर्म लिखा जा रहा है अल्लाह के यहाँ उसका पूरा लेखा सुरक्षित होगा। क़ियामत के दिन उसके आधार पर निर्णय किया जायेगा। तथा इमाम शौकानी ने तायेर से तात्पर्य मनुष्य का भाग्य लिया है जिसे अल्लाह ने अपने ज्ञानानुसार लिख दिया है, जिसे सौभाग्यशाली तथा अल्लाह का अवज्ञाकारी होना था, वह भी उसके ज्ञान में था, यही भाग्य (सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य) प्रत्येक मनुष्य के साथ गले के हार की भाँति लगा हुआ है। उसी के अनुरूप उसके कर्म होंगे तथा क़ियामत के दिन उसी के अनुसार निर्णय होंगे।

[2]हाँ जो भटके हुए तथा भटकाने वाले भी होंगे, उन्हें अपने भटकाव के बोझ के साथ, उनके पाप का भी बोझ (बिना उनके पाप में कमी किये) उठाना पड़ेगा, जो उनके प्रयत्नों से भटके हुए होंगे। जैसाकि क़ुरआन के अन्य स्थानों तथा हदीसों से स्पष्ट है। यह वास्तव में उन्हीं के पापों का भार होगा जो अन्यों को भटकाकर उन्होंने कमाया।

[3]कुछ व्याख्याकारों ने इससे केवल सांसारिक यातना का भावार्थ लिया है। अर्थात आख़िरत की यातना से बच न सकेंगे। परन्तु क़ुरआन करीम के अन्य स्थानों से स्पष्ट है कि अल्लाह तआला लोगों से पूछेगा कि क्या तुम्हारे पास रसूल नहीं आये थे ? जिस पर वे

وَإِذَآ أَرَدْنَآ أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا۟ فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا ٱلْقَوْلُ فَدَمَّرْنَٰهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾

(१६) तथा जब हम किसी बस्ती के विनाश की इच्छा कर लेते हैं, तो वहाँ के सम्पन्न लोगों को कुछ आदेश देते हैं तथा वे उस बस्ती में स्पष्ट रूप से अवहेलना करने लगते हैं, तो उन पर (प्रकोप का) निर्णय लागू हो जाता है तथा फिर हम उसे उलट-पलट कर देते हैं।[1]

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ ٱلْقُرُونِ مِنۢ بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِۦ

(१७) तथा हमने नूह के पश्चात भी बहुत से समुदाय नष्ट किये[2] तथा तेरा प्रभु अपने

सकारात्मक उत्तर देंगे, जिससे यह प्रतीत होता है कि रसूलों को भेजने तथा धर्मशास्त्र उतारे बिना वह किसी को प्रकोप नहीं देगा फिर भी इसका निर्णय कि किस समुदाय अथवा किस व्यक्ति तक उसका संदेश नहीं पहुँचा, क़ियामत के दिन वह स्वयं ही कर देगा। वहाँ नि:संदेह किसी पर अत्याचार नहीं होगा। इसी प्रकार बहरा, पागल, बुद्धिहीन तथा अज्ञान काल के मृत लोगों की समस्या है, उनके विषय में कुछ कथनों में आता है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उनकी ओर फ़रिश्ते भेजेगा तथा वह उन्हें कहेंगे कि नरक में चले जाओ, यदि वे अल्लाह के इस आदेश को मानकर नरक में प्रवेश कर लेंगे, तो नरक उनके लिए फूलों की सेज बन जायेगा, दूसरी अवस्था में उन्हें घसीटकर नरक में डाल दिया जायेगा। (मुसनद अहमद भाग ४ पृष्ठ २४ तथा इब्ने हिब्बान भाग ९ पृष्ठ २२६ अल्लामा अलबानी ने सहीहुल जामे अस्सगीर संख्या ८८१ में इसका वर्णन किया है) मुसलमानों के बच्चे तो स्वर्ग में जायेंगे ही परन्तु काफ़िरों के छोटे बच्चों के विषय में मतभेद है कोई विलम्ब का, कोई स्वर्ग में जाने का, तथा कुछ नरक में जाने को मानते हैं। इमाभ इब्ने कसीर ने कहा हश्र के मैदान में उनकी परीक्षा ली जायेगी, इमाम इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है तथा कहा है कि इससे विरोधी कथन का खण्डन भी हो जाता है। (विस्तार के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर देखिये) परन्तु सहीह बुख़ारी के कथन से ज्ञात होता है कि मूर्तिपूजकों के बच्चे भी स्वर्ग में जायेंगे। (सहीह बुख़ारी ३:२५१, १२:३४८)

[1]इसमें यह नियम वर्णित किये गये हैं, जिसके आधार पर समुदायों के विनाश का निर्णय किया जाता है, तथा वह यह कि उनका धनाड्य समाज अल्लाह के आदेशों की अवहेलना प्रारम्भ कर देता है। तथा उन्हीं का अनुकरण फिर अन्य लोग करते हैं, इस प्रकार उस समुदाय में अल्लाह की अवहेलना सामान्य हो जाती है तथा वह यातना के अधिकारी घोषित कर दिये जाते हैं।

[2]वह भी इसी विनाश के नियमानुसार नाश हुए।

خَبِيْرًا بَصِيْرًا ﴿١٧﴾

भक्तों के पापों से भली प्रकार परिचित एवं भली-भाँति देखने वाला है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٨﴾

(१८) जिसकी इच्छा केवल इस शीघ्रता वाली दुनिया की ही हो, उसे हम यहाँ जितना जिसके लिए चाहें शीघ्रता से प्रदान कर देते हैं। अन्त में उसके लिए हम नरक निर्धारित कर देते हैं जहाँ वह निन्दित धिक्कारा हुआ प्रवेश करेगा।[1]

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा जिसकी इच्छा परलोक की हो तथा जैसा प्रयत्न होना चाहिए वह करता भी हो तथा वह ईमान के साथ भी हो, फिर तो यही लोग हैं जिनके प्रयत्न को अल्लाह के यहाँ पूरा सम्मान किया जायेगा।[2]

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۭ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿٢٠﴾

(२०) प्रत्येक को हम देते हैं, इन्हें भी तथा उन्हें भी, तेरे प्रभु के उपकार में से, तेरे पालनहार का उपकार रुका हुआ नहीं है।[3]

---

[1]अर्थात प्रत्येक संसार के लोभी को दुनिया नहीं मिलती, केवल उसको मिलती है, जिसको हम चाहें, फिर उसको भी दुनिया उतनी नहीं मिलती जितने की वह कामना करता है, बल्कि उतनी ही मिलती है जितनी हम उसके लिए निर्णय कर देते हैं, परन्तु इस मार्ग मोह का परिणाम नरक की स्थाई यातना तथा उसका अपमान है।

[2]अल्लाह तआला के यहाँ सम्मान के लिए तीन बातों का वर्णन किया गया है। १- परलोक की चिन्ता अर्थात शुद्धता तथा अल्लाह की प्रसन्नता। २- ऐसा प्रयत्न जो उसके योग्य हो अर्थात सुन्नत के अनुसार। ३- ईमान, क्योंकि इसके बिना कोई भी कर्म ध्येय नहीं। अर्थात कर्म की स्वीकृति के लिए ईमान के साथ शुद्धता (एकेश्वरवाद) तथा सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसार होना आवश्यक है।

[3]अर्थात दुनिया की जीविका तथा उसकी सुख-सुविधायें बिना किसी अंतर के मुसलमान तथा काफ़िर, दुनिया की कामना करने वाले तथा परलोक की चिन्ता करने वाले सबको देते हैं। अल्लाह के उपकार किसी से भी रोके नही जाते।

أَنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾

(२१) देख ले, उनमें एक को एक पर किस प्रकार विशेषता प्रदान कर रखी है तथा परलोक (आख़िरत) तो पदों के अनुसार अति उत्तम है तथा सम्मान के अनुसार भी अति उत्तम है ।[1]

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَخْذُولًا ﴿٢٢﴾

(२२) अल्लाह के साथ किसी अन्य को पूज्य न बना कि अन्ततः तू निन्दित निस्सहाय होकर बैठ रहेगा ।

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ﴿٢٣﴾

(२३) तथा तेरा प्रभु खुला आदेश दे चुका है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी अन्य की आराधना (इबादत) न करना तथा माता-पिता के साथ उपकार करना । यदि तेरी उपस्थिति में इनमें से एक अथवा ये दोनों वृद्धावस्था को पहुँच जायें, तो उनको 'ऊफ़' तक न कहना, उन्हें डाँटना नहीं, बल्कि उनके साथ सम्मान तथा आदर से बातचीत करना ।[2]

---

[1]फिर भी दुनिया की यह वस्तुयें किसी को कम, किसी को अधिक मिलती हैं, अल्लाह तआला अपनी इच्छा एवं ज्ञानानुसार यह जीविका विभाजित करता है । परन्तु आख़िरत में श्रेणियों का यह अन्तर अधिक स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष होगा तथा वह इस प्रकार कि ईमान वाले स्वर्ग में तथा काफ़िर लोग नरक में जायेंगे ।

[2]इस आयत में महाकृपालु अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के पश्चात द्वितीय चरण में माता-पिता के साथ सदव्यवहार का आदेश दिया है, जिससे माता-पिता के आज्ञापालन, उनकी सेवा तथा उनके आदर-सत्कार का महत्व स्पष्ट होता है । महा पालनहार अल्लाह के प्रतिपालन की माँग पूरा करने के साथ छोटे पोषक माता-पिता के आज्ञापालन की माँग को भी पूरा करना है । हदीसों में भी इसके महत्व तथा विशेषता को अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में उजागर किया गया है, फिर वृद्धावस्था में विशेष रूप से उनके समक्ष 'उफ़' शब्द तक कहने से रोका गया है तथा उन्हें डाँटने से मना किया गया है, क्योंकि वृद्धावस्था में माता-पिता कमज़ोर, असहाय तथा लाचार हो जाते हैं, जबकि संतान जवान तथा जीविका साधन पर अधिकृत हो जाती है । इसके अतिरिक्त जवानी-दीवानी की भावना

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِي صَغِيرًا ﴿٢٤﴾

(२४) तथा नम्रता एवं प्रेम के साथ उनके सामने सत्कार के हाथ फैलाये रखना [1] तथा प्रार्थना करते रहना कि हे मेरे प्रभु ! इन पर ऐसी ही दया करना, जैसाकि इन्होंने मेरे बाल्यकाल में मेरा पालन-पोषण किया है।

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ إِن تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾

(२५) जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे तुम्हारा प्रभु भली-भाँति जानता है, यदि तुम सदाचारी हो, तो वह क्षमा-याचना करने वालों को क्षमा करने वाला है।

وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ﴿٢٦﴾

(२६) तथा सम्बन्धियों का, एवं निर्धनों का, तथा यात्रियों का अधिकार अदा करते रहो।[2] तथा अनर्थ तथा अपव्यय से बचो।

एवं बुढ़ापे के सीत तथा गर्म दुखी अनुभव में मुठभेड़ होती है। इन परिस्थितियों में माता-पिता के आदर-सत्कार के नियमों पर ध्यान देना अत्यधिक कठिन विषय होता है। फिर भी अल्लाह के दरबार में सम्मानित एवं सफल वही होगा जो इन नियमों का पालन करेगा।

[1]पक्षी जब अपने बच्चों को अपनी प्रेम छाया में लेता है, तो उनके लिए अपने पंख नीचे गिरा देता है, अर्थात तू भी अपने माता-पिता के साथ इसी प्रकार अच्छा एवं प्रेम पूर्ण व्यवहार कर तथा उनकी इसी प्रकार पालन-पोषण कर जिस प्रकार उन्होंने बचपन में तेरा किया अथवा यह अर्थ हैं कि जब पक्षी उड़ने अथवा ऊँचा उठने का प्रयत्न करता है, तो अपने पंख फैला लेता है तथा जब नीचे उतरता है तो पँख को नीचे कर लेता है। इस आधार पर बाँहें नीचे करने का अर्थ माता-पिता के समक्ष सत्कार तथा नम्रता व्यक्त करने के होंगे।

[2]कुरआन करीम के इन शब्दों से ज्ञात हुआ कि निर्धन निकट सम्बन्धियों, निर्धनों तथा किसी प्रकार की आवश्यकता वाले यात्रियों की सहायता करके उनपर उपकार जताना नहीं चाहिए, क्योंकि यह उपकार नहीं बल्कि माल का वह भाग है जो अल्लाह तआला ने धनवानों के धन में वर्णित व्यक्तियों का रखा है। यदि धनवान यह धन अदा नहीं करेगा तो अल्लाह के समक्ष अपराधी होगा। अर्थात यह अधिकार को अदा करना है, न कि किसी पर उपकार। इसके अतिरिक्त निकट सम्बन्धियों का वर्णन करने से उन की प्राथमिकता एवं

(२७) अपव्यय करने वाले शैतानों के भाई हैं तथा शैतान अपने प्रभु का अत्यधिक कृतघ्न है ।[1]

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوٓا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿٢٧﴾

(२८) तथा यदि तुझे उनसे मुख फेर लेना पड़े अपने प्रभु की इस कृपा की खोज में जिस की तू आशा रखता है, तो भी तुझे चाहिए कि भली प्रकार तथा कोमलता से उन्हें समझा दे ।[2]

وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُل لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾

(२९) तथा अपना हाथ अपनी गर्दन से बँधा हुआ न रख तथा न उसे पूर्णरूप से खोल दे

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ

अधिकार भी स्पष्ट होता है । निकट सम्बन्धियों के अधिकारों को अदा करना तथा उनके साथ सदव्यवहार करने को सम्बन्ध जोड़ना कहा जाता है, जिसका इस्लाम में बड़ा महत्व है ।

[1] تبذير का मूल धातु (बीज बोना) بذر है । जिस प्रकार खेत में बीज बोते समय यह नहीं देखा जाता कि यह उचित स्थान पर पड़ रहा है अथवा उससे इधर-उधर । बल्कि किसान बीज बोता चला जाता है । تبذير (अपव्यय) भी यही है कि मनुष्य अपना धन बीज की भाँति उड़ाता फिरे तथा व्यय करने में धार्मिक नियमों का भी उल्लंघन करे तथा कुछ कहते हैं कि 'तबज़ीर' का अर्थ है अनुचित स्थान पर व्यय करना चाहे थोड़ा ही हो । हमारे विचार से दोनों ही बातें 'तबज़ीर' में आ जाती हैं । तथा यह इतना बुरा कर्म है कि इसके करने वाले को शैतान के समान कहा गया है तथा शैतान के अनुरूपता से बचना चाहिए, चाहे वह किसी एक ही प्रकार का हो, मनुष्य के लिए बचना आवश्यक है । फिर शैतान को كفور (अत्यधिक कृतघ्न) कहकर और अधिक बचने पर बल दिया गया है कि यदि तुम शैतान के अनुरूप अपनाओगे तो तुम भी उसकी भाँति كفور घोषित कर दिये जाओगे । (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात धन की शक्ति की कमी के कारण, जिसके दूर होने की तथा जीविका में वृद्धि की तुम अपने प्रभु से आशा रखते हो । यदि तुझे निर्धन सम्बन्धियों तथा निर्धनों से बचना अर्थात असमर्थता व्यक्त करना पड़े तो, बड़ी नम्रता तथा कोमलता से असमर्थता व्यक्त कर, अर्थात उत्तर भी दिया जाये तो नम्रता तथा प्रेम की भाषा में न कि कटु वचन तथा दुर्व्यवहार के साथ, जैसाकि सामान्यत: लोग निर्धनों तथा भिखारियों के साथ व्यवहार करते हैं ।

فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾

कि फिर धिक्कारा हुआ तथा पछताया हुआ बैठ जाये ।[1]

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾

(३०) नि:संदेह तेरा प्रभु जिसके लिए चाहे जीविका का विस्तार कर देता है तथा जिसके लिए चाहे तंग कर देता है ।[2] नि:संदेह वह अपने भक्तों से सूचित है एवं सूक्ष्मता से देखने वाला है ।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۚ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا كَبِيرًا ﴿٣١﴾

(३१) तथा निर्धनता के भय से अपनी संतानों को न मार डालो ! उनको तथा तुमको हम ही जीविका प्रदान करते हैं । नि:संदेह उनकी हत्या करना महापाप है ।[3]

---

[1]पूर्व की आयत में नकारात्मक उत्तर देने के नियम एवं व्यवहार का वर्णन किया गया है । अब माल ख़र्च करने के नियमों का वर्णन किया जा रहा है तथा वह यह कि मनुष्य को न कंजूसी करना चाहिए कि अपने परिवार की आवश्यकताओं पर भी न व्यय करे तथा न अपव्यय ही करे कि अपनी शक्ति तथा आय देखे बिना बे रोक-टोक व्यय करता रहे । कंजूसी का परिणाम यह होगा कि मनुष्य धिक्कार तथा निन्दा का पात्र घोषित किया जायेगा तथा अपव्यय के परिणाम स्वरूप محسور (थका हारा तथा पछताने वाला) محسور उस पशु को कहते हैं, जो चल-चलकर थक चुका हो तथा चलने से विवश हो चुका हो । अपव्यय करने वाला भी अन्त में ख़र्च करके ख़ाली हाथ होकर बैठ जाता है । अपने हाथों को अपनी गर्दनों से बाँधे हुए न रख का भावार्थ कंजूसी से बचना है तथा "न उसे नितांत ही खोल दे " यह अपव्यय से बचना है ।

[2]इसमें ईमानवालों के लिये साँत्वना है कि उनके पास जीविका उपार्जन के साधनों की अधिकता नहीं तो इसका अर्थ यह नहीं है कि अल्लाह के सदन में उनका स्थान नहीं है, बल्कि यह जीविका की अधिकता अथवा कमी का सम्बन्ध अल्लाह के उस भेद तथा निर्णय से है, जिसे केवल वही जानता है । वह अपने शत्रुओं को धनवान बना दे तथा अपनों को इतना ही दे कि जिससे वे कठिनाई से अपना निर्वाह कर सकें । यह उसकी इच्छा है । जिसको वह अधिक दे, वह उसका प्रिय नहीं तथा आवश्यकतानुसार जीविकाधारी उसका अप्रिय नहीं ।

[3]यह आयत *सूर: अनआम*-१५१ में भी आ चुकी है । हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिर्क के पश्चात जिसे महापाप घोषित किया है वह यही है कि :

(३२) तथा सावधान ! व्यभिचार के निकट भी न जाना क्योंकि वह घोर निर्लज्जता है तथा अत्यधिक बुरा मार्ग है ।[1]

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝

(३३) तथा किसी जीव को जिसका मारना अल्लाह ने निषेध कर दिया है कदापि अवैध हत्या न करना ।[2] तथा जो व्यक्ति निर्दोष मार डाला जाये हमने उसके उत्तराधिकारी को अधिकार दे रखा है, परन्तु उसे चाहिए कि

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّى الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝

«أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ خَشْيَةَ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ».

"कि तू अपनी संतान को इस भय से मार डालो कि वह तेरे साथ खायेगी ।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: बक़र:, किताबुल अदब, सहीह मुस्लिम किताबुत तौहीद बाब फला तजअलू लिल्लाहे अनदादा)

वर्तमान युग में संतान की हत्या का पाप अत्यन्त नियोजित ढंग से परिवार नियोजन के आकर्षक नाम से सम्पूर्ण संसार में हो रहा है। तथा पुरूष लोग अच्छी "शिक्षा तथा प्रशिक्षण" के नाम पर तथा स्त्रियाँ अपनी "सुन्दरता" की रक्षा के लिए साधारणत: यह अपराध कर रही हैं।

[1]इस्लाम में चूँकि व्यभिचार अतिघोर महापाप तथा अपराध है, इतना घोर कि यदि कोई विवाहित पुरूष तथा स्त्री इसे करे तो समाज में जीवित रहने का अधिकार ही नहीं है। फिर उसे तलवार के एक वार से मार डालना ही बस नहीं है अपितु आदेश है कि पत्थर मार-मार कर उसके जीवन का अन्त कर दिया जाये ताकि वह समाज के लिए शिक्षा का प्रतीक बन जाये। इसलिए यहाँ कहा गया कि व्यभिचार के निकट न जाओ अर्थात उसके कारण तथा साधन से ही बचकर रहो, जैसे पराई नारियों को देखना, उनसे मिलना तथा बात करने का साधन बनाना, इसी प्रकार स्त्रियों का बन संवर कर बिना पर्दा घर से बाहर निकलना आदि इन सभी बातों से बचना आवश्यक है ताकि इस निर्लज्जता से बचा जा सके।

[2]अधिकार के साथ हत करने का अर्थ हत्यारे का प्रतिहत्या में हत करना है, जिसको मानव समाज के जीवन तथा सुख-शान्ति का कारण बताया गया है। इसी प्रकार विवाहित व्यभिचारी तथा विधर्मी के हत करने का आदेश दिया गया है।

मार डालने में अति न करे, नि:संदेह उसकी सहायता की गयी है।[1]

(३४) तथा अनाथ के धन के निकट न जाओ सिवाय उस विधि के जो अति उत्तम हो यहाँ तक कि वह अपनी व्यस्कावस्था को पहुँच जाये[2] तथा वचन पूरे करो क्योंकि वचन के विषय में पूछ होगी।[3]

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۖ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا ﴿٣٤﴾

(३५) तथा जब नापने लगो तो पूरे नाप से नापो तथा सीधी तराज़ू से तौलो। यही उत्तम है[4] तथा इसका परिणाम भी अति उत्तम है।

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٣٥﴾

---

[1]अर्थात हत के उत्तराधिकारियों को यह अधिकार अथवा प्रभुत्व अथवा शक्ति प्रदान की गयी है कि वह हत्यारे को न्यायधीश के धार्मिक निर्णय के बाद प्रतिहत्या में हत कर दें अथवा उससे धन ले लें अथवा क्षमा कर दें। तथा यदि हत ही करके प्रतिहत्या लेना है तो उसमें अति न करें कि एक के बदले दो अथवा तीन चार को मार डालें अथवा उसके अंग काटकर कुचल डालें अथवा यातना दे देकर मारें, हत का उत्तराधिकारी सहायता प्राप्त है अर्थात न्यायाधीशों तथा अधिकारियों को उसकी सहायता करने पर बल दिया गया है, इस लिए इस पर अल्लाह का कृतज्ञ होना चाहिए, न यह कि अति करके अल्लाह का कृतघ्न हो।

[2]किसी का प्राण अनुचित रूप से बर्बाद करने से मना करने के पश्चात धन के अपव्यय से रोका जा रहा है तथा इसमें अनाथ का धन विशेष महत्व रखता है। इसलिए कहा कि अनाथ के व्यस्क होने तक उसके धन को इस प्रकार से प्रयोग करो, जिसमें उसका लाभ हो। यह न हो कि बिना सोचे-विचारे ऐसे कार्य में लगा दो कि वह विनाश अथवा हानि में जाये अथवा युवावस्था तक पहुँचने से पूर्व ही तुम उसे समाप्त कर दो।

[3]वचन से वह संधियाँ भी तात्पर्य हैं जो अल्लाह तथा उसके भक्त के मध्य है तथा वह भी जो लोग आपस में एक-दूसरे से करते हैं। दोनों प्रकार के वचन का पालन करना आवश्यक है तथा वचन भंग करने पर पकड़ होगी।

[4]प्रतिफल तथा प्रतिकार के आधार पर उत्तम है। इसके अतिरिक्त लोगों के अन्दर विश्वास उत्पन्न करने में भी नाप-तौल में ईमानदारी लाभकारी है।

(३६) तथा जिस बात की तुझे सूचना ही न हो, उसके पीछे मत पड़ ।[1] क्योंकि कान तथा आँख एवं दिल इनमें से प्रत्येक से पूछताछ की जाने वाली है ।[2]

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ﴿٣٦﴾

(३७) तथा धरती पर अकड़ कर न चलो, क्योंकि न तू धरती को चीर सकता है तथा न लम्बाई में पर्वतों को पहुँच सकता है ।[3]

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾

(३८) यह सब कार्यों की बुराई तेरे पालनहार के समीप अति अप्रिय हैं ।[4]

كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ﴿٣٨﴾

(३९) यह भी उस प्रकाशना (वह्यी) में से है जिसे तेरे पालनहार ने तेरी ओर सुनीति से उतारी है, अत: अल्लाह के साथ किसी अन्य को पूज्य न बनाना कि धिक्कार कर तथा अपमानित करके नरक में डाल दिया जाये ।

ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَدْحُورًا ﴿٣٩﴾

---

[1] قفا يقفو का अर्थ है पीछे लगना। अर्थात जिस बात का ज्ञान नहीं उसके पीछे मत लगो, अर्थात कुविचार न रखो, किसी की खोज में न रहो, इसी प्रकार जिस बात का ज्ञान नहीं उसका अनुसरण न करो।

[2]अर्थात जिस वस्तु के पीछे तुम पड़ोगे उसके सम्बन्ध में कान से प्रश्न किया जायेगा कि क्या उसने सुना था, आँख से प्रश्न होगा कि क्या उसने देखा था तथा हृदय से प्रश्न होगा कि क्या उसने जाना था । क्योंकि यही तीन ज्ञान के साधन हैं। अर्थात इन अंगों को अल्लाह तआला प्रलय के दिन बोलने की शक्ति प्रदान करेगा तथा उनसे पूछा जायेगा।

[3]इतराकर तथा अकड़कर चलना, अल्लाह तआला को अत्यंत अप्रिय है। क़ारून को इसीलिए उस के घर तथा कोष सहित धरती में धंसा दिया (सूर: *अल-कसस*-८१) हदीस में आता है, "एक व्यक्ति दो चादरें पहनकर अकड़ कर चल रहा था कि उसको धरती में धंसा दिया गया तथा वह क़ियामत तक धंसता चला जायेगा।" (सहीह मुस्लिम किताबुल लिबास, बाब तहरीमुत तबख़्तुरे फ़िल मश्य मअ एजाबिहि बिसियाबिहि) अल्लाह तआला को नम्रता तथा विनम्रता प्रिय है।

[4]अर्थात जो बातें वर्णित हुईं, उनमें से जो बुरी हैं, जिन से मना किया गया है, वह अप्रिय हैं।

(४०) क्या पुत्रों के लिए अल्लाह ने तुम्हें निर्वाचित कर लिया है तथा स्वयं अपने लिए फ़रिश्तो को पुत्रियाँ बना लिया ? नि:संदेह तुम बहुत बड़ा बोल बोल रहे हो।

أَفَأَصْفَٰكُمْ رَبُّكُم بِٱلْبَنِينَ وَٱتَّخَذَ مِنَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنَٰثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾

(४१) तथा हमने तो इस क़ुरआन में हर प्रकार से वर्णन कर दिया[1] कि लोग समझ जायें। परन्तु इस पर भी उनकी घृणा ही अधिक होती है।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِى هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ لِيَذَّكَّرُوا۟ وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤١﴾

(४२) कह दीजिए कि यदि अल्लाह के साथ अन्य देवता (पूज्य) भी होते जैसाकि ये लोग कहते हैं, तो अवश्य वह अब तक अर्श के स्वामी की ओर मार्ग खोज लेते।[2]

قُل لَّوْ كَانَ مَعَهُۥٓ ءَالِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا لَّٱبْتَغَوْا۟ إِلَىٰ ذِى ٱلْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

(४३) जो कुछ ये कहते हैं, उससे वह पवित्र एवं महान, अति दूर एवं अत्यधिक उच्च हैं।[3]

سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾

---

[1]नाना प्रकार से अर्थ है, भाषण तथा शिक्षा, तर्क तथा युक्ति, प्रलोभन तथा चेतावनी, तथा उदाहरण एवं घटनायें हर प्रकार से बार-बार समझाया गया है ताकि वे समझ जायें, परन्तु वह कुफ्र तथा मूर्तिपूजा में इस प्रकार फंसे हुए हैं कि वह सत्य के निकट होने के बजाय उससे अधिक दूर हो गये हैं। इसलिए कि वह यह समझते हैं कि यह क़ुरआन जादू, ज्योतिष तथा कविता है, फिर वह इस क़ुरआन से किस प्रकार मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।

[2]इसका एक अर्थ तो यह है कि जिस प्रकार एक राजा दूसरे राजा पर आक्रमण करके विजय प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार यह देवता भी अल्लाह पर अधिकार प्राप्त करने का मार्ग खोज निकालते। तथा अब तक ऐसा नहीं हुआ, जब कि उन देवताओं को पूजते युग बीत गये, तो इसका अभिप्राय यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। कोई स्वाधीन शक्ति ही नहीं, कोई लाभ तथा हानि पहुँचाने वाला नहीं। दूसरा अर्थ यह है कि वह अब तक अल्लाह की निकटता प्राप्त कर चुके होते तथा यह मूर्तिपूजक जो विश्वास रखते हैं कि उनके द्वारा वह अल्लाह की निकटता प्राप्त करते हैं, उन्हें भी वह अल्लाह के निकट कर चुके होते।

[3]अर्थात वास्तविकता यह है कि यह लोग अल्लाह के विषय में जो कहते हैं कि उसके साझीदार हैं। अल्लाह तआला इन सब बातों से शुद्ध तथा अत्यन्त महान है।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾

(४४) सातों आकाश तथा धरती एवं जो कुछ उनमें है उसी की महिमागान करती है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो पवित्रता तथा महानता के साथ उसे याद न करती हो। हाँ, यह सत्य है कि तुम उसका महिमागान समझ नहीं सकते।[1] वह बड़ा सहनशील तथा क्षमा करने वाला है।

---

[1]अर्थात सब उसी के आज्ञाकारी तथा अपनी-अपनी शैली में उसकी महिमा तथा गुणों का वर्णन करते हैं यद्यपि हम उनकी महिमा तथा गुणों के वर्णन को न समझ सकें। इसकी पुष्टि क़ुरआन की अन्य आयतों से भी होती है। जैसे : आदरणीय दाऊद के विषय में आता है।

﴿ إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴾

"हमने पर्वतों को दाऊद के अधीन कर दिया, बस वे संध्या तथा प्रातः उसके साथ अल्लाह की महिमा (शुद्धता) का वर्णन करते हैं।" (सूरः साद-१८)

कुछ पत्थरों के विषय में अल्लाह तआला ने सूरः अल-बकरः-७४ में फ़रमाया :

﴿ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ﴾

"तथा कुछ अल्लाह तआला के भय से गिर पड़ते हैं।"

"कुछ सहाबा वर्णन करते हैं कि वह रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ भोजन कर रहे थे कि उन्होंने भोज्य पदार्थ से अल्लाह की महिमागान करने की ध्वनि सुनी" (सहीह बुख़ारी किताबुल मनाक़िब संख्या ३५७९)। एक अन्य हदीस से सिद्ध है कि चीवँटियाँ अल्लाह की महिमागान करती हैं। (सहीह बुख़ारी संख्या ३०१९ तथा सहीह मुस्लिम संख्या १७५९)। इसी प्रकार जिस तनों की टेक लगा कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भाषण दिया करते थे, जब लकड़ी का मंच (बैठने तथा खड़ा होने का स्थान) बन गया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस स्थान को छोड़ दिया तो बच्चे की तरह उससे रोने की आवाज़ आती थी (सहीह बुख़ारी संख्या ३५८३)। मक्के में एक पत्थर था जो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया करता था (सहीह मुस्लिम संख्या १७८२)। इन आयतों तथा सहीह हदीसों से स्पष्ट है कि जड़ पदार्थ तथा बनस्पति के अन्दर एक विशेष प्रकार का संवेदन विद्यमान है, जिसे यद्यपि हम न समझ सकें, परन्तु वे उस संवेदन के आधार पर अल्लाह की महिमा का वर्णन करते हैं। कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे तात्पर्य सांकेतिक महिमा है अर्थात ये वस्तुयें इस बात का संकेत हैं कि समस्त विश्व का रचयिता तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह ही है।

(४५) तथा तू जब क़ुरआन पढ़ता है, हम तेरे तथा उन लोगों के मध्य जो परलोक के प्रति (आख़िरत) पर विश्वास नहीं रखते एक गुप्त आवरण (पर्दा) डाल देते हैं ।[1]

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٤٥﴾

(४६) तथा उनके दिलों पर हमने पर्दे डाल दिये हैं कि वह उसे समझें तथा उनके कानों में बोझ, तथा जब तू केवल अल्लाह ही का वर्णन उसकी एकता के साथ इस क़ुरआन में करता है, तो वे मुख फेर कर पीठ मोड़कर भाग खड़े होते हैं ।[2]

وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٤٦﴾

(४७) जिस उद्देश्य से वे उसे सुनते हैं उनके विचारों से हम भली-भाँति परिचित हैं, जब ये आपकी ओर कान लगाये हुए होते हैं, तब भी तथा जब ये विचार-विमर्श करते हैं तब भी, जबकि यह अत्याचारी कहते हैं कि तुम

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٤٧﴾

وَفِي كُلِّ شَيْءٍ لَهُ آيَةٌ * تَدُلُّ عَلَىٰ أَنَّهُ وَاحِدٌ

"प्रत्येक वस्तु इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह तआला एक है ।"

परन्तु उचित बात प्रथम ही है कि महिमानगान अपने वास्तविक अर्थ में है ।

[1] مستور، ساتر के अर्थ में है । इसका अर्थ विघ्न तथा आवरण है । अथवा مستور عن الأبصار (आँखों से ओझल) अंततः वह उसे देखते नहीं । इसके साथ उनके तथा मार्गदर्शन के मध्य पर्दा पड़ा है ।

[2] أكنة، كنان (किनान) का बहुवचन है, ऐसा पर्दा जो दिलों पर पड़ जाये । وقر कानों में ऐसा बोझ जो क़ुरआन के सुनने में बाधित हो । अर्थ यह हुआ कि उनके दिल क़ुरआन के समझने योग्य नहीं तथा कान क़ुरआन सुन कर मार्गदर्शन प्राप्त करने योग्य नहीं हैं । तथा अल्लाह की एकता से तो उन्हें इतनी घृणा है कि उसे सुनकर भाग खड़े होते हैं, इन कार्यों का सम्बन्ध अल्लाह से इन्हे पैदा करने के कारण है । वरन् मार्गदर्शन से वंचित होना उनके इंकार तथा घृणा ही का परिणाम था ।

उसके अनुसरण में लगे हुए हो जिस पर जादू कर दिया गया है ।[1]

(४८) देखें तो सही, वे आपके लिए क्या-क्या उदाहरण देते हैं, अत: वे बहक रहे हैं। अब तो मार्ग पाना उनके वश में नहीं रहा ।[2]

انْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾

(४९) उन्होनें कहा कि क्या जब हम अस्थियाँ तथा धूल हो जायेंगे तो क्या हम नये जन्म में पुन: उठाकर खड़े कर दिये जायेंगे ।

وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٤٩﴾

(५०) उत्तर दीजिए कि तुम पत्थर बन जाओ अथवा लोहा ।[3]

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ﴿٥٠﴾

(५१) अथवा कोई ऐसी वस्तु जो तुम्हारे दिलों में बहुत ही महान प्रतीत होती हो[4] फिर वह पूछें कि कौन है जो पुन: हमारा जीवन लौटाये ? (आप) उत्तर दें कि वही (अल्लाह) जिसने तुम्हें प्रथम बार जन्म दिया, इस पर वे अपने सिर हिला-हिलाकर[5] आपसे पूछेंगे

أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى هُوَ قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ﴿٥١﴾

---

[1]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह जादू से पीड़ित समझते हैं तथा यह समझते हुए क़ुरआन सुनते तथा आपस में कानाफूसी करते हैं, इसलिए मार्गदर्शन से वंचित ही रहते हैं ।

[2]कभी जादूगर, कभी जादू से पीड़ित कभी पागल तथा कभी ज्योतिषी कहते हैं, अत: इस प्रकार भटक रहे हैं। मार्गदर्शन उन्हें किस प्रकार मिले ?

[3]जो मिट्टी तथा हड्डी से भी अधिक कठोर है तथा जिसमें जीवन के चिन्ह उत्पन्न करना अधिक जटिल है ।

[4]अर्थात उससे भी कड़ी वस्तु जो तुम्हारे ज्ञान में हो, वह बन जाओ तथा फिर पूछो कि कौन जीवित करेगा ?

[5] أنغض يُنغض का अर्थ है सिर हिलाना। अर्थात उपहास स्वरूप सिर हिलाकर वह कहेंगे कि यह पुर्नजीवन कब होगा ?

कि अच्छा यह होगा कब ? तो (आप) उत्तर दें कि क्या आश्चर्य कि वह निकट ही आ लगी हो ।[1]

(५२) जिस दिन वह तुम्हें बुलायेगा[2] तुम उसकी प्रशंसा करते हुए आज्ञा पालन करोगे तथा अनुमान करोगे कि तुम्हारा रहना अति अल्प है ।[3]

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٥٢﴾

(५३) तथा मेरे भक्तों से कह दीजिए कि वह बहुत ही अच्छी बात अपने मुख से निकाला

وَقُل لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ

---

[1] قريب का अर्थ है होने वाली वस्तु كل ما هو آت فهو قريب "प्रत्येक घटने वाली वस्तु समीप है ।" तथा عسى भी क़ुरआन में निश्चय तथा अवश्य होने के अर्थ में प्रयोग हुआ है अर्थात क़ियामत का होना निश्चित तथा आवश्यक है ।

[2] 'बुलायेगा' का अर्थ है क़ब्रों (समाधियों) से जीवित करके सदन में उपस्थिति करेगा, तुम उसकी महिमा का वर्णन करते हुए आदेश का पालन करोगे अथवा उसे पहचानते हुए उसके समक्ष उपस्थित हो जाओगे ।

[3] वहाँ यह दुनिया का जीवन अति अल्प प्रतीत होगा ।

﴿ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ﴾

"जब क़ियामत को देख लेंगे, तो सांसारिक जीवन ऐसा लगेगा कि जैसे एक संध्या अथवा एक प्रात: रहे हैं ।" (*सूर: अल-नाज़िआत-४६*)

इसी विषय कोअन्य स्थानों पर भी वर्णन किया गया है । जैसे *सूर: ताहा*-१०२ तथा १०४, *सूर: अल-रूम*-५५, *सूर: अल-मोमिनून*-११२ तथा ११४ । कुछ विद्वान कहते हैं कि प्रथम फूँक होगी तो मरे हुए लोग जीवित हो जायेंगे । फिर दूसरी फूँक (नाद) पर हश्र के मैदान में हिसाब-किताब के लिए एकत्रित होंगे, दोनों फूँक (नाद) के मध्य की अवधि में उन्हें कोई यातना नहीं दी जायेगी, वे सो जायेंगे । दूसरी फूँक पर उठेंगे तो कहेंगे, "अफ़सोस हमें हमारी निद्रा से किसने उठाया है ?" (*सूर: यासीन*-५२) (फ़तहुल क़दीर) पहली बात अधिक ठीक है ।

إِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾

करें [1] क्योंकि शैतान आपस में फूट डलवाता है।[2] नि:संदेह शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۖ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۖ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿٥٤﴾

(५४) तुम्हारा पोषक तुम्हारी अपेक्षा तुमसे अत्यधिक जानने वाला है, वह यदि चाहे तो तुम पर दया कर दे, चाहे तुम्हें दण्ड दे।[3] हमने आपको उनका उत्तरदायी बनाकर नहीं भेजा।[4]

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ

(५५) तथा आकाशों एवं धरती में जो कुछ भी है आपका प्रभु सबको भली-भाँति जानता है। हमने कुछ पैग़म्बरों को कुछ पर श्रेष्ठता

---

[1]अर्थात आपस में बातचीत करते समय भाषा के प्रयोग में सावधानी रखें, अच्छे शब्द बोलें, इसी प्रकार काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों एवं अहले किताब को सम्बोधित करने की आवश्यकता पड़ जाये तो उनसे भी प्रेमपूर्वक एवं मृदल शब्दों में बातचीत करें।

[2]भाषा की ज़रा-सी चूक से शैतान, जो तुम्हारा खुला तथा आदि से शत्रु है, तुम्हारे मध्य आपस में उपद्रव करवा सकता है अथवा काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के दिलों में तुम्हारे लिए अधिक द्वेष तथा घृणा उत्पन्न कर सकता है। हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "तुम में से कोई व्यक्ति अपने भाई (मुसलमान) की ओर हथियार के साथ संकेत न करे, इसलिए कि वह नहीं जानता कि शैतान शायद उसके हाथ से वह हथियार चलवा दे। (तथा वह उस मुसलमान भाई को जा लगे, जिससे उसकी मृत्यु हो जाये) तो वह नरक के गढ़े में जा गिरे।" (सहीह बुख़ारी किताबुल फ़ेतन बाब मन हमल अलैन स्सेलाह फलैस मिन्ना, सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे बाबुन नह्ये मिनल इशारते बिस-सेलाह)

[3]यदि सम्बोधन मूर्तिपूजकों से हो तो कृपा का अर्थ इस्लाम धर्म धारण करने का सौभाग्य के होगा तथा यातना से तात्पर्य मूर्तिपूजा करते ही मौत है, जिसके कारण वे यातना के अधिकारी होंगे तथा यदि सम्बोधन ईमान वालों से हो तो कृपा का अर्थ होगा कि वह काफ़िरों से तुम्हारी सुरक्षा करेगा तथा यातना का अर्थ है काफ़िरों का मुसलमानों पर प्रभुत्व तथा अधिपत्य।

[4]कि आप उन्हें अवश्य कुफ़्र के दलदल से निकालें अथवा उनके कुफ़्र पर दृढ़ रहने पर आप से पूछताछ हो।

عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾

तथा प्रतिष्ठा प्रदान की है ।[1] तथा दाऊद को जबूर हमने ही प्रदान की है ।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾

(५६) कह दीजिये कि (अल्लाह के) अतिरिक्त जिन्हें तुम [देवता (वंदनीय)] समझ रहे हो, उन्हें पुकारो परन्तु न तो वह तुमसे किसी दुख को दूर कर सकते हैं न परिवर्तित कर सकते हैं ।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۭ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾

(५७) जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे स्वयं अपने पालनहार के सामीप्य की खोज में रहते हैं कि उनमें से कौन अधिक निकट हो जाये, वे स्वयं उसकी कृपा की आशा रखते हैं तथा उसकी यातना से भयभीत रहते हैं,[2] (बात भी यही है) कि तेरे प्रभु की यातना डरने की चीज़ है ।

---

[1]यह विषय ﴿ تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ﴾ में भी गुज़र चुका है । यहाँ पुन: मक्का के काफ़िरों के उत्तर में इस विषय की पुनरावृत्ति हुई है जो कहते थे कि क्या अल्लाह को रिसालत के लिए यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही मिला था ? अल्लाह तआला ने उत्तर दिया कि किसी को रिसालत के लिए चयन करना तथा किसी एक नबी को दूसरे पर श्रेष्ठता देना, यह अल्लाह के ही अधिकार में है ।

[2]प्रस्तुत आयत में من دون الله से तात्पर्य फ़रिश्तों तथा महात्माओं के वे चित्र तथा मूर्तियाँ हैं जिनकी वे पूजा करते थे अथवा आदरणीय उज़ैर तथा मसीह हैं जिन्हें यहूदी तथा इसाई अल्लाह का पुत्र कहते तथा उन्हें दैवी गुणों से युक्त मानते थे अथवा वे जिन्नात हैं जो मुसलमान हो गये थे तथा मूर्तिपूजक उनकी पूजा करते थे । इसलिए कि इस आयत में बताया जा रहा है कि वे स्वयं भी अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करते तथा उसकी कृपा की कामना करते तथा उसकी यातना से भयभीत हैं तथा यह गुण जड़ पदार्थों (पत्थरों) में नहीं हो सकता । इस आयत से स्पष्ट हो जाता है कि من دون الله (अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी पूजा की जाती रही है) वे केवल पत्थर की मूर्तियाँ ही नहीं थीं, अल्लाह के वे भक्त भी थे जिन में से कुछ फ़रिश्ते, कुछ पुण्यात्मा, कुछ नबी तथा कुछ जिन्नात थे । अल्लाह तआला ने सब के विषय में फ़रमाया कि वह कुछ नहीं कर सकते, न किसी के दुख का निवारण कर सकते हैं, न किसी की परिस्थितियाँ बदल सकते हैं । "अपने प्रभु की निकटता प्राप्त करने की धुन में रहते हैं ।" का अर्थ सत्यकर्म से अल्लाह की निकटता खोजते हैं । यही माध्यम है जिसे क़ुरआन में वर्णन किया गया है,

وَإِن مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾

(५८) तथा जितनी भी बस्तियाँ हैं हम क़ियामत के दिन से पूर्व या तो उन्हें ध्वस्त कर देने वाले हैं अथवा अत्यधिक घोर दण्ड देने वाले हैं। यह तो किताब में लिखा जा चुका है।[1]

وَمَا مَنَعَنَا أَن نُّرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَن كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۚ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ

(५९) तथा हमें निशानियाँ (चमत्कार) उतारने से रोक केवल इसी की है कि अगले लोग इन्हें झुठला चुके हैं।[2] हमने समूद को प्रतीक के रूप में ऊँटनी दी परन्तु उन्होंने उस पर

वह नहीं है जिसे क़ब्र पूजक वर्णन करते हैं कि मरे हुए व्यक्तियों के नाम का भोग-प्रसाद (नज़र-नियाज़) दो, उनके क़ब्रों पर चादर चढ़ाओ तथा मेले लगाओ एवं उनसे सहायता की प्रार्थना तथा गुहार करो। यह माध्यम नहीं, यह तो उनकी पूजा है जो शिर्क है। अल्लाह तआला प्रत्येक मुसलमान को इससे सुरक्षित रखे। (आमीन)

[1]किताब से तात्पर्य 'सुरक्षित पुस्तक' (लौहे महफ़ूज़) है। अर्थ यह है कि अल्लाह तआला की ओर से यह बात निश्चित है, जो 'सुरक्षित पुस्तक' में लिखी हुई है कि हम काफ़िरों की प्रत्येक बस्ती को या तो मृत्यु द्वारा नष्ट कर देंगे तथा बस्ती से तात्पर्य नगरवासी हैं तथा विनाश का कारण उनका कुफ़्र तथा मूर्तिपूजन एवं अत्याचार तथा दुष्टता है। इसके अतिरिक्त यह विनाश क़ियामत से पूर्व घटित होगा, वरन् क़ियामत के दिन तो प्रत्येक बस्ती ही विलीन तथा विनाश का शिकार हो जायेगी।

[2]यह आयत उस समय अवतरित हुई जिस समय मक्का के काफ़िरों ने यह माँग की कि सफ़ा के पर्वत को स्वर्ण बना दिया जाये अथवा मक्का के पर्वत अपने स्थान से हटा दिये जायें ताकि वहाँ खेती की जा सके, जिस पर अल्लाह तआला ने जिब्रील के माध्यम से संदेश भेजा कि उनकी माँग हम पूरा करने को तैयार हैं, परन्तु यदि उसके पश्चात भी वह ईमान न लाये तो फिर उनका विनाश निश्चित है। फिर उन्हें अवसर नहीं दिया जायेगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इसी बात को उचित समझा कि इनकी माँगें पूरी न की जायें ताकि वह निश्चित विनाश से बच जायें। (मुसनद अहमद भाग १ पृष्ठ २५८) इस आयत में भी अल्लाह तआला ने यही विषय वर्णन किया है कि उनकी इच्छा अनुसार हमें निशानियाँ अवतरित करने में कोई कठिनाई नहीं है। परन्तु हम इससे इसलिए बच रहे हैं कि पूर्व के समुदायों ने भी अपनी इच्छा के अनुसार निशानियाँ माँगी थीं, जो उन्हें दिखायी गयीं, परन्तु उसके उपरान्त भी उन्होंने झुठलाया तथा ईमान न लाये, जिसके परिणाम स्वरूप वे नाश कर दिये गये।

وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا۝

अत्याचार किया ।[1] हम तो लोगों को केवल सतर्क करने के लिए प्रतीक भेजते हैं ।

وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ؕ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا۝

(६०) तथा याद करो जबकि हमने आप से कह दिया कि आपके प्रभु ने लोगों को घेर लिया है ।[2] जो दर्शन आपको दिखायी थी, वह लोगों के लिए स्पष्ट परीक्षा ही थी तथा उसी प्रकार वह वृक्ष भी जिससे क़ुरआन में घृणा का प्रदर्शन किया गया है ।[3] हम उन्हें सतर्क कर रहे हैं परन्तु यह उन्हें और अधिक दुष्टता में बढ़ा रहा है ।[4]

---

[1]समूद के समुदाय को उदाहरण स्वरूप वर्णन किया क्योंकि इच्छानुसार पत्थर की चट्टान से ऊँटनी प्रगट की गयी थी परन्तु उन अत्याचारियों ने ईमान लाने के बजाय, उस ऊँटनी ही को मार डाला, जिसके कारण तीन दिन पश्चात प्रकोप आ गया ।

[2]अर्थात लोग अल्लाह के प्रभाव एवं इच्छा के अधीन हैं, तथा जो अल्लाह चाहेगा वही होगा न कि वह जो वह चाहेंगे, अथवा तात्पर्य मक्कावासी हैं कि वे अल्लाह के आदेशाधीन हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निश्चिन्त रिसालत का प्रचार-प्रसार कीजिए, वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुरक्षा करेंगे । अथवा बद्र की युद्ध तथा मक्का विजय के अवसर पर जिस प्रकार अल्लाह ने मक्का के मूर्तिपूजकों को अपमानजनक पराजय से दो चार किया, उसको स्पष्ट किया जा रहा है ।

[3]सहाबा तथा ताबईन ने इस रूया (दर्शन) की व्याख्या प्रत्यक्ष दर्शन से की है तथा तात्पर्य इससे मेराज की घटना है जो बहुत से क्षीण लोगों के लिए भटकावे का कारण बन गया तथा वे विधर्मी हो गये । तथा वृक्ष से तात्पर्य जक़्क़ूम (नरकीय) का वृक्ष है, जिसको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात नरक में देखा । الملعونة से तात्पर्य खाने वालों पर अर्थात नरकवासियों पर धिक्कार । जैसे अन्य स्थान पर है ।

﴿ إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴾

"नरकीय वृक्ष (ज़क़्क़ूम) पापियों का खाना है ।" (सूर: दु.खान-४३,४४)

[4]अर्थात काफ़िरों के दिलों में जो द्वेष तथा ईर्ष्या है, उसके कारण निशानियाँ देखकर ईमान लाने के बजाय उनकी उग्रता तथा व्याकुलता में अत्यधिक वृद्धि होती है ।

(६१) तथा जब हमने फ़रिश्तों को आदेश दिया कि आदम को दण्डवत् (सजदा) करो तो इब्लीस के अतिरिक्त सब ने किया। उसने कहा कि क्या मैं उसे दण्डवत् करूँ जिसे तूने मिट्टी से बनाया है।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ قَالَ ءَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ﴿٦١﴾

(६२) अच्छा देख ले, उसे तूने मुझ पर श्रेष्ठता तो दी है, परन्तु यदि तूने मुझे क़ियामत तक अवसर दिया तो मैं इसकी संतान को अति अल्प लोगों के सिवाय अपने वश में कर लूँगा।[1]

قَالَ أَرَءَيْتَكَ هَٰذَا ٱلَّذِى كَرَّمْتَ عَلَىَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُۥٓ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٢﴾

(६३) आदेश हुआ कि जा, उनमें से जो भी तेरा अनुयायी हो जायेगा तो तुम सबका दण्ड नरक है, जो पूर्ण प्रतिकार है।

قَالَ ٱذْهَبْ فَمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُورًا ﴿٦٣﴾

(६४) उन में से तू जिसे भी अपनी बात से बहका सके बहका ले[2] तथा उन पर अपने सवार तथा पैदल चढ़ा ला,[3] तथा उनके माल तथा संतान में से अपना भी साझा लगा[4]

وَٱسْتَفْزِزْ مَنِ ٱسْتَطَعْتَ مِنْهُم بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِم بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِى ٱلْأَمْوَٰلِ

---

[1]अर्थात उस पर अधिकार प्राप्त कर लूँगा तथा उसे जिस प्रकार चाहूँगा विपथ कर लूँगा। परन्तु कुछ लोग मेरे छल तथा दाँव से बच जायेंगे। आदम तथा इब्लीस की यह कथा इससे पूर्व *सूरः अल-बक़रः*, *सूरः अल-आराफ़* तथा *सूरः अल-हिज्र* में आ चुकी है। यहाँ चौथी बार इसे वर्णन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त *सूरः अल-कहफ़*, *सूरः ताहा*, *सूरः* साद में भी इसका वर्णन आयेगा।

[2]ध्वनि से तात्पर्य आकर्षक नैवेद्य अथवा गीत-संगीत एवं आनन्द-मनोरंजन के यंत्र हैं जिनके द्वारा शैतान अधिकतर लोगों को भटका रहा है।

[3]उन सेनाओं से तात्पर्य मनुष्यों तथा जिन्नों की वे सवार तथा पैदल सेना है, जो शैतान के शिष्य तथा उसकी जाल के शिकार हैं एवं शैतान ही की भाँति मनुष्यों को भटकाते हैं अथवा तात्पर्य है प्रत्येक सम्भावित साधन जो शैतान भटकाने के लिए प्रयोग करता है।

[4]माल में शैतान की भागीदारी का अर्थ है अनुचित साधनों से धन उपार्जन तथा अपव्यय करना है तथा इसी प्रकार पशुओं को मूर्तियों के नाम पर दान करना, जैसे बहीरः तथा

وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿٦٤﴾

तथा उन्हें (मिथ्या) वचन दे ले ।[1] उनसे जितने भी वचन (वादे) शैतान के होते हैं, सब के सब पूर्णत: धोखा हैं ।[2]

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ﴿٦٥﴾

(६५) मेरे सत्य भक्तों पर तेरा कोई अधिकार तथा वश नहीं ।[3] तथा तेरा पालनहार बड़ा कार्यक्षम पर्याप्त है ।[4]

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٦٦﴾

(६६) तुम्हारा पालनहार वह है जो तुम्हारे लिये नदी में नौकायें चलाता है ताकि तुम उसके उपकार की खोज करो । वह तुम्हारे ऊपर अत्यधिक कृपालु है ।[5]

सायेब: आदि । तथा संतान में भागीदारी का अर्थ है व्यभिचार, गुरूप्रसाद, कृष्णदास, आदि नाम रखना, इस्लामी नियमों के विपरीत उनको शिक्षा-दीक्षा देना कि वे दुर्व्यवहारी तथा कुचरित्र बनें, उनको निर्धनता के भय से जीवित गाड़ देना अथवा हत कर देना, गर्भपात कराना सतान को अंधविश्वासी, यहूदी तथा इसाई आदि बनाना तथा बिना सुन्नत से सिद्ध प्रार्थनाओं को पढ़े पत्नी से संभोग करना आदि है । इन सभी परिस्थितियों में शैतान की भागीदारी हो जाती है ।

[1] कि कोई स्वर्ग-नरक नहीं है, अथवा मरने के पश्चात पुन: जीवित नहीं होंगे आदि ।

[2] अभिमान (धोखा) का अर्थ होता है अनुचित कार्य को इस प्रकार अलंकृति किया जाये कि वह अच्छा तथा उचित लगे ।

[3] भक्तों का स्वयं से सम्बन्धित करना, यह सम्मान तथा आदर स्वरूप है जिससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह के विशेष भक्तों को शैतान भटकाने में असफल रहता है ।

[4] अर्थात जो सही अर्थों में अल्लाह का भक्त बन जाता है, उसी पर भरोसा तथा विश्वास करता है तो अल्लाह भी उसका मित्र तथा कार्यक्षम बन जाता है ।

[5] यह उसका उपकार तथा कृपा ही है कि उसने समुद्र को मनुष्य के नियन्त्रण में कर दिया है तथा वह उस पर नाव तथा जलयान चलाकर एक देश से दूसरे देश भ्रमण करते हैं तथा व्यापार करते हैं ।

(६७) तथा समुद्र में विपत्ति पहुँचते ही जिन्हें तुम पुकारते थे, सब भूल जाते हैं, केवल वही (अल्लाह) शेष रह जाता है। फिर जब वह तुम्हें थल की ओर सुरक्षित ले आता है, तो तुम मुख फेर लेते हो। मनुष्य अत्यधिक कृतघ्न है।[1]

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ﴿٦٧﴾

(६८) तो क्या तुम इससे निर्भय हो गये कि तुम्हें थल के किसी भाग में (ले जाकर धरती में) धँसा दे अथवा तुम पर पथराव की आँधी भेज दे।[2] फिर तुम अपने लिए किसी साथी को न पा सको।

أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ﴿٦٨﴾

(६९) क्या तुम इस बात से निर्भय हो गये हो कि (अल्लाह तआला) पुनः तुम्हें नदी की यात्रा में ले आये तथा तुम पर प्रचण्ड वायु के झोंके भेज दे तथा तुम्हारे कुफ़्र के कारण तुम्हें डुबा दे। फिर तुम अपने लिए हम पर उसका दावा (पीछा) करने वाला किसी को न पाओगे।[3]

أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿٦٩﴾

---

[1]यह विषय पूर्व में भी कई स्थानों पर गुज़र चुका है।

[2]अर्थात समुद्र से निकलने के पश्चात तुम जो अल्लाह को भूल जाते हो, तो क्या तुम जानते नहीं कि वह थल में भी तुम्हें पकड़ सकता है, तुम्हें वह धरती में धँसा सकता है अथवा पत्थरों की वर्षा करके तुम्हें ध्वस्त कर सकता है जिस प्रकार कुछ विगत् समुदायों को उसने इसी प्रकार ध्वस्त कर दिया।

[3] قاصِفٌ ऐसी तीब्र एवं उग्र समुद्री वायु को कहते हैं जो नावों को तोड़ दे तथा उन्हें डुबो दे। تَبِيعًا प्रतिशोध लेने वाला पीछा करने वाला अर्थात तुम्हारे डूब जाने के पश्चात हम से पूछे कि तूने हमारे भक्तों को क्यों डुबाया ? अर्थ यह है कि एक बार समुद्र से निकलने के पश्चात क्या तुम्हें पुनः समुद्र में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ? तथा वहाँ आपदा में नहीं डाल सकता ?

(७०) तथा नि:संदेह हमने आदम की सन्तान को बड़ा सम्मान दिया [1] तथा उन्हें थल एवं जल की सवारियाँ दीं।[2] तथा उन्हें पवित्र वस्तुओं से जीविका प्रदान की [3] तथा अपनी बहुत सी सृष्टि पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की।[4]

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيٓ ءَادَمَ وَحَمَلْنَٰهُمْ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ وَرَزَقْنَٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَفَضَّلْنَٰهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۝

(७१) जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय को उसके अगुवा के सहित बुलायेंगे।[5] फिर जिनका भी

يَوْمَ نَدْعُوا۟ كُلَّ أُنَاسٍۭ بِإِمَٰمِهِمْ

---

[1]यह मान तथा सम्मान मनुष्य के रूप में सभी को प्राप्त है चाहे ईमान वाला हो अथवा काफ़िर क्योंकि यह सम्मान अन्य सृष्टि जीव तथा जड़ पदार्थ एवं बनस्पति आदि के सापेक्ष है। तथा यह सम्मान विभिन्न रूप से है।जिस प्रकार रंग-रूप, शरीर, स्वरूप एवं आकार- प्रकार अल्लाह तआला ने मनुष्य को प्रदान किया है वह किसी अन्य सृष्टि को प्राप्त नहीं। जो बुद्धि मनुष्य को प्रदान की पशु आदि उससे वंचित हैं। इसके अतिरिक्त वह इसी बुद्धि से उचित, अनुचित, लाभकारी, हानिकारक, सुन्दर तथा कुरूप में निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है। इसी बुद्धि द्वारा वह अल्लाह की अन्य सृष्टि से लाभ उठाता है तथा उन्हें अपने अधीन रखता है। इसी बुद्धि तथा समझ से वह ऐसे भवनों का निर्माण करता है, ऐसे वस्त्रों की खोज करता है तथा ऐसी वस्तुओं का उत्पादन करता है, जो उसे गर्मी के वायु के ताप से तथा सर्दी की शीत से तथा ऋतुओं की अन्य कठिनाइयों से सुरक्षित रखती हैं। इसके अतिरिक्त सृष्टि की सभी वस्तुओं को अल्लाह तआला ने मनुष्य की सेवा पर लगा रखा है।चन्द्रमा, सूर्य, वायु, जल तथा अन्य अनगिनत वस्तुयें हैं जिनसे मनुष्य लाभान्वित हो रहा है।

[2]थल में वह घोड़ों, खच्चरों, गधों, ऊँटों तथा अपनी निर्मित सवारियों (रेलगाड़ी, बसों, वायुयान, साइकिल, मोटर आदि) पर सवार होता है तथा इसी प्रकार समुद्र में नाव एवं जहाज़ हैं जिन पर वह सवार होता तथा सामान लाता ले जाता है।

[3]मनुष्य के खाने के लिए जो अनाज, मेवे तथा फल उसने उपजाये हैं उनमें जो जो स्वाद तथा शक्ति रखी हैं। विभिन्न प्रकार तथा जाति के यह भोजन, यह स्वाद तथा स्वादिष्ट फल तथा शक्तिप्रद तथा हर्षवर्धक मिश्रित तथा पेय एवं माजून तथा खमीरें मनुष्यों के अतिरिक्त किस अन्य सृष्टि को प्राप्त हैं ?

[4]पूर्वोक्त विवरण से मनुष्य की बहुत-सी सृष्टि पर श्रेष्ठता एवं उच्चता स्पष्ट होती है।

[5]इमाम का अर्थ मुखिया, नेता तथा प्रतिनिधि है, यहाँ इससे क्या तात्पर्य है ? इसमें मतभेद है। कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे तात्पर्य पैग़म्बर हैं अर्थात प्रत्येक समुदाय को

فَمَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ فَأُو۟لَٰٓئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧١﴾

कर्मपत्र दाहिने हाथ में दे दिया गया, वह तो (प्रसन्नता से) अपना कर्मपत्र पढ़ने लगेंगे। तथा धागे के समान (कण बराबर) भी अत्याचार न किये जायेंगे।[1]

وَمَن كَانَ فِى هَٰذِهِۦٓ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٧٢﴾

(७२) तथा जो कोई इस लोक में अंधा रहा, वह परलोक (आख़िरत) में भी अंधा तथा मार्ग से बहुत ही भटका हुआ रहेगा।[2]

وَإِن كَادُوا۟ لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ ٱلَّذِىٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ لِتَفْتَرِىَ عَلَيْنَا غَيْرَهُۥ ۖ وَإِذًا لَّٱتَّخَذُوكَ خَلِيلًا ﴿٧٣﴾

(७३) तथा ये लोग आपको उस प्रकाशना (वह्यी) से, जो हमने आप पर उतारी है, बहका देना चाह रहे थे कि आप इसके अतिरिक्त कुछ अन्य बातें ही हमारे नाम से बना लें, तब तो आप को ये लोग अपना संरक्षक तथा मित्र बना लेते।

وَلَوْلَآ أَن ثَبَّتْنَٰكَ لَقَدْ كِدتَّ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيلًا ﴿٧٤﴾

(७४) तथा यदि हम आपको स्थिर (अडिग) न रखते तो अधिक सम्भव था कि उनकी ओर

उसके पैग़म्बर के नाम से पुकारा जायेगा। कुछ कहते हैं कि इस से आकाशीय पुस्तकें तात्पर्य हैं जो नबियों के साथ अवतरित होती रहीं अर्थात हे तौरात वालो ! हे इंजील वालो तथा हे क़ुरआन वालो आदि कह के पुकारा जायेगा कुछ कहते हैं कि यहाँ 'इमाम' से तात्पर्य कर्मपत्र हैं अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को जब बुलाया जायेगा। तो उसका कर्मपत्र उसके हाथ में होगा तथा उसके अनुसार उसका निर्णय किया जायेगा। इसी विचार को इमाम शौकानी तथा इमाम इब्ने कसीर ने वरीयता दिया है।

[1] فتيلٌ उस झिल्ली अथवा धागे को कहते हैं, जो खजूर की गुठली में होता है अर्थात कण बराबर भी अत्याचार न होगा।

[2] أعمى (अंधा) से तात्पर्य हृदय का अंधा है अर्थात जो दुनिया में सत्य देखने तथा समझने एवं उसे स्वीकार करने से वंचित रहा, वह आख़िरत में अंधा और प्रभु की विशेष कृपा तथा उपकार से वंचित रहेगा।

कुछ न कुछ झुक ही जाते ।[1]

إِذًا لَّأَذَقْنَٰكَ ضِعْفَ ٱلْحَيَوٰةِ وَضِعْفَ ٱلْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ﴿٧٥﴾

(७५) फिर तो हम भी आपको दुगनी यातना संसार की देते तथा दुगनी ही मृत्यु की[2] फिर आप तो अपने लिए हमारे आगे किसी को भी सहायक न पाते ।

وَإِن كَادُوا۟ لَيَسْتَفِزُّونَكَ مِنَ ٱلْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا ۖ وَإِذًا لَّا يَلْبَثُونَ خِلَٰفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٧٦﴾

(७६) तथा ये तो आप के पग इस धरती से उखाड़ने ही लगे थे कि आपको इससे निकाल दें,[3] फिर ये भी आपके पश्चात बहुत कम ठहर पाते ।[4]

سُنَّةَ مَن قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِن رُّسُلِنَا ۖ وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ﴿٧٧﴾

(७७) ऐसा ही नियम उनका था, जो आपसे पूर्व रसूल (संदेशवाहक) हमने भेजे ।[5] तथा आप

---

[1]इसमें उस पवित्रता (निष्पाप) का वर्णन है जो अल्लाह की ओर से नबियों को प्राप्त होती है । इससे यह ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजक यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते थे परन्तु अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचाया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तनिक भी उनकी ओर नहीं झुके ।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि दण्ड पद एवं गरिमा के अनुसार होती है ।

[3]यह उस षड़यंत्र की ओर संकेत है, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का से निष्कासित करने के लिए मक्का के कुरैश ने तैयार किया था, जिससे अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचा लिया ।

[4]अर्थात यदि अपनी योजना अनुसार ये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का से निकाल देते तो ये भी उसके पश्चात अधिक देर न रहते अर्थात अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ जाते ।

[5]अर्थात यह प्राचीन नियम चला आ रहा है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूर्व के रसूलों के लिये भी बर्ता जाता रहा है कि जब उनके समुदाय ने उन्हें अपने देश से निकाल दिया अथवा उन्हें निकलने के लिए बाध्य कर दिया तो फिर वे समुदाय भी अल्लाह के प्रकोप से सुरक्षित नहीं रहे ।

हमारे नियमों में कभी परिवर्तन न पायेंगे ।[1]

أَقِمِ الصَّلَوٰةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْءَانَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْءَانَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ﴿٧٨﴾

(७८) नमाज़ स्थापित करें सूर्य ढलने से लेकर रात के अँधेरे तक[2] तथा प्रातः (फ़ज्र) का क़ुरआन पढ़ना भी । निःसंदेह प्रातः (फ़ज्र) के समय का क़ुरआन पढ़ना उपस्थित किया गया है ।[3]

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِۦ نَافِلَةً لَّكَ

(७९) तथा रात्रि के कुछ भाग में तहज्जुद (की नमाज़ में क़ुरआन) पढ़ा करें,[4] यह अधिकता

---

[1]अतः मक्कावासियों को भी यही हुआ कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत के डेढ़ वर्ष पश्चात ही उन्हें बद्र के मैदान में अपमानजनक पराजय का मुख देखना पड़ा तथा छः वर्ष पश्चात ८ हिजरी में मक्का ही विजय हो गया तथा इस अपमान तथा अनादर के पश्चात सिर उठाने योग्य न रहे ।

[2] دلوك का अर्थ ढलना तथा غسق का अर्थ अंधकार है । सूर्य ढलने के पश्चात ज़ोहर तथा अस्र की नमाज़ तथा रात्रि के अंधकार तक से तात्पर्य मग़रिब तथा इशा की नमाज़ें हैं तथा क़ुरआन अल-फ़ज्र से तात्पर्य फ़ज्र की नमाज़ है । क़ुरआन नमाज़ के अर्थ में है । इसको क़ुरआन की उपमा इसलिए दी गयी है कि फ़ज्र में क़ुरआन की आयतों का पाठ लम्बा होता है । इस प्रकार इस आयत में पाँचों अनिवार्य नमाज़ों का वर्णन आ जाता है जिसका विस्तृत वर्णन हदीसों में मिलता है तथा जो मुसलमानों के कर्म से भी सिद्ध है ।

[3]अर्थात उस समय फ़रिश्ते उपस्थित होते हैं, बल्कि दिन के फ़रिश्तों तथा रात्रि के फ़रिश्तों का मिलन होता है, जैसाकि हदीस में है (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः बनी इस्राईल) एक अन्य हदीस में है कि रात्रि वाले फ़रिश्ते जब अल्लाह के पास जाते हैं, तो अल्लाह तआला उनसे पूछता है, यद्यपि वह स्वयं भली-भाँति जानता है, तुम ने मेरे भक्तों को किस अवस्था में छोड़ा ? फ़रिश्ते उत्तर देते हैं कि जब हम उनके पास गये थे उस समय भी वह नमाज़ पढ़ रहे थे जब हम उनके पास से आये हैं तो उन्हें नमाज़ पढ़ते हुए छोड़कर आये हैं । (सहीह बुख़ारी किताबुल मवाक़ीत बाब फ़ज़्ले सलातील अस्रे व मुस्लिम बाबो सलाति स्सुब्हे वल अस्रे वल मुहाफ़ज़ते अलैहिमा)

[4]कुछ विद्वान कहते हैं तहज्जुद के दो प्रतिकूल अर्थ हैं, निद्रा तथा जाग्रण यहाँ इसी दूसरे अर्थ में है कि रात्रि को सोकर उठें और ऐच्छिक नमाज़ पढ़ें, कुछ कहते हैं कि हजूद का मूल अर्थ तो रात्रि के सोने के ही हैं किन्तु तफ़अउल में जाने से इसमें बचने के अर्थ उत्पन्न हो गये । जैसे تأثم का अर्थ है, वह पाप से बचा अथवा विलग रहा । इसी प्रकार

عَسَىٰٓ أَن يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝٧٩

आपके लिए है,[1] शीघ्र ही आपका प्रभु आपको महमूद नाम के स्थान पर खड़ा करेगा ।[2]

وَقُل رَّبِّ أَدْخِلْنِى مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِى مُخْرَجَ صِدْقٍ وَٱجْعَل لِّى مِن لَّدُنكَ سُلْطَٰنًا نَّصِيرًا ۝٨٠

(८०) तथा विनय किया करें कि हे मेरे प्रभु ! मुझे जहाँ ले जा अच्छी प्रकार से ले जा तथा जहाँ से निकाल अच्छी प्रकार निकाल तथा मेरे लिए अपने पास से प्रभाव तथा सहायता निर्धारित कर दे ।[3]

तहज्जुद का अर्थ होगा सोने (निद्रा) से बचना । तथा متهجد वह होगा जो रात्रि की निद्रा से बचा तथा नमाज़ पढ़ी । अत: तहज्जुद का भावार्थ रात्रि के अन्तिम भाग में उठकर ऐच्छिक नमाज़ पढ़ना है । सारी रात्रि नमाज़ पढ़ना सुन्नत के विरूद्ध है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात्रि के प्रथम भाग में सोते तथा अन्तिम भाग में उठकर तहज्जुद पढ़ते । यही विधि सुन्नत है ।

[1]कुछ ने इसके अर्थ किये हैं, यह एक अतिरिक्त कर्तव्य है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए विशेष है, इस प्रकार वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तहज्जुद भी उसी प्रकार अनिवार्य थी, जिस प्रकार पाँच नमाज़ें अनिवार्य थीं । परन्तु मुसलमानों के लिए तहज्जुद की नमाज़ अनिवार्य नहीं । कुछ विद्वान कहते हैं कि نافلة अतिरिक्त का अर्थ यह है कि यह तहज्जुद की नमाज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पदोन्नति के लिए अतिरिक्त चीज़ है, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो निष्पाप हैं, जबकि मुसलमानों के लिए यह तथा अन्य पुण्य के कार्य बुराईयों का प्रायश्चित हैं । तथा कुछ विद्वान कहते हैं कि نافلة नफ़िल: (ऐच्छिक) ही है अर्थात न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनिवार्य थी न मुसलमानों पर, यह एक अतिरिक्त इबादत है जिसकी महिमा नि:संदेह अधिक है तथा उस समय अल्लाह अपनी इबादत से अति प्रसन्न होता है । परन्तु यह नमाज़ अनिवार्य तथा आवश्यक न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हुई थी न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों पर ही अनिवार्य है ।

[2]यह वह स्थान है जो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान करेगा तथा उस स्थान पर ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह महा अभिस्तावना (सिफ़ारिश) करेंगे जिसके पश्चात लोगों का हिसाब-किताब होगा ।

[3]कुछ विद्वान कहते हैं कि यह हिजरत के अवसर पर अवतरित हुई जबकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीने में प्रवेश करने तथा मक्का से निकलने की समस्या थी, कुछ कहते हैं कि इसका अर्थ है मुझे सत्य के साथ मृत्यु देना तथा सत्य के साथ

(८१) तथा घोषणा कर दी कि सत्य आ गया तथा असत्य विध्वस्त हो गया । निःसंदेह असत्य था भी विलय होने योग्य ।[1]

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿٨١﴾

(८२) तथा यह क़ुरआन जो हम उतार रहे हैं ईमानवालों के लिए अत्यन्त स्वास्थ्य एवं कृपा है । हाँ, अत्याचारियों को क्षति के सिवा कोई अधिकता नहीं होती ।[2]

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۙ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾

(८३) तथा मानव पर जब भी हम अपना पुरस्कार करते हैं, तो वह मुख मोड़ लेता है तथा करवट बदल लेता है तथा जब भी उसे दुख होता है तो वह हताश हो जाता है ।[3]

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَـَٔا بِجَانِبِهِ ۖ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوسًا ﴿٨٣﴾

(८४) कह दीजिए कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी विधि अनुसार कार्यरत है, जो पूर्ण मार्गदर्शन

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ

क़ियामत के दिन उठाना । कुछ कहते हैं कि मुझे क़ब्र में सत्य के साथ प्रवेश देना तथा क़ियामत के दिन जब क़ब्र से उठाये तो सत्य के साथ क़ब्र से निकालना आदि । इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि चूँकि यह प्रार्थना है इसलिए इसके सामान्य अर्थ में वह सब बाते आ जाती हैं ।

[1]हदीस में आता है कि मक्का विजय के पश्चात जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "*ख़ानए-काबा*" में प्रवेश किया, तो वहाँ तीन सौ साठ मूर्तियाँ थीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में छड़ी थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छड़ी की नोक से उन मूर्तियों को मारते जाते तथा ﴿جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ﴾ तथा ﴿جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ﴾ पढ़ते जाते (सहीह बुख़ारी तफ़सीर बनी इस्राईल किताबुल मज़ालिम तथा मुस्लिम बाबु इज़ालतिल असनामे मिन हौलिल कअब:)

[2]इस भावार्थ की आयत सूर: यूनुस-५७ में गुज़र चुकी है, उसकी व्याख्या देखिये ।

[3]इसमें मनुष्य की उस अवस्था एवं दशा का वर्णन है जिसमें साधारणत: सुख के तथा दुख के समय घिरता है । सुख में वह अल्लाह को भूल जाता है तथा दुख में निराश हो जाता है । परन्तु ईमान वालों की दशा दोनों परस्थितियों में इससे भिन्न है । देखिये सूर: हूद की आयत ९ से ११ तक की व्याख्या ।

أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ۝٨٤

पर हैं उन्हें तुम्हारा प्रभु ही भली-भाँति जानता है ।[1]

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ ۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۝٨٥

(८५) तथा ये लोग आप से आत्मा के विषय में प्रश्न करते हैं, (आप) उत्तर दीजिए कि आत्मा मेरे प्रभु के आदेश से है तथा तुम्हें जो ज्ञान दिया गया है वह बहुत ही अल्प है ।[2]

وَلَئِن شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِٱلَّذِىٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِۦ عَلَيْنَا وَكِيلًا ۝٨٦

(८६) तथा यदि हम चाहें तो जो प्रकाशना (वह्यी) आप की ओर हमने उतारी है सब ले लें,[3] फिर आप को उसके लिए हमारे समक्ष कोई भी पक्षधर न मिल सकेगा ।[4]

[1]इसमें मूर्तिपूजकों के लिए धमकी तथा चेतावनी है तथा इसका वही भावार्थ है जो *सूर: हूद* की आयत १२१ तथा १२२ का है شَاكِلَة का अर्थ विचार, धर्म, विधि तथा व्यवहार एवं स्वभाव के हैं । कुछ विद्वान कहते हैं कि इसमें काफ़िर के लिए निन्दा तथा ईमानवालों के लिए प्रशंसा का पक्ष है क्योंकि इसका अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य ऐसा कर्म करता है, जो उसके उस व्यवहार तथा चरित्र पर आधारित होता है जो उसका स्वभाव एवं रीति होता है ।

[2]प्राण (आत्मा) वह सुक्ष्म वस्तु है जो किसी को दिखायी नहीं देती परन्तु प्रत्येक जीवधारी की शक्ति तथा बल उसी आत्मा में निहित है । इसकी यर्थाता तथा तथ्य क्या है ? यह कोई नहीं जानता । यहूदियों ने एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके विषय में पूछा तो यह आयत अवतरित हुई (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: बनी इस्राईल* तथा सहीह मुस्लिम किताब सिफ़तिल कियाम: वल जन्न: वन नार, बाबु सोवालिल यहूदिन् नबीय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनिर रूह) आयत का अर्थ यह है कि तुम्हारा ज्ञान अल्लाह के ज्ञान के सापेक्ष तुच्छ है, तथा यह आत्मा जिसके विषय में तुम पूछ रहे हो, इसका ज्ञान तो अल्लाह ने नबियों सहित किसी को भी नहीं दिया । बस इतना समझो कि यह मेरे प्रभु का आदेश है अथवा मेरे प्रभु की महिमा में से है जिसकी वास्तविकता केवल वही जानता है ।

[3]अर्थात प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा जो थोड़ा-सा ज्ञान दिया गया है यदि अल्लाह तआला चाहे तो उससे भी छीन ले अर्थात दिल से मिटा दे अथवा किताब से ही मिटा दे ।

[4]जो पुन: उसी प्रकाशना (वह्यी) को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर लौटा दे ।

إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ﴿٨٧﴾

(८७) अतिरिक्त आप के प्रभु की दया के।[1] नि:संदेह आप पर उसका अति उपकार है।

قُل لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَن يَأْتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾

(८८) कह दीजिए कि यदि सभी मानव तथा दानव मिलकर इस क़ुरआन के समान लाना चाहें तो उन सबसे इसके समतुल्य लाना असम्भव है, यद्यपि वे आपस में एक-दूसरे के सहायक भी बन जायें।[2]

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٨٩﴾

(८९) तथा हमने तो इस क़ुरआन में लोगों के समझने के लिए प्रत्येक रूप से सभी उदाहरण वर्णन कर दिये हैं, परन्तु अधिकतर लोग कृतघ्नता से नहीं रूकते।[3]

وَقَالُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنبُوعًا ﴿٩٠﴾

(९०) तथा उन्होंने कहा[4] कि हम आप पर कदापि ईमान लाने के नहीं, जब तक कि आप हमारे लिए धरती से जलस्रोत न निकाल दें।

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا ﴿٩١﴾

(९१) अथवा स्वयं आपके लिए कोई बाग हो खजूरों तथा अंगूरों का एवं उसके मध्य आप बहुत-सी नहरें बहती हुई निकाल कर दिखायें।

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا

(९२) अथवा आप आकाश को हम पर खंड-खंड करके गिरा दें जैसाकि आपका विचार

---

[1]कि उसने अवतरित की हुई प्रकाशना (वह्यी) को नहीं मिटाया अथवा अल्लाह की प्रकाशना (वह्यी) से आपको सम्मानित किया।

[2]पवित्र क़ुरआन मजीद से सम्बन्धित यह (चुनौती) पहले भी कई स्थानों पर गुज़र चुकी है। यह चैलेंज (चुनौती) अभी तक उत्तर की खोज में है।

[3]यह आयत इसी सूर: के प्रारम्भ में भी गुज़र चुकी है।

[4]ईमान लाने के लिए मक्का के क़ुरैशियों ने यह माँगें प्रस्तुत कीं।

كِسَفًا أَوْ تَأْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيلًا ﴿٩٢﴾

है, अथवा आप स्वयं अल्लाह (तआला) को तथा फ़रिश्तों को हमारे समक्ष ला खड़ा करें ।[1]

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّن زُخْرُفٍ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَآءِ ۚ وَلَن نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتَّىٰ تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهُۥ ۗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٣﴾

(९३) अथवा आप के अपने लिए कोई स्वर्ण का घर[2] हो जाये अथवा आप आकाश पर चढ़ जायें तथा हम तो आपके चढ़ जाने का भी उस समय तक विश्वास नहीं करेंगे जब तक कि आप हम पर कोई किताब न उतार लायें, जिसे हम स्वयं पढ़ लें[3] आप उत्तर दें कि मेरा पालनहार पवित्र है, मैं तो एक मानव पुरूष हूँ जो रसूल (संदेशवाहक) बनाया गया हूँ ।[4]

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوٓا

(९४) तथा लोगों के पास मार्गदर्शन पहुँच चुकने के पश्चात ईमान से रोकने वाली केवल

---

[1]अर्थात हमारे सम्मुख आकर खड़े हो जायें तथा हम उन्हें अपनी आँखों से देखें ।

[2] زخـــرف का वास्तविक अर्थ शोभा है । مزخرفٌ शोभित वस्तु को कहते हैं । परन्तु यहाँ इसका अर्थ स्वर्ण है ।

[3]अर्थात हममें से प्रत्येक व्यक्ति उसे साफ़-साफ़ स्वयं पढ़ सकता हो ।

[4]अर्थ यह है कि मेरे प्रभु के अन्दर तो हर प्रकार की शक्ति है, वह चाहे तो तुम्हारी माँगें क्षण भर में कुन كن शब्द से ही पूरी कर दे । परन्तु जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं तो (तुम्हारी तरह) एक मनुष्य हूँ । क्या कोई मनुष्य इन वस्तुओं का सामर्थ्य रखता है कि मुझ से इन की माँग करते हो ? हाँ, मैं इसके साथ अल्लाह का रसूल भी हूँ । परन्तु रसूल का कार्य केवल अल्लाह का संदेश पहुँचाना है,तो वह मैंने पहुँचा दिया तथा पहुँचा रहा हूँ । लोगों की माँग पर चमत्कार दिखाना यह रिसालत का भाग नहीं है । यदि अल्लाह चाहे तो रिसालत क़ी सत्यता के लिए एक-आध चमत्कार दिखा दिया जाता है, परन्तु यदि लोगों की इच्छा पर चमत्कार दिखाना प्रारम्भ कर दिया जाये तो यह श्रृंखला कभी नहीं समाप्त होगी, प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार नया चमत्कार देखने की कामना करेगा तथा रसूल केवल इसी काम पर लगा रह जायेगा, धर्म की शिक्षा एवं आमन्त्रण देने का मूल कार्य ठप हो जायेगा । इसलिए चमत्कार का घटित होना केवल अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है, जिसका ज्ञान उसके अतिरिक्त किसी को नहीं । मैं भी उसकी इच्छा में हस्तक्षेप करने का अधिकारी नहीं ।

إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَن قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٤﴾

यही वस्तु रही कि उन्होनें कहा, क्या अल्लाह ने एक मानव पुरूष को ही रसूल (अवतार) बनाकर भेजा ?[1]

قُل لَّوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَّسُولًا ﴿٩٥﴾

(९५) (आप) कह दें कि यदि धरती पर फ़रिश्ते चलते-फिरते तथा निवास करते होते, तो हम भी उनके पास किसी आकाशीय फ़रिश्ते को ही रसूल बनाकर भेजते ।[2]

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾

(९६) कह दीजिए कि मेरे तथा तुम्हारे मध्य अल्लाह का गवाह होना बस है ।[3] वह अपने भक्तों से भली-भाँति परिचित एवं भली प्रकार देखने वाला है ।

وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِهِ ۖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا ۖ مَّأْوَاهُمْ

(९७) तथा अल्लाह जिसका मार्गदर्शन कर दे वह मार्गदर्शन-प्राप्त है तथा जिसे वह मार्ग से भटका दे असम्भव है कि तू उसका मित्र उस के अतिरिक्त अन्य को पा ले ।[4] ऐसे लोगों को हम क़ियामत वाले दिन औंधे मुँह एकत्रित

---

[1]अर्थात किसी मनुष्य का रसूल होना काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के लिए अत्यन्त आश्चर्य की बात थी, वह यह बात मान नहीं रहे थे कि हमारे जैसा व्यक्ति, जो हमारी तरह चलता-फिरता है, हमारी तरह खाता-पीता है, हमारी तरह व्यक्तिगत सम्बन्धों से सम्बन्धित है, वह रसूल बन जाये । यह आश्चर्य उनके ईमान लाने में रूकावट था ।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब धरती पर मनुष्य बसते हैं, तो उनके मार्गदर्शन के लिए रसूल भी मनुष्य ही होंगे । अमानुष रसूल, मनुष्य के मार्गदर्शन का कर्तव्य पूरा नहीं कर सकता । हाँ यदि धरती पर फ़रिश्ते बसते होते तोउनके लिए रसूल भी अवश्य फ़रिश्ते होते ।

[3]अर्थात मेरे ऊपर जो धर्म का आदेश पहुँचाने का भार था वह मैंने पहुँचा दिया, इस विषय में मेरे तुम्हारे मध्य अल्लाह का साक्षी होना पर्याप्त है, क्योंकि हर चीज़ का निर्णय उसी के हाथ में है ।

[4]मेरे सतर्क करने तथा निर्देश देने से कौन ईमान लाता है, कौन नहीं, यह भी अल्लाह के अधिकार में है, मेरा कार्य केवल संदेश पहुँचाना है ।

جَهَنَّمُ ۖ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَٰهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾

करेंगे ।[1] जबकि वे अंधे, गूँगे तथा बहरे होंगे ।[2] उनका ठिकाना नरक होगा। जब कभी वह हल्की होने लगेगी, हम उन पर उसे और भड़का देंगे।

ذَٰلِكَ جَزَآؤُهُم بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا وَقَالُوٓا۟ أَءِذَا كُنَّا عِظَٰمًا وَرُفَٰتًا أَءِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾

(९८) ये सब हमारी निशानियों से इंकार करने तथा यह कहने का परिणाम है कि क्या जब हम अस्थियाँ तथा कण-कण हो जायेंगे फिर हम नवजात करके उठा खड़े किये जायेंगे ।[3]

أَوَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّ ٱللَّهَ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰٓ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا

(९९) क्या उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि जिस अल्लाह ने आकाश तथा धरती को पैदा किया वह उन जैसों को पैदा करने का पूर्ण सामर्थ्य रखता है।[4] उसी ने उनके

---

[1]हदीस में आता है कि सहाबा कराम (नबी के सहचर) ने आश्चर्य का प्रदर्शन किया कि औंधे मुख किस प्रकार का हश्र होगा ? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "जिस अल्लाह ने उनको पैरों से चलने की शक्ति प्रदान की है, वह इस बात का भी सामर्थ्य रखता है कि वह उनको मुख के बल चला दे।" (सहीह बुख़ारी सूर: *अल-फ़ुरक़ान* तथा सहीह मुस्लिम सिफ़तुल क़ियाम: वल जन्न: वल नार बाब युहशरूल काफ़िरो अला-वज्हेही)

[2]अर्थात जिस प्रकार वह संसार में सत्य के विषय में अंधे, बहरे तथा गूँगे बने रहे, प्रलय (क़ियामत) के दिन दण्ड स्वरूप अंधे, बहरे तथा गूँगे होंगे।

[3]अर्थात नरक का यह दण्ड उन्हें इसलिए दिया जायेगा कि उन्होंने हमारी उतारी हुई आयतों को नहीं माना तथा सृष्टि में फैली हुई निशानियों पर विचार नहीं किया, जिसके कारण उन्होंने क़ियामत तथा मृत्यु के पश्चात जीवित किये जाने पर आश्चर्य व्यक्त किया तथा कहा कि हड्डियों तथा कण-कण हो जाने के पश्चात हमें एक नया जीवन कैसे मिल सकता है।

[4]अल्लाह तआला ने उनका उत्तर दिया कि जो अल्लाह आकाश तथा धरती का स्रष्टा है, वह उन जैसों को पैदा करने अथवा पुनः उन्हें जीवन देने का सामर्थ्य रखता है, क्योंकि यह आकाश तथा धरती की उत्पत्ति से अधिक सरल है।

لَا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾

लिए एक ऐसा समय निर्धारित कर रखा है, ज़ो शंका तथा संदेह से पूर्णत: शून्य है,[1] परन्तु अन्यायी लोग कृतघ्न बने बिना रहते नहीं।

قُلْ لَوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾

(१००) कह दीजिए कि (यदि मान लिया जाये) यदि तुम मेरे प्रभु की कृपाओं के कोष के स्वामी बन जाते तो तुम उस समय भी उसके व्यय हो जाने के भय से [2] उसमें कंजूसी करते तथा मनुष्य है ही संकीर्ण हृदय।

﴿ لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ ﴾

"आकाश तथा धरती की उत्पत्ति मनुष्यों की उत्पत्ति से अधिक कठिन कार्य है।" (*सूर: अल-मोमिन-५७*)

इसी विषय को अल्लाह तआला ने *सूर: अल-अहकाफ़*-३३ में तथा *सूर: यासीन*-८१ तथा ८२ में भी वर्णन किया है।

[1]इस निर्धारित समय से तात्पर्य मृत्यु अथवा क़ियामत है। यहाँ पूर्व वाक्य के अनुसार क़ियामत तात्पर्य लेना अधिक उचित है, अर्थात हमने उन्हें पुन: जीवित करके क़ब्रों से उठाने के लिए एक समय निर्धारित कर रखा है।

﴿ وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مَعْدُودٍ ﴾

"हम उनके मामले को एक निर्धारित समय तक के लिए टाल रहे हैं।" (*सूर: हूद-१०४*)

[2] خشية الإ نفاق का अर्थ है خشية أن ينفقوا فيفتقروا "इस भय से कि व्यय करके समाप्त कर डालेंगे, उसके पश्चात निर्धन हो जायेंगे।" यद्यपि यह अल्लाह का कोष है जो समाप्त होने वाला नहीं। परन्तु चूँकि मनुष्य संकीर्ण हृदय का सिद्ध हुआ है, इसलिए कंजूसी से काम लेता है। अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴾

"उनको यदि अल्लाह के राज्य में से कुछ भाग मिल जाये तो यह लोगों को कुछ न दें।" (*सूर: अल-निसा- ५३*)

نقير खजूर की गुठली में जो गढ़ा होता उसको कहते हैं, अर्थात तिल बराबर भी किसी को न दें। यह तो अल्लाह की कृपा है तथा उसका उपकार एवं दया है कि उसने अपने

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَاسْأَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا مُوسَىٰ مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾

(१०१) तथा हमने मूसा को नौ चमत्कार[1] अत्यन्त स्पष्ट प्रदान किये, तू स्वयं इस्राईल की संतान से पूछ ले कि जब वे उनके पास पहुँचे तो फ़िरऔन बोला कि हे मूसा ! मेरे विचार से तेरे ऊपर जादू कर दिया गया है।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنْزَلَ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ بَصَائِرَ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا فِرْعَوْنُ مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾

(१०२) (मूसा ने) उत्तर दिया कि यह तो तुझे ज्ञात हो चुका है कि आकाशों तथा धरती के प्रभु ही ने ये चमत्कार दिखाने तथा समझाने के लिए उतारे हैं, हे फ़िरऔन ! मैं तो समझ रहा हूँ कि तू निश्चय नाश कर दिया गया है।

فَأَرَادَ أَنْ يَسْتَفِزَّهُمْ مِنَ الْأَرْضِ

(१०३) (अन्त में) फ़िरऔन ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि उन्हें धरती से ही उखाड़ दे तो

भण्डारों के मुख लोगों के लिए खोल रखे हैं। जिस प्रकार हदीस में आता है, "अल्लाह के हाथ भरे हुए हैं। वह रात-दिन ख़र्च करता है, परन्तु उसमें कोई कमी नहीं आती। तनिक देखो तो, जब से आकाश तथा धरती उसने उत्पन्न किये हैं कितना ख़र्च किया होगा। परन्तु उसके हाथ में जो कुछ है उसमें कमी नहीं। (वह भरे हुए हैं)" (सहीह बुख़ारी, किताबुत तौहीद बाबु व कान अर्शोहु अलल्माए तथा सहीह मुस्लिम किताबुल ज़कात बाबुल हस्से अलल् नफ़क: व तबशीरूल मुनफ़िक बिल ख़लफ़)

[1]वे नौ चमत्कार हाथ का ज्योर्तिमय होना, लाठी का विभिन्न रूप से प्रयोग, अकाल, फलों की कमी, तूफ़ान, टिड्डी दल का आक्रमण, खटमल तथा जूँ की अधिकता होना, मेंढक तथा रक्त। इमाम हसन बसरी कहते हैं कि अकाल तथा फलों की कमी एक ही बात है तथा नवाँ चमत्कार लाठी का जादूगरों के जादू को अजगर बनकर निगल जाना है। आदरणीय मूसा को इनके अतिरिक्त भी चमत्कार प्रदान किये गये थे, जैसे लाठी का पत्थर पर मारना जिससे बारह पानी के स्रोत निकल गये थे बादलों की छाया करना, मन्न एवं सलवा आदि, परन्तु यहाँ नौ निशानियों से तात्पर्य वही नौ चमत्कार हैं जिन का प्रदर्शन फ़िरऔन तथा उसके अनुयायियों ने भी किया। इसीलिए आदरणीय इब्ने अब्बास ने समुद्र फटकर मार्ग बन जाना को भी चमत्कार में सम्मिलित किया है तथा अकाल एवं फलों के कम उत्पादन को एक ही चमत्कार माना है। तिर्मिजी के एक कथन में नौ चमत्कारों का विस्तृत वर्णन इससे भिन्न किया गया है। परन्तु प्रमाण से वह कथन क्षीण है, इसलिए नौ चमत्कार से तात्पर्य यही वर्णित चमत्कार हैं।

فَأَغْرَقْنَٰهُ وَمَن مَّعَهُۥ جَمِيعًا ﴿١٠٣﴾

हमने स्वयं उसे तथा उसके कुल साथियों को डुबो दिया।

وَقُلْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ لِبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱسْكُنُوا۟ ٱلْأَرْضَ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ ٱلْـَٔاخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा उसके पश्चात हम ने इस्राईल के पुत्रों से कह दिया कि उस धरती[1] पर तुम रहो सहो। हाँ, जब आख़िरत का वादा आयेगा, हम तुम सब को समेट तथा लपेट कर ले आयेंगे।

وَبِٱلْحَقِّ أَنزَلْنَٰهُ وَبِٱلْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿١٠٥﴾

(१०५) तथा हमने इस (क़ुरआन) को सत्यता के साथ उतारा[2] तथा यह भी सत्य के साथ उतरा। तथा हमने आपको केवल शुभसूचना देने वाला तथा सतर्क करने वाला बनाकर भेजा है।[3]

وَقُرْءَانًا فَرَقْنَٰهُ لِتَقْرَأَهُۥ عَلَى ٱلنَّاسِ

(१०६) तथा क़ुरआन को हमने थोड़ा-थोड़ा करके इसलिए उतारा है[4] कि आप इसे समय

---

[1]जैसाकि विदित होता है, इस धरती से तात्पर्य मिस्र है जिससे फ़िरऔन ने मूसा तथा उनके अनुयायियों को निकालने का विचार किया था। परन्तु इस्राईल की संतान का इतिहास साक्षी है कि वह मिस्र से निकलने के पश्चात पुनः मिस्र नहीं गये, बल्कि चालीस वर्ष *"तीह"* के मैदान में व्यतीत कर फ़िलस्तीन में प्रवेश किया। इसका प्रमाण *सूरः अल-आराफ़* आदि में क़ुरआन के वर्णन से भी मिलता है। इसलिए उचित यही है कि इससे तात्पर्य फ़िलस्तीन की धरती है।

[2]अर्थात सुरक्षित आप तक पहुँच गया, इसमें मार्ग में कोई कमी-अधिकता तथा कोई परिवर्तन एवं मिश्रण नहीं किया गया। क्योंकि इसका लाने वाला फ़रिश्ता शक्तिशाली, ईमानदार तथा दृढ़ फ़रिश्ता माना गया है। यह वे गुण हैं जो आदरणीय जिब्रील के सम्बन्ध में क़ुरआन में वर्णित किये गये हैं।

[3] مبشر (शुभसूचक) ईमान वालों के लिए तथा نذير (त्रासक) अवज्ञाकारियों के लिए।

[4] فرقناه का एक अन्य अर्थ بيناه तथा أو ضحناه (हमने उसे खोल कर अथवा स्पष्ट रूप से वर्णित कर दिया है) भी किये गये हैं।

عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿١٠٦﴾

पाकर लोगों को सुनायें तथा हमने स्वयं भी इसे थोड़ा-थोड़ा करके उतारा।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾

(१०७) कह दीजिए तुम इस पर ईमान लाओ अथवा न लाओ, जिन्हें इससे पूर्व ज्ञान प्रदान किया गया है उनके पास तो जब भी इसको पढ़ा जाता है, तो वे ठुड्डियों के बल दण्डवत् (सजदा) करने लगते हैं।[1]

وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा कहते हैं कि हमारा प्रभु पवित्र है, हमारे प्रभु का वचन निःसंदेह पूर्ण होकर रहने वाला ही है।[2]

وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾ ۩ سجدة

(१०९) तथा वे ठुड्डियों के बल रोते हुए दण्डवत् (सजदा) स्थिति में गिर पड़ते हैं तथा यह क़ुरआन उनकी विनम्रता तथा विनय और बढ़ा देता है।[3]

---

[1]अर्थात वे विद्वान जिन्होंने क़ुरआन के अवतरित होने से पूर्व प्राचीन पुस्तकें पढ़ी हैं तथा वे प्रकाशना (वह्यी) की वास्तविकता तथा रिसालत के लक्षण से परिचित हैं वह नतमस्तक होते हैं इस बात पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कि उन्हें अन्तिम रसूल की पहचान की सन्मति दी तथा क़ुरआन एवं रिसालत पर ईमान लाने का सौभाग्य प्रदान किया।

[2]अर्थ यह है कि यह मक्का के काफ़िर जो प्रत्येक बात से अपरिचित हैं, यदि ये ईमान नहीं लाते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चिन्ता न करें इसलिए कि जो ज्ञानी हैं तथा प्रकाशना (वह्यी) तथा रिसालत की वास्तविकता से भली प्रकार परिचित हैं वे इस पर ईमान ले आये हैं, बल्कि क़ुरआन सुनकर अल्लाह के सदन में नत्मस्तक हो गये हैं तथा उसकी पवित्रता का वर्णन करते हैं तथा प्रभु के वचन पर विश्वास रखते हैं।

[3]ठुड्डियों के बल सजदे में गिर पड़ने की पुनरावृत्ति है, क्योंकि प्रथम दण्डवत् अल्लाह की महिमा तथा सम्मान के लिए कृतज्ञता के रूप में था तथा क़ुरआन सुनकर उन पर जो भय तथा भाव जागृत हुए तथा उसके प्रभाव एवं मान से जिस सीमा तक प्रभावित हुएं उसने दूसरी बार उन्हे दण्डवत् (सजदः) करने पर बाध्य कर दिया।

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَّا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١١٠﴾

(११०) कह दीजिए कि अल्लाह को अल्लाह कहकर पुकारो अथवा रहमान (कृपालु) कह कर । जिस नाम से भी पुकारो, सभी अच्छे नाम उसी के हैं ।[1] न तो तू अपनी नमाज़ बहुत उच्च स्वर से पढ़ तथा न बिल्कुल छिपाकर, बल्कि उसके मध्य का मार्ग खोज ले ।[2]

---

[1]जिस प्रकार पूर्व में गुज़र चुका है कि मक्का के मूर्तिपूजकों के लिये अल्लाह के गुणवाचक नाम 'रहमान (दयालु), अथवा 'रहीम (कृपालु) अपरिचित थे तथा कुछ कथनों में आता है कि कुछ मूर्तिपूजकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख से *'या रहमान व रहीम'* (हे दयालु तथा कृपालु) के शब्द सुने तो कहा कि हमें तो यह कहता है कि केवल एक अल्लाह को पुकारो तथा स्वयं दो देवताओं को पुकार रहा है । जिस पर यह आयत अवतरित हुई । (इब्ने कसीर)

[2]इसके अवतरित होने के विषय में आदरणीय इब्ने अब्बास वर्णन करते हैं कि मक्का में रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छुपकर रहते थे, जब अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते तो आवाज़ थोड़ी बढ़ा लेते, मूर्तिपूजक क़ुरआन को सुनकर क़ुरआन को तथा अल्लाह को अपशब्द कहते, अल्लाह तआला ने फ़रमाया : अपनी आवाज़ को इतना उच्च न करो कि मूर्तिपूजक सुन कर क़ुरआन को अपशब्द कहें तथा अपनी आवाज़ न इतनी धीमी कर लो कि सहाबा भी न सुन सकें । (सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद बाब क़ौल अल्लाह तआला अन्ज़लहु बिइल्मेही वल मलायेकतु यशहदून तथा सहीह मुस्लिम किताबुस सलातु बाबुत तवस्सुत फ़िल क़िरअ त) स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घटना है कि एक रात्रि को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) की ओर से हुआ तो देखा कि वह धीमी आवाज़ से नमाज़ पढ़ रहे हैं । फिर आदरणीय उमर फ़ारूक़ (رضي الله عنه) को भी देखने का अवसर हुआ तो वह ऊँची आवाज़ से नमाज़ पढ़ रहे थे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों से पूछा तो आदरणीय अबू बक्र ने उत्तर दिया कि मैं जिसकी महिमा का वर्णन करने में लीन था, वह मेरी आवाज़ सुन रहा था, आदरणीय उमर ने उत्तर दिया कि मेरा उद्देश्य सोतों को जगाना तथा शैतान को भगाना था । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक (رضي الله عنه) से फ़रमाया कि अपनी आवाज़ थोड़ी बढ़ा लो तथा आदरणीय उमर (رضي الله عنه) से कहा अपनी आवाज़ कुछ कम रखो । (मिश्क़ात बाब सलातुल लैल, ससंदर्भ अबू दाऊद, तिर्मिज़ी) आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि यह आयत दुआ के विषय में अवतरित हुई । (बुख़ारी तथा मुस्लिम ससंदर्भ फ़तहुल क़दीर)

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿١١١﴾

(१११) तथा कह दीजिए कि सभी प्रशंसायें अल्लाह के लिए ही हैं, जो न संतान रखता है तथा न अपने राज्य में किसी को भागीदार रखता है, न वह ऐसा तुच्छ है कि उसका कोई सहायक हो तथा तू उसकी पूरी-पूरी महिमा का वर्णन करता रह।

सूरतुल कहफ़-१८

سُورَةُ الْكَهْفِ

सूर: कहफ़* मक्के में उतरी तथा इसमें एक सौ दस आयतें एवं बारह रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह कृपालु दया करने वाले के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَل لَّهُ عِوَجًا ﴿١﴾

(१) सभी प्रशंसायें उसी अल्लाह के लिए ही योग्य हैं, जिसने अपने भक्त पर यह क़ुरआन उतारा तथा उसमें कोई कमी शेष नहीं छोड़ी।[1]

---

*कहफ़ का अर्थ है गुफ़ा। इसमें गुफ़ा वालों का वर्णन है, इसलिए इसे सूर: कहफ कहा जाता है। इसके प्रारम्भिक दस आयतों तथा अन्तिम दस आयतों के महत्व का हदीस में वर्णन है, जो इनको याद करे तथा पढ़ेगा, वह दज्जाल के उपद्रव से सुरक्षित रहेगा (सहीह मुस्लिम फ़ज़्ल *सूर: अल-कहफ़*) जो इसका पाठ शुक्रवार के दिन करेगा अगले शुक्रवार तक उसके लिए एक विशेष प्रकार की ज्योति का प्रकाश रहेगा (मुस्तद्रक हाकिम २\३६८ तथा अलबानी ने इसे सहीह जामे सग़ीर संख्या ६४७० में सहीह कहा है)। इसके पढ़ने से घर में शान्ति तथा उन्नति होती है। एक बार एक सहाबी ने *सूर: कहफ़* पढ़ी। घर में एक पशु भी था वह बिदकना शुरू हो गया, उन्होंने ध्यान से देखा कि क्या बात है ? तो उन्हें एक बादल दिखायी दिया, जिसने उन्हें ढांप रखा था, सहाबी ने इस घटना का वर्णन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसे पढ़ा करो। क़ुरआन पढ़ते समय शान्ति उतरती है। (सहीह बुख़ारी संख्या ४७२४, मुस्लिम संख्या ७९५)

[1]अथवा कोई कमी तथा संतुलित मार्ग से विचलन इसमें नहीं रखी गयी है, अपितु इसे सीधा मार्ग रखा गया है अथवा قيم का अर्थ भक्तों के धार्मिक सांसारिक हित का ध्यान तथा रक्षा करने वाली किताब।

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ﴿٢﴾

(२) अपितु सभी कुछ ठीक-ठाक रखा ताकि अपने पास[1] की कड़ी यातना से सतर्क कर दे तथा ईमान लाने वाले एवं पुण्य कार्य करने वालों को शुभसूचना सुना दे कि उनके लिए उत्तम बदले हैं।

مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ﴿٣﴾

(३) जिसमें वे स्थाई रूप से सदैव निवास करेंगे।

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ﴿٤﴾

(४) तथा उन लोगों को भी डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह (तआला) सन्तान रखता है।[2]

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾

(५) वास्तव में न तो स्वयं उन्हें इसका ज्ञान है न उनके पूर्वजों को। यह आक्षेप[3] बड़ा बुरा है जो उनके मुख से निकल रहा है, वह केवल झूठ बक रहे हैं।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ﴿٦﴾

(६) फिर यदि ये लोग इस बात पर[4] ईमान न लायें, तो क्या आप उनके पीछे इसी दुख में अपने प्राण की हत्या कर डालेंगे।

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً

(७) धरती पर जो कुछ [5] है हमने उसे धरती की शोभा के लिए बनाया है कि हम उनकी

[1] مِن لَّدُنْه जो उस अल्लाह की ओर से उद्गम अथवा अवतरित होने वाला है।

[2]जैसे यहूदियों, इसाईयों तथा कुछ मूर्तिपूजकों (फ़रिश्ते अल्लाह की पुत्रियां हैं) का विश्वास है।

[3]इस वाक्य से तात्पर्य यही है कि 'अल्लाह की संतान है, जो पूर्ण रूप से असत्य है।

[4] هـذا الحديث (इस बात) से तात्पर्य क़ुरआन करीम है। काफिरों के ईमान लाने की जितनी तीव्र इच्छा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को थी तथा उनके मुख मोड़ने तथा अस्वीकार से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो अत्यधिक दुख होता था, इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इसी अवस्था तथा भाव का वर्णन है।

[5]धरती पर जो कुछ है, पशु, जीव, जड़, बनस्पति, खनिज एवं अन्य गड़े कोष, यह सब सांसारिक शोभा तथा उसकी सुन्दरता हैं।

परीक्षा ले लें कि उनमें से कौन पुण्य के कार्यों को करने वाला है।	لَهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝
(८) तथा इस पर जो कुछ है, हम उसे एक समतल मैदान कर डालने वाले हैं।[1]	وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۝
(९) क्या तू अपने विचार में गुफ़ा तथा शिलालेख वालों को हमारी निशानियों में से कोई अति विचित्र निशानी समझ रहा है?[2]	اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝
(१०) उन नवयुवकों ने जब गुफ़ा में शरण ली तो प्रार्थना की कि हे हमारे प्रभु! हमें अपने पास से कृपा प्रदान कर तथा हमारे कार्य में हमारे लिए मार्ग को सरल कर दे।[3]	اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝

---

[1] صعيدا साफ मैदान तथा جرزا बिल्कुल समतल, जिसमें कोई वृक्ष इत्यादि न हो। अर्थात एक समय आयेगा कि यह संसार इन सभी शोभा सहित नष्ट हो जायेगा तथा धरती एक समतल मैदान की भाँति हो जायेगी, इसके पश्चात हम पाप व पुण्य के कर्मों के आधार पर निर्णय देंगे।

[2] अर्थात यह एक मात्र बड़ी विचित्र निशानी नहीं है, बल्कि हमारी प्रत्येक निशानी विचित्र है। यह आकाश व धरती की सृष्टि तथा उसका प्रबन्ध, सूर्य तथा चन्द्रमा एवं तारामण्डल का नियन्त्रण, रात्रि-दिन का आना-जाना तथा अन्य बहुत सी निशानियाँ, क्या कम विचित्र हैं। كهف उस गुफ़ा को कहते हैं जो पर्वत में होती है। رقيم कुछ विद्वानों के निकट उस आबादी को कहते हैं जहाँ से ये नवयुवक गये थे, कुछ कहते हैं उस पर्वत का नाम है जिसमें यह गुफ़ा स्थित है। कुछ कहते हैं رقيم का प्रयोग مرقوم के अर्थ में किया गया है तथा यह एक तख़्ती है लोहे की अथवा सीसे की, जिस पर कहफ़ में सो रहे व्यक्तियों के नाम लिखे हैं। इसे رقيم इसीलिए कहा गया है कि इस पर नाम लिखे हैं। आधुनिक रिसर्च से ज्ञात हुआ कि प्रथम बात अधिक उचित है। जिस पर्वत में यह गुफ़ा स्थित है उसके निकट ही एक आबादी है जिसे अब الرقيب (अल-रक़ीब) कहा जाता है जो युग के परिवर्तन के कारण الرقيم (अल-रक़ीम) का परिवर्तित रूप है।

[3] ये वही नवयुवक हैं जिन्हें कहफ़ वाले कहा गया है (विस्तृत वर्णन आगे आयेगा) उन्होनें जब अपने धर्म की सुरक्षा के लिए गुफ़ा में शरण ली तो यह प्रार्थना की। कहफ़ वालों की इस कथा में नवयुवकों के लिए बड़ी शिक्षा है, आजकल के नवयुवकों का अधिकतर

فَضَرَبْنَا عَلَىٰٓ ءَاذَانِهِمْ فِى ٱلْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ⑪

(११) फिर हमने उनके कानों पर गणना के कई वर्षों तक उसी गुफ़ा में पर्दे डाल दिये ।[1]

ثُمَّ بَعَثْنَٰهُمْ لِنَعْلَمَ أَىُّ ٱلْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوٓا۟ أَمَدًا ⑫

(१२) फिर हमने उन्हें उठा खड़ा कर दिया कि हम यह जान लें कि दोनों गुटों में से इस दीर्घकाल को जो उन्होंने व्यतीत किये किसने अधिक याद रखा है ?[2]

نَّحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِٱلْحَقِّ ۚ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ ءَامَنُوا۟ بِرَبِّهِمْ

(१३) हम उनकी सत्य कथा तेरे समक्ष वर्णन कर रहे हैं। ये कुछ नवयुवक[3] अपने प्रभु पर

समय व्यर्थ में नष्ट होता है तथा अल्लाह की ओर तनिक भी ध्यान नहीं। काश ! आज का मुसलमान नवयुवक अपने यौवन के समय में क्षमा माँग कर पैग़म्बरों का अनुकरण करता तथा अपनी पूर्ण शक्ति एवं सामर्थ्य कोअल्लाह की इबादत में लगा देता।

[1]अर्थात कानों पर पर्दा डालकर उनके कानों को बन्द कर दिया ताकि बाहर की आवाज़ से उनकी निद्रा में व्यवधान न पड़े। अर्थ यह है कि हमने उन्हें गहरी निद्रा में सुला दिया।

[2]उन दो गुटों का अर्थ विरोध करने वाले लोग हैं। यह या तो उसी समय के लोग थे जिनके मध्य उनके विषय में मतभेद हुआ, अथवा रिसालत के समय के काफ़िर तथा ईमान वाले तात्पर्य हैं तथा कुछ कहते हैं कि ये कहफ़ वाले ही हैं उनके दो गुट बन गये थे। एक कहता था कि हम इतने समय तक सोये रहे। दूसरा उसको नकारता तथा प्रथम गुट से कम व अधिक समय बताता।

[3]अब सारांश के पश्चात विस्तृत वर्णन किया जा रहा है। ये नवयुवक कुछ विद्वान कहते हैं कि इसाई धर्म के अनुयायी थे तथा कुछ कहते हैं कि उनका समय आदरणीय ईसा से पूर्व का है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है। कहते हैं कि एक राजा था दक़ियानूस, जो लोगों को मूर्तिपूजा करने तथा उनके नाम पर भोग-प्रसाद चढ़ाने की शिक्षा देता था। अल्लाह तआला ने इन कुछ नवयुवकों के हृदय में यह बात डाल दी कि इबादत के योग्य तो एक मात्र अल्लाह ही है, जो आकाश तथा धरती का स्रष्टा है तथा अखिल जगत का प्रभु है। فِتْيَةٌ अल्पवाचक बहुवचन है, जिससे ज्ञात होता है कि इनकी संख्या नौ अथवा उससे भी कम थी। यह अलग होकर एक स्थान पर अल्लाह अकेले की इबादत करते थे। धीरे-धीरे लोगों में उनके एकेश्वरवाद के विश्वास की चर्चा होने लगी, तो राजा तक बात पहुँची तथा उसने उन लोगों को अपने दरबार में बुलाकर उनसे पूछा, तो वहाँ उन्होंने निर्भीक अल्लाह के एकेश्वरवाद का वर्णन किया। अन्त में राजा तथा अपने समुदाय के मूर्तिपूजकों के भय से अपने धर्म की सुरक्षा के लिए आबादी

وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾

ईमान लाये थे तथा हमने उनके मार्गदर्शन में उन्नति प्रदान की थी।

وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا۟ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾

(१४) तथा हमने उनके हृदय सुदृढ़ कर दिये थे,[1] जबकि ये उठ खड़े हुए[2] तथा कहने लगे कि हमारा प्रभु तो वही है, जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है, असम्भव है कि हम उसके अतिरिक्त किसी अन्य देवता को पुकारें। यदि ऐसा किया तो, हमने अत्यधिक अनुचित[3] बात कही।

هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾

(१५) यह है हमारा समुदाय जिसने उसके अतिरिक्त अन्य देवता बना रखे हैं। उनके प्रभुत्व का कोई स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं प्रस्तुत करते ? अल्लाह पर झूठ बात बाँधने वाले से अधिक अत्याचारी कौन है ?

وَ اِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا

(१६) तथा जबकि तुम उनसे तथा अल्लाह के अतिरिक्त उनके अन्य देवताओं से अलग हो

से दूर एक पर्वत की गुफ़ा में छिप गये, जहाँ अल्लाह तआला ने उन्हें गहरी निद्रा में सुला दिया तथा वे तीन सौ नौ वर्ष वहाँ सोते रहे।

[1]अर्थात हिजरत के कारण अपने प्रिय तथा सम्बन्धियों के बिछड़ने तथा सुख-सुविधापूर्ण जीवन से वंचित होने का जो दुख उन्हें उठाना पड़ा हमने उनके हृदय को दृढ़ कर दिया ताकि वे इन दुखों को सहन कर सकें। इसके अतिरिक्त सत्य वचन का कर्तव्य साहस के साथ अदा कर सकें।

[2]इस قيام (खड़े होने) से तात्पर्य अधिकतर व्याख्याकारों के निकट वह बुलावा है जो उनका राजा के सदन में हुआ तथा राजा के समक्ष खड़े होकर उन्होंने एकेश्वरवाद पर यह भाषण दिया, कुछ कहते हैं कि नगर के बाहर आपस में ही खड़े होकर एक-दूसरे को एकेश्वरवाद की वह बात बतायी जो व्यक्तिगत रूप से अल्लाह की ओर से उनके दिलों में डाल दी गयी तथा इस प्रकार एकेश्वरवादी आपस में एकत्रित हो गये।

[3] شططًا का अर्थ झूठ अथवा सीमा उल्लंघन करना है।

اللّٰهَ فَأْوٗا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾

गये हो, तो अब किसी गुफ़ा मे[1] जा बैठो, तुम्हारा प्रभु तुम पर अपनी दया करेगा तथा तुम्हारे कार्य में सुविधा उपलब्ध कर देगा।

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۭ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

(१७) तथा आप देखेंगे कि सूर्य उदय होने के समय उनकी गुफ़ा के दायीं ओर झुक जाता है तथा सूर्यास्त के समय उनकी बायीं ओर कतरा जाता है तथा वे उस गुफ़ा के विस्तृत स्थान में हैं।[2] यह अल्लाह की निशानियों में से है।[3] अल्लाह (तआला) जिसका मार्गदर्शन करे वे सत्यमार्ग पर है तथा जिसे वह भटका दे असम्भव है कि आप उसका कोई कार्यक्षम तथा मार्गदर्शक पा सकें।[4]

---

[1]अर्थात जब तुमने अपने समुदाय के देवताओं से अलगाव कर लिया है तो अब शारीरिक रूप से भी उनसे अलगाव कर लो। यह कहफ़ वालों ने आपस में कहा। अतः इसके पश्चात वे एक गुफ़ा में जा छुपे, जब उनके खो जाने का समाचार फैला तो खोज की गई परन्तु वे उसी प्रकार असफल रहे जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खोज में मक्का के काफ़िर सौर गुफ़ा तक पहुँच जाने के उपरान्त भी जिस में आप आदरणीय अबू बक्र (رضي الله عنه) के साथ उपस्थित थे, असफल रहे थे।

[2]अर्थात सूर्य उदय के समय दायीं दिशा को तथा अस्त के समय बायीं दिशा को कतराकर निकल जाता तथा इस प्रकार दोनों समय में उन पर धूप न पड़ती यद्यपि वह गुफ़ा में विस्तृत स्थान पर विश्राम कर रहे थे। فجوة का अर्थ है विस्तृत स्थान।

[3]अर्थात सूर्य का इस प्रकार निकल जाना कि खुला स्थान के होने के उपरान्त वहाँ धूप न पड़े, अल्लाह की निशानियों में से है।

[4]जैसे दक़ियानूस राजा तथा उसके अनुयायी मार्गदर्शन से वंचित रहे तो कोई उन्हें मार्ग दर्शन न दे सका।

(१८) तथा आप विचार करेंगे कि वे जाग रहे हैं, यद्यपि वे सो रहे थे।[1] तथा स्वयं हम उनको दाहिने-बायें करवटें दिलाया करते थे।[2] उनका कुत्ता भी चौखट पर अपने हाथ फैलाये हुए था। यदि आप झाँक कर देखना चाहते तो अवश्य उल्टे पाँव भाग खड़े होते तथा उनके भय तथा त्रास से आप भर दिये जाते।[3]

وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَهُمْ رُقُودٌ ۚ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُهُم بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ ۚ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

(१९) तथा उसी प्रकार हमने उन्हें जगाकर उठाया[4] कि आपस में पूछताछ कर लें। उन में से एक कहने वाले ने पूछा कि तुम कितनी देर ठहरे रहे? उन्होनें उत्तर दिया एक दिन अथवा एक दिन से भी कम।[5] कहने लगे कि तुम्हारे ठहरे रहने का पूरा ज्ञान अल्लाह

وَكَذَٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ ۚ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۖ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۚ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُم بِوَرِقِكُمْ هَٰذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ

---

[1] أيقاظ बहुवचन है يقظ का तथा رُقود बहुवचन है راقد का, वे जागते हुए इसलिए प्रतीत होते थे कि उनकी आँखें खुली हुई थीं, जिस प्रकार से जागे हुए व्यक्ति की होती है, कुछ विद्वान कहते हैं कि अधिक करवटें बदलने के कारण वे जगे हुए दिखायी देते थे।

[2]ताकि उनके शरीर को मिट्टी न खा जाये।

[3]यह उनकी सुरक्षा के लिए अल्लाह तआला की ओर से प्रबन्ध था ताकि कोई उनके निकट न जा सके।

[4]अर्थात जिस प्रकार हमने उनको अपनी शक्ति से सुला दिया था, उसी प्रकार तीन सौ नौ वर्ष बाद उनको हमने उठा दिया तथा इस प्रकार उठाया कि उनके शरीर उसी प्रकार सुरक्षित थे जिस प्रकार तीन सौ नौ वर्ष पूर्व सोते समय थे। इसीलिए आपस में एक-दूसरे से उन्होंने प्रश्न किये।

[5]अर्थात जिस समय वे गुफ़ा में गये, प्रातः काल का प्रथम चरण था तथा जिस समय जगे उस समय दिन का अन्तिम पहर था, इस आधार पर वे समझे कि शायद एक दिन अथवा उससे भी कम दिन के कुछ भाग में सोते रहे।

(तआला) को ही है ।[1] अब तो तुम अपने में से किसी को अपनी ये चाँदी देकर नगर भेजो वह ठीक प्रकार से देखभाल ले कि नगर का कौन-सा भोजन शुद्ध है ।[2] फिर उसी में से तुम्हारे भोजन के लिए ले आये, तथा वह अति सतर्कता एवं कोमल व्यवहार करे तथा किसी को तुम्हारी सूचना न होने दे ।[3]

فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَىٰ طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ⑲

(२०) यदि ये (काफ़िर) तुम पर अधिकार पालेंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे अथवा पुनः तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे, तो फिर तुम कदापि सफलता नहीं पा सकोगे ।[4]

إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ⑳

(२१) तथा हमने इस प्रकार लोगों को उनकी अवस्था से अवगत कर दिया[5] कि वे जान लें

وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ

---

[1]परन्तु अधिक सोने के कारण वे बड़े असमंजस्य में थे । अन्त में विषय अल्लाह को समर्पित कर दिया गया कि वह सही अवधि जानता है ।

[2]जागने के पश्चात भोजन जो मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है, उसकी व्यवस्था करने की चिन्ता हुई ।

[3]सावधानी तथा विनम्रता पर बल इस संभावना के कारण दिया, जिसके कारण वे नगर से निकलकर निर्जन स्थान पर आये थे । उसे सावधानी रखने के लिए कहा कि कहीं उसके व्यवहार से नगरवासियों को हमारा पता न लग जाये तथा हम पर कोई नई आपत्ति न घटित हो, जैसाकि अगली आयत में है ।

[4]अर्थात आख़िरत कि जिस सफलता के लिए हमने यह दुख तथा संकट सहन किया, स्पष्ट बात है कि यदि नगरवासियों ने हमें बाध्य करके फिर पूर्वजों के धर्म की ओर लौटा दिया, तो हमारा मूल उद्देश्य ही खो जायेगा । हमारी मेहनत भी व्यर्थ जायेगी तथा हम न धर्म के होंगे न संसार के ।

[5]अर्थात जिस प्रकार हमने उन्हें सुलाया तथा जगाया, उसी प्रकार हमने लोगों को उनके बारे में परिचित कर दिया । यह परिचय इस प्रकार हुआ कि जिस समय कहफ़ वालों का एक साथी चाँदी का वह सिक्का लेकर नगर में गया जो तीन सौ नौ वर्ष के राजा

وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

कि अल्लाह का वचन पूर्णतः सत्य है तथा क़ियामत में कोई संदेह व शंका नहीं, [1] जबकि वे अपनी बात में आपस में मतभेद कर रहे थे ।[2] कहने लगे इनकी गुफ़ा पर एक भवन निर्माण कर लो ।[3] उनका प्रभु ही उन की दशा का अधिक ज्ञानी है ।[4] जिन लोगों ने उनके विषय में प्रभाव प्राप्त किया, वे कहने

दक़ियानूस के काल का था तथा वह सिक्का एक दूकानदार को दिया, तो वह आश्चर्य-चकित रह गया, उसने पास के दुकान वाले को दिखाया, वह भी देखकर चकित रह गया, जबकि कहफ़ वालों का साथी कहता रहा कि मैं इसी नगर का वासी हूँ तथा कल ही यहाँ से गया हूँ, परन्तु इस 'कल' को तीन शताब्दियाँ व्यतीत हो चुकी थीं, लोग किस प्रकार उसकी बात को मान लेते ? लोगों को यह संदेह हुआ कि कहीं इस व्यक्ति को गड़ा हुआ धन तो नहीं प्राप्त हुआ । धीरे-धीरे यह बात राजा अथवा उसके अधिकारी तक पहुँची तथा उस साथी की सहायता से वह गुफ़ा तक पहुँचा तथा कहफ़ वालों से मिला । उसके पश्चात अल्लाह तआला ने उन्हें फिर मृत्यु दे दिया । (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात कहफ़ वालों की इस घटना से विदित होता है कि क़ियामत के घटित होने तथा मृत्यु के पश्चात खड़े किये जाने का अल्लाह का वचन सत्य है । अस्वीकार करने वालों के लिए घटना में अल्लाह की शक्ति का एक नमूना विद्यमान है ।

[2] إذ या तो समय सूचक है أعثرنا का अर्थात हमने उन्हें उस समय उनके हाल से परिचित कराया, जब वे मृत्यु के पश्चात खड़े किये जाने अथवा क़ियामत के घटित होने के विषय में आपस में झगड़ रहे थे अथवा यहाँ اذكُر लुप्त है अर्थात वह समय याद करो जब वह आपस में झगड़ रहे थे ।

[3]ये कहने वाले कौन थे ? कुछ विद्वान कहते हैं कि उस समय के ईमान वाले थे, कुछ कहते हैं कि राजा तथा उसके साथी थे, जब आकर उन्होंने मुलाकात की तथा उसके पश्चात अल्लाह ने उन्हें फिर सुला दिया, तो राजा तथा उसके साथियों ने कहा कि इनकी सुरक्षा के लिए एक भवन बना दिया जाये ।

[4]झगड़ा करने वालों को अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उनके विषय में सत्य ज्ञान अल्लाह ही को है ।

लगे कि हम तो उनके आस-पास मस्जिद बना लेंगे ।[1]

(२२) कुछ लोग कहेंगे कि गुफ़ा के लोग तीन थे तथा चौथा उन का कुत्ता था । कुछ कहेंगे कि पाँच थे छठाँ उन का कुत्ता था,[2] परोक्ष के विषय में (निशाना देखे बिना) अनुमान से पत्थर चला देना,[3] कुछ कहेंगे कि वे सात हैं तथा आठवाँ उनका कुत्ता[4] है । (आप) कह दीजिए

سَيَقُولُونَ ثَلَٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًۢا بِٱلْغَيْبِ ۖ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ قُل رَّبِّىٓ أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِم مَّا يَعْلَمُهُمْ

---

[1]यह प्रभाव प्राप्त करने वाले ईमान वाले थे अथवा काफ़िर तथा मूर्तिपूजक ? शौकानी ने प्रथम विचार को मान्यता दी है तथा इब्ने कसीर ने दूसरे विचार को । क्योंकि पुण्यकारी लोगों की क़ब्रों पर मस्जिदों का निर्माण अल्लाह को प्रिय नहीं । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَاءِهِمْ وَصَالِحِيهِمْ مَسَاجِدَ» .

"अल्लाह तआला यहूदियों तथा इसाईयों पर धिक्कार करे जिन्होंने अपने पैग़म्बरों तथा महात्माओं की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल जनायेज़ बाब मायकरह मिन इत्तेख़ाज़िल मस्जिदे अलल क़बूरे तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद वत्तेख़ाज़ि स्सोवरे फ़ीहा)

आदरणीय उमर (رضـــي الله عنـه) की ख़िलाफ़त (शासन काल) में ईराक़ में आदरणीय दानियाल की क़ब्र ज्ञात हुई तो आप ने आदेश दिया कि इसे छिपाकर सामान्य क़ब्रों जैसी कर दिया जाये ताकि लोगों के ज्ञान में न आये कि अमुक क़ब्र अमुक पैग़म्बर की है । (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2]यह कहने वाले तथा उनकी विभिन्न संख्या बताने वाले रिसालत के युग के ईमान वाले तथा काफ़िर थे । विशेष रूप से अहले किताब जो आकाशीय पुस्तकों से सूचित होने तथा ज्ञान का दावा करते थे ।

[3]अर्थात ज्ञान उनमें से किसी के पास नहीं है, जिस प्रकार बिना देखे कोई पत्थर मारे, यह भी उसी प्रकार आंकलन कर रहे हैं ।

[4]अल्लाह तआला ने केवल तीन कथनों का वर्णन किया है, प्रथम दो कथनों को رجمًا بالغيب (आंकलन) कहकर उनका खण्डन कर दिया तथा इस तीसरे कथन का वर्णन बाद में

إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٢﴾

कि मेरा प्रभु उनकी संख्या भली प्रकार जानने वाला है, उन्हें बहुत कम लोग जानते हैं,[1] फिर आप भी उन लोगों के विषय में केवल संक्षिप्त वार्ता ही करें ।[2] तथा उन में से किसी से उनके विषय में पूछताछ भी न करें ।[3]

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَاْىۡءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾

(२३) तथा कदापि किसी कार्य पर इस प्रकार न कहें कि मैं इसे कल करूँगा ।

إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ وَاذْكُر رَّبَّكَ

(२४) परन्तु साथ ही इंशा अल्लाह (अल्लाह ने चाहा तो) कह लें,[4] तथा जब भी भूलें

किया जिससे कुछ व्याख्याकारों ने यह भावार्थ निकाला है कि यह शैली इस कथन के सही होने का प्रमाण है तथा वास्तव में उनकी इतनी ही संख्या थी । (इब्ने कसीर)

[1]कुछ सहाबा से सम्बन्धित कथन है कि वे कहते थे मैं भी उन कम लोगों में से हूँ जो यह जानते हैं कि कहफ़ वालों की संख्या कितनी थी ? वह केवल सात थे जैसा कि तीसरे कथन में बताया गया है । (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात केवल इन्ही बातों पर बस करें जिनकी सूचना आपको प्रकाशना (वह्‌यी) द्वारा दी गयी है । अथवा संख्या के निर्धारण पर वाद-विवाद न करें, केवल यह कह दें कि इस निर्धारण का कोई प्रमाण नहीं है ।

[3]अर्थात विवादकारियों से उनके विषय में कुछ न पूछें, इसलिए कि जिससे पूछा जाये, उसको पूछने वाले से अधिक ज्ञान होना चाहिए, जबकि यहाँ परिस्थिति इसके विपरीत है । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तो फिर भी विश्वस्त ज्ञान का एक माध्यम प्रकाशना (वह्‌यी) मौजूद है जबकि अन्यों के पास आंकलन तथा अनुमान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं ।

[4]व्याख्याकार कहते हैं कि यहूदियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तीन बातें पूछीं थीं, आत्मा की वास्तविकता क्या है तथा कहफ़ वाले तथा ज़ुलक़रनैन कौन थे ? कहते हैं कि यही प्रश्न इस सूर: के अवतरित होने के कारण बने । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं तुम्हें कल उत्तर दूँगा, परन्तु उसके पश्चात पन्द्रह दिन तक जिब्रील प्रकाशना (वह्‌यी) लेकर नहीं आये । फिर जब आये तो अल्लाह तआला ने إن شاء الله कहने का आदेश दिया । आयत में غد (कल) से तात्पर्य आगामी दिवस है अर्थात जब भी निकट भविष्य अथवा देर से कोई कार्य करने का विचार करो तो إن شاء الله अवश्य कहा

إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰٓ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّى لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

अपने प्रभु को याद कर लिया करें[1] तथा कहते रहें कि मुझे पूरी आशा है कि मेरा प्रभु इससे भी अधिक मार्गदर्शन के निकट की बात का मार्गदर्शन करेगा ।[2]

وَلَبِثُوا۟ فِى كَهْفِهِمْ ثَلَٰثَ مِا۟ئَةٍ سِنِينَ وَٱزْدَادُوا۟ تِسْعًا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा वे लोग अपनी गुफ़ा में तीन सौ वर्ष तक रहे तथा नौ वर्ष और अधिक व्यतीत किये ।[3]

قُلِ ٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا۟ ۖ لَهُۥ غَيْبُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ أَبْصِرْ بِهِۦ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُم مِّن دُونِهِۦ مِن وَلِىٍّ وَلَا يُشْرِكُ

(२६) आप कह दीजिए कि अल्लाह ही को उनके ठहरे रहने के समय का भली-भाँति ज्ञान है, आकाशों तथा धरती का अंतर्ज्ञान मात्र उसी को है, वह क्या ही अच्छा देखने सुनने वाला है ।[4] अतिरिक्त अल्लाह के उनकी

करो । क्योंकि मनुष्य को तो पता नहीं कि वह जिस विचार को व्यक्त कर रहा है, उसको पूर्ण करने का सौभाग्य भी उसे अल्लाह की ओर से मिलना है अथवा नहीं ?

[1]अर्थात यदि बातचीत तथा वादा करते समय إن شاء الله कहना भूल जाओ, तो जिस समय याद आ जाये إن شاء الله कह लो अथवा फिर प्रभु को याद करने का अर्थ उसकी महिमा तथा प्रशंसा एवं उससे क्षमादान की प्रार्थना है ।

[2]अर्थात मैं जिसका संकल्प कर रहा हूँ, संभव है अल्लाह तआला उससे श्रेष्ठ तथा लाभकारी कार्य की ओर मेरा मार्गदर्शन करे ।

[3]अधिकतर व्याख्याकारों ने इसको अल्लाह का कथन कहा है । सूर्य की गणना से ३०० तथा चन्द्रमा की गणना से ३०९ वर्ष होते हैं । कुछ ज्ञानियों का विचार है कि यह उन लोगों का कथन है जो उनकी विभिन्न संख्या बताते थे जिसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है "अल्लाह ही को उनके ठहरे रहने का उचित ज्ञान है ।" जिसके अर्थ से वे वर्णित अवधि को नकारात्मक रूप में लेते हैं । परन्तु अधिकतर की व्याख्या के अनुसार इसका भावार्थ यह है कि अहले किताब अथवा कोई अन्य इस बतायी हुई अवधि से मतभेद करें तो आप उनसे कह दें कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह । जब उसने तीन सौ नौ वर्ष की अवधि बतायी है, तो यही ठीक है क्योंकि वही जानता है कि वह कितनी अवधि तक गुफ़ा में रहे ।

[4]यह अल्लाह के ज्ञान तथा सूचना गुण का अधिक स्पष्टीकरण है ।

فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ﴿٢٦﴾

कोई सहायता करने वाला नहीं, और अल्लाह तआला अपने आदेश में किसी को सम्मिलित नहीं करता।

وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۖ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾

(२७) तथा तेरी ओर जो तेरे प्रभु की किताब प्रकाशना (वह्यी) की गयी है उसे पढ़ता रह।[1] उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं, तू उसके अतिरिक्त कदापि-कदापि कोई शरण न पायेगा।[2]

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ

(२८) तथा अपने आपको उन्हीं के साथ रखा कर, जो अपने प्रभु को प्रातः तथा सायं पुकारते हैं तथा उसी के मुख (अनुग्रह) की चाहना करते हैं। सावधान! तेरी आँखें उनसे न हटने पायें[3] कि साँसारिक जीवन के वैभव के प्रयत्न

---

[1]वैसे तो यह सामान्य आदेश है कि जिस बात की भी प्रकाशना (वह्यी) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर की जाये, उसका पाठ करें तथा लोगों को इसकी शिक्षा दें। परन्तु कहफ़ वालों की कथा के अन्त में इस आदेश का तात्पर्य यह भी हो सकता है कि कहफ़ वालों के विषय में लोग जो चाहें कहते फिरें, परन्तु अल्लाह तआला ने इसके विषय में अपनी पुस्तक में जो कुछ तथा जितना कुछ वर्णन कर दिया है, वही ठीक है, वही लोगों को पढ़कर सुना दीजिए, इसके अतिरिक्त अन्य बातों पर ध्यान न दीजिए।

[2]अर्थात यदि इसके वर्णन करने में आनाकानी तथा विमुखता की, इसके वाक्यों में परिवर्तन का प्रयत्न किया, तो अल्लाह से आपको बचाने वाला कोई नहीं होगा। सम्बोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है, परन्तु मूल सम्बोधन मुसलमानों को है।

[3]यह वही आदेश है जो इससे पूर्व *सूरः अनआम* की आयत ५२ में गुज़र चुका है। तात्पर्य इनसे वे सहाबा केराम हैं जो निर्धन एवं कमज़ोर थे जिनके साथ बैठना कुरैश के धनवानों को स्वीकार न था। आदरणीय सआद बिन अबी वक़्क़ास कहते हैं कि हम छः आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, मेरे अतिरिक्त वे बिलाल, इब्ने मसऊद, एक हुज़ली तथा दो अन्य सहाबा थे। मक्का के कुरैश ने इच्छा प्रकट की कि उन लोगों को अपने पास से हटा दें ताकि हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात सुनें। नबी सल्लल्लाहु

اَلدُّنْيَاۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾

में लग जाओ ।[1] (देखो) उसका कहना न मानना जिसके दिल को हमने अपने स्मरण से विचलित कर दिया है, तथा जो अपनी मनोकामना के पीछे पड़ा हुआ है। तथा जिसका कर्म असीम हो चुका है।[2]

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۭ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۭ بِئْسَ الشَّرَابُ ۭ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾

(२९) तथा घोषणा कर दे कि यह निरा सत्य (क़ुरआन) तुम्हारे प्रभु की ओर से है। अब जो चाहे ईमान लाये तथा जो चाहे कुफ़्र करे। अत्याचारियों के लिए हमने वह आग तैयार कर रखी है जिसकी परिधि उन्हें घेर लेंगी। यदि वे आर्तनाद करेंगे तो उनकी सहायता उस पानी से की जायेगी जो तेलछट जैसा होगा जो चेहरे भून देगा, बड़ा ही बुरा पानी है, तथा बड़ा बुरा विश्राम स्थल (नरक) है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿۳۰﴾

(३०) नि:संदेह जो लोग ईमान लायें तथा पुण्य का कार्य करें, तो हम किसी पुण्य करने वाले के प्रतिफल को ध्वस्त नहीं करते।[3]

अलैहि वसल्लम के दिल में आया कि चलो शायद मेरी बात सुनने से उनके दिलों की दुनियाँ बदल जाये। परन्तु अल्लाह तआला ने कठोरता से ऐसा करने से रोक दिया। (सहीह मुस्लिम फ़ज़ायलुस सहाबा बाब फ़ज़्ले सआद बिन अबी वक़्क़ास)

[1] अर्थात इनको दूर करके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समाज में सम्मानित व्यक्तियों एवं धनवानों को अपने निकट करना चाहते हैं ?

[2] فرطا यदि إفراط से हो तो अर्थ होगा सीमा से पार तथा यदि تفريط से हो तो अर्थ होंगे कि इनके कार्य का फल हानि तथा विनाश है।

[3] क़ुरआन के वर्णन शैली के अनुसार नरकवासियों के वर्णन के पश्चात स्वर्ग में जाने वालों का वर्णन है ताकि लोगों के अन्दर स्वर्ग प्राप्त करने की इच्छा तथा उत्सुकता उत्पन्न हो।

(३१) उनके लिए स्थाई स्वर्ग हैं, उनके नीचे नदियाँ प्रवाहित होंगी, वहाँ ये स्वर्ण के कड़े पहनाये जायेंगे [1] तथा हरे रंग के कोमल एवं महीन तथा मोटे रेशम के वस्त्र पहनेंगे ।[2] वहाँ सिंहासन पर तकिये लगाये होंगे । क्या ही उत्तम बदला है तथा कितना उत्तम विश्रामगृह है ।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

(३२) तथा उन्हें उन दो व्यक्तियों का उदाहरण भी सुना दे [3] जिनमें से एक को हमने दो बाग़ अंगूरों के दे रखे थे, जिन्हें खजूरों के वृक्षों से हमने घेर रखा था ।[4] तथा दोनों के मध्य खेती पैदा कर दी थी ।[5]

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾

---

[1]क़ुरआन के अवतरित होने के समय में तथा उससे पूर्व रिवाज था कि राजा, धनवान तथा क़बीलों के मुखिया अपने हाथों में स्वर्ण के कड़े पहनते थे जिससे उनकी प्रतिष्ठा प्रदर्शित होती थी । स्वर्ग में जाने वालों को भी स्वर्ग में यह कड़े पहनायें जायेंगे ।

[2] سُندُس बारीक रेशम إستبرق मोटा रेशम । दुनियाँ में पुरूषों के लिए स्वर्ण तथा रेशमी वस्त्र निषेध हैं, जो लोग इस आदेशानुसार कर्म करेंगे, दुनियाँ में इन निषेधित वस्तुओं के प्रयोग से बचेंगे, उन्हें स्वर्ग में यह सारी वस्तुएँ प्राप्त होंगी, वहाँ कोई वस्तु निषेध नहीं होगी बल्कि स्वर्ग वाले जिस वस्तु की इच्छा करेंगे वह उपस्थित होगी ।

[3]व्याख्याकारों का इसमें मतभेद है कि वे दो व्यक्ति कौन थे ? अल्लाह तआला ने समझाने के लिए उदाहरण स्वरूप उनका वर्णन किया है अथवा वास्तव में दो व्यक्ति ऐसे थे ? यदि थे तो इस्राईल के वंश में गुज़रे हैं अथवा मक्कावासी थे, इनमें से एक ईमानवाला (निष्ठ) तथा दूसरा काफ़िर (अनिष्ठ) था ।

[4]जिस प्रकार चारदीवारी से सुरक्षा की जाती है, उसी प्रकार इन बाग़ों के चारों ओर खजूर के वृक्ष थे जो बाड़े तथा चारदीवारी का काम देते थे ।

[5]अर्थात दोनों बाग़ों के मध्य खेती होती थी जिनसे अनाजों की फ़सलें प्राप्त होती थीं । इस प्रकार दोनो बाग़ अनाज तथा फलों का संयोग था ।

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۙ﴿٣٣﴾

(३३) दोनों बाग़ अपने फल अत्यधिक लाये, और उसमें कोई कमी न की ।[1] तथा हमने उन बाग़ों के मध्य नहर प्रवाहित कर रखी थी ।[2]

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾

(३४) तथा (इस प्रकार) उसके पास फल थे, एक दिन उसने बातों ही बातों में अपने साथी [3] से कहा कि मैं तुझसे अधिक धनवान हूँ तथा जत्थे[4] में भी अधिक सम्मान वाला हूँ ।

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ۙ﴿٣٥﴾

(३५) तथा यह अपने बाग़ में गया और था अपने प्राण पर अत्याचार करने वाला, कहने लगा कि मैं विचार नहीं कर सकता कि किसी समय भी यह ध्वस्त हो जाये ।

وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾

(३६) तथा न मैं क़ियामत की स्थापना को मानता हूँ तथा यदि मान भी लूँ कि मैं अपने प्रभु की ओर लौटाया भी गया तो नि:संदेह मैं (उस लौटने के स्थान को) इससे भी अधिक उत्तम पाऊँगा ।[5]

---

[1]अर्थात अपनी पैदावार में कोई कमी नहीं करते थे, बल्कि भरपूर पैदावार देते थे ।

[2]ताकि बाग़ों की सिंचाई करनें में कोई बाधा न हो, अथवा वर्षा वाले क्षेत्रों की भाँति वर्षा पर आश्रित न रहें ।

[3]अर्थात बाग़ों के मालिक ने जो काफ़िर था, अपने साथी से कहा जो ईमान वाला था ।

[4] نفر (जत्थे) से तात्पर्य सन्तान तथा नौकर एवं कर्मचारी हैं ।

[5]अर्थात वह काफ़िर अभिमान एवं गर्व में ही लिप्त नही हुआ अपितु उसकी उन्मत्तता एवं भविष्य की सुन्दर एवं लम्बी आशाओं ने उसे अल्लाह की पकड़ तथा प्रतिकार से बिल्कुल बेसुध कर दिया । इसके अतिरिक्त उसने क़ियामत को ही नकार दिया । फिर दुराग्रह का प्रदर्शन करते हुए कहा कि यदि क़ियामत हुई भी तो वहाँ भी शुभ परिणाम मेरा भाग्य होगा । जिनकी अनिष्ठता तथा दुष्टता सीमा रहित हो जाती है, वह अभिमान के नशे में

قَالَ لَهُۥ صَاحِبُهُۥ وَهُوَ يُحَاوِرُهُۥٓ أَكَفَرْتَ بِٱلَّذِى خَلَقَكَ مِن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّىٰكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾

(३७) उसके साथी ने उससे बातें करते हुए कहा कि क्या तू उस (पूज्य) को नहीं मानता है जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया। फिर वीर्य से फिर तुझे पूरा इंसान (पुरूष) बना दिया।[1]

धुत होकर ऐसे ही अहंकार का दावा करते हैं। जैसे अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّىٓ إِنَّ لِى عِندَهُۥ لَلْحُسْنَىٰ﴾

"यदि मुझे प्रभु की ओर लौटाया गया तो वहाँ भी मेरे लिए अच्छाईयाँ ही हैं।"(*सूर: हा॰मीम॰ सजद:-५०*)

﴿أَفَرَءَيْتَ ٱلَّذِى كَفَرَ بِـَٔايَـٰتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا﴾

"क्या आप ने उस व्यक्ति को देखा जिसने हमारी आयतों का इंकार किया तथा दावा किया कि आख़िरत में भी मुझे माल तथा सन्तान से सम्मानित किया जायेगा।" (*सूर: मरियम-७७*)

[1]उसकी यह बातें सुनकर उसके ईमान वाले साथी ने उसको शिक्षा एवं उपदेश के रूप में समझाया कि तू अपने रचयिता के साथ कुफ्र कर रहा है जिसने तुझे मिट्टी तथा पानी (वीर्य) से उत्पन्न किया। मनुष्यों के पूर्वज आदरणीय आदम चूँकि मिट्टी से बनाये गये थे, इसलिए मनुष्यों का मूल मिट्टी ही हुई। फिर निकटवर्ती कारण वह वीर्य बना जो पिता की पीठ से निकल कर माता के गर्भाशय में गया, वहाँ नौ महीने रहा, नौ माह उसकी सेवा की। फिर उसे पूरा मानव बनाकर माता के गर्भाशय से निकाला। कुछ के निकट मिट्टी से पैदा होने का अर्थ है कि मनुष्य जो भोजन खाता है वे सभी धरती से अर्थात मिट्टी से ही प्राप्त होता है, इसी भोजन से वह वीर्य बनता है जो स्त्री के गर्भाशय में जाकर मनुष्य के जन्म का माध्यम बनता है। इस प्रकार भी प्रत्येक मनुष्य का मूल मिट्टी ही है। कृतघ्न मनुष्य को उसका मूल याद दिला कर उसे उसके स्रष्टा की ओर आकर्षित किया जा रहा है कि तू अपनी यथार्तता पर विचार कर, तथा फिर प्रभु के उपकार को देख कि तुझे उसने क्या कुछ बना दिया तथा उसकी रचना में कोई उसका साझीदार तथा सहायक नहीं है, यह सब कुछ करने वाला केवल तथा मात्र वह अल्लाह तआला ही है जिसको मानने के लिए तू तैयार नहीं है। आह, यह इन्सान कितना कृतघ्न है।

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٣٨﴾

(३८) परन्तु मैं (तो आस्था रखता हूँ कि) वही अल्लाह मेरा प्रभु है, मैं अपने प्रभु के साथ किसी को भी साझीदार न बनाऊँगा।[1]

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾

(३९) तथा तूने अपने बाग़ में जाते समय क्यों नहीं कहा कि अल्लाह का चाहा होने वाला है, कोई शक्ति नहीं किन्तु अल्लाह की सहायता से,[2] यद्यपि तू मुझे धन तथा संतान में कम देख रहा है।

فَعَسٰي رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾

(४०) परन्तु अति सम्भव है कि मेरा प्रभु मुझे तेरे इस बाग़ से भी उत्तम प्रदान कर दे[3] तथा इस पर आकाशीय आपत्ति भेज दे तो यह चौरसा तथा फिसलने वाला मैदान बन जाये।[4]

---

[1]अर्थात मैं तेरी तरह की बात नहीं करूँगा, बल्कि मैं तो अल्लाह के प्रभुत्ता तथा उसकी एकता को स्वीकार करता हूँ। इससे भी ज्ञात होता है कि दूसरा साथी मिश्रणवादी था।

[2]अल्लाह के उपकारों की कृतज्ञता व्यक्त करने की विधि बताते हुए कहा कि बाग़ में प्रवेश करते समय गर्व तथा घमण्ड का प्रदर्शन करने के बजाय यह कहा होता ما شاء الله لا قوة إلا بالله अर्थात जो कुछ होता है अल्लाह की इच्छा से होता है, वह चाहे तो उसे शेष रखे तथा चाहे तो नाश कर दे। इसीलिए हदीस में आता है कि जिस को किसी का धन, संतान अथवा दशा अच्छी लगे तो उसे ما شاء الله لا قوة إلا بالله पढ़ना चाहिए। (तफ़सीर इब्ने कसीर ससंदर्भ मुसनद अबु यअला)

[3]दुनिया में अथवा आख़िरत में अथवा दुनियाँ तथा आख़िरत दोनों स्थानों में।

[4] حسبان ، غفران के समरूप हिसाब से है। अर्थात ऐसा प्रकोप जो किसी के कर्मों के कारण आये। अर्थात आकाशीय प्रकोप द्वारा वह हिसाब ले। तथा यह स्थान जहाँ इस समय हरा भरा बाग़ है चिकना मैदान बन जाये।

أَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُۥ طَلَبًا ﴿٤١﴾

(४१) अथवा इसका पानी नीचे उतर जाये तथा तेरे वश में न रहे कि तू उसे ढूँढ लाये ।[1]

وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِۦ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَآ أَنفَقَ فِيهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِى لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّىٓ أَحَدًا ﴿٤٢﴾

(४२) तथा इसके (सारे) फल घेर लिये गये [2] फिर वह अपने इस ख़र्च पर जो उसने उस पर किया था अपने हाथ मलने लगा[3] तथा वह बाग़ छप्परा सहित ध्वस्त पड़ा था ।[4] तथा (वह व्यक्ति) कह रहा था कि हाय ! मैं अपने प्रभु के साथ किसी को भी साझी न बनाता ।[5]

وَلَمْ تَكُن لَّهُۥ فِئَةٌ يَنصُرُونَهُۥ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ﴿٤٣﴾

(४३) उसके पक्ष में कोई भी जत्था[6] न उठा कि अल्लाह से कोई उसका बचाव करता तथा न वह स्वयं ही बदला लेने वाला बन सका ।

---

[1]अथवा मध्य में जो नदी है, जो बाग़ की हरियाली तथा उपज का कारण है इसके पानी को इतनी गहराई में कर दे कि इससे पानी निकालना ही असम्भव हो जाये । तथा जहाँ पानी अधिक गहराई में चला जाये तो फिर वहाँ बड़ी-बड़ी अश्व शक्ति मोटरें तथा मशीनें भी पानी ऊपर खींच लाने में असफल रहती हैं ।

[2]यह संकेत है सत्यानाश ध्वस्त होने से अर्थात उसका सारा बाग़ नाश कर डाला गया ।

[3]अर्थात बाग़ के निर्माण तथा सुधार एवं खेती के ख़र्च पर हाथ मलने लगा, जो संकेत है उसके पश्चाताप का ।

[4]अर्थात जिन छतों तथा छप्परों पर अंगूरों की लतायें थीं, वे सभी धरती पर आ रही तथा अंगूरों की पूरी फ़सल नष्ट हो गई ।

[5]अब उसे आभास हुआ कि अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराना, उसके उपकार से लाभान्वित होकर उसके आदेश की अवहेलना करना तथा उसके समक्ष गर्व तथा घमण्ड करना किसी भी प्रकार एक मनुष्य को शोभा नहीं देता, परन्तु अब लज्जा एवं खेद का कोई लाभ नहीं था, अब पछताये क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत ।

[6]जिस जत्थे पर उसे गर्व था, वह भी उसके काम न आया न वह स्वयं ही अल्लाह की यातना से बचने का कोई प्रबन्ध कर सका ।

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۚ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾

(४४) यहीं से (सिद्ध है) कि अधिकार [1] उसी अल्लाह (तआला) सत्य के लिए है, वह प्रतिफल प्रदान करने तथा परिणाम के अनुसार अति उत्तम है ।[2]

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾

(४५) तथा उनके लिए साँसारिक जीवन का उदाहरण भी वर्णन कर, जैसे पानी जिसे हम आकाश से उतारते हैं, उससे धरती की उपज मिली-जुली होती है, फिर अन्त में वह चूर हो जाती है जिसे हवायें उड़ाये लिए फिरती हैं। और अल्लाह (तआला) हर वस्तु पर सामर्थ्य रखता है ।[3]

---

[1] ولايـة, का अर्थ है संरक्षण, अधिकार तथा सहायता, अर्थात उस स्थान पर प्रत्येक ईमान वाले तथा काफ़िर को ज्ञात हो जाता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई किसी का सहायक तथा उसकी यातना से बचाने का सामर्थ्य नहीं रखता है, यही कारण है कि फिर इस अवसर पर बड़े-बड़े दुष्ट तथा शक्तिशाली भी ईमान के प्रदर्शन पर बाध्य हो जाते हैं यद्यपि उस समय का ईमान लाभकारी तथा अंगीकार नहीं। जिस प्रकार क़ुरआन में फ़िरऔन के विषय में लिखा है कि जब वह डूबने लगा तो कहने लगा।

﴿ءَامَنتُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱلَّذِىٓ ءَامَنَتْ بِهِۦ بَنُوٓا۟ إِسْرَٰٓءِيلَ وَأَنَا۠ مِنَ ٱلْمُسْلِمِينَ﴾

"मैं उस अल्लाह पर ईमान लाया जिस पर इस्राईल के पुत्र ईमान रखते हैं तथा मैं मुसलमानों में से हूँ ।" *(सूर: यूनुस-९०)*

दूसरे काफ़िरों के विषय में कहा गया जब उन्होंने प्रकोप देखा तो कहा।

"हम एक अल्लाह पर ईमान लाये तथा जिनको हम अल्लाह का साझीदार बनाते थे, उनको अस्वीकार करते हैं ।" (*सूर: अल-मोमिन-८४*)

यदि ولايـة में واو (वाव अक्षर) के नीचे ज़ेर हो तो उसका अर्थ आदेश तथा अधिकार है, जैसाकि अनुवाद में यही अर्थ प्रयोग किया गया है (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात वही अपने मित्रों को श्रेष्ठ बदला देने वाला तथा सुन्दर सुफल से सम्मानित करने वाला है।

[3]इस आयत में दुनिया की परिवर्तनशीलता तथा अस्थिरता को खेती के एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है कि खेती में लगे हुए पौधों तथा पेड़ पर जब आकाश से वर्षा

(४६) धन तथा सन्तान तो साँसारिक जीवन की शोभा है,[1] परन्तु शेष रहने वाले पुण्य[2] तेरे पालनहार के समीप प्रतिफल के लिए तथा (भविष्य की) अच्छी आशा के लिए अति उत्तम हैं।

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَاۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾

(४७) तथा जिस दिन हम पर्वतों को चलायेंगे[3] तथा धरती को तू साफ़ खुली हुई देखेगा तथा

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةًۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ

होती है तो पानी पाकर खेती लहलहा जाती है तथा पौधे एवं वृक्ष नवजीवन से प्रफुल्लित हो जाते हैं, परन्तु फिर एक समय आता है कि खेती सूख जाती है पानी न मिलने के कारण अथवा फसल पक जाने के कारण। तो फिर हवायें उसको उड़ाये फिरती हैं। हवा का एक झोंका कभी दायीं ओर कभी बायीं ओर झुका देता है। दुनियाँ का जीवन भी हवा के एक झोंके अथवा पानी के बुलबुले अथवा खेती की तरह है, जो अपनी कुछ दिन की बहार दिखाकर विनाश के घाट उतर जाती है। तथा यह सारे कार्य उसी के हाथों से होता है, जो एक है तथा प्रत्येक वस्तु उसके अधीन है। अल्लाह तआला ने दुनिया का यह उदाहरण क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया है। जैसे *सूरः यूनुस*-२५, *सूरः-ज़ुमर*-२१ तथा *सूरः हदीद*-५० तथा अन्य आयतें।

[1]इसमें दुनिया के उन लोभियों का खण्डन है जो दुनिया के माल तथा सामग्री, क़बीला, परिवार एवं संतान पर गर्व करते हैं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया की नश्वर संसार की ये वस्तुएँ सामयिक शोभा हैं आख़िरत में यह वस्तयें कुछ काम नहीं आयेंगी। इसीलिए इस से आगे फ़रमाया कि आख़िरत में काम आने वाले कर्म तो वह हैं जो शेष रहने वाले हैं।

[2] باقيات صالحات (शेष रहने वाले पुण्य) कौन से अथवा कौन-कौन सी बातें हैं ? किसी ने नमाज़ को, किसी ने अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा कों, किसी ने कुछ अन्य सत्कर्मों को इसका चरितार्थ माना है। परन्तु उचित यह है कि यह सामान्य है तथा सभी पुण्यों को सम्मिलित है। सभी अनिवार्य, आवश्यक, सुन्नत एवं ऐच्छिक पुण्य कर्म स्थाई एवं नित्य हैं बल्कि निषेधित कार्यों से बचना भी एक सत्कर्म है, जिस पर अल्लाह की ओर से बदले तथा पुण्य की आशा है।

[3]यह क़ियामत की भयानकता तथा बड़ी-बड़ी घटनाओं का वर्णन है। पर्वतों को चलायेंगे का अर्थ है पर्वत अपने स्थान से हट जायेंगे तथा धुनी हुई रूई की भाँति उड़ जायेंगे। ﴿وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ﴾ [القارعة:٥] अन्य स्थानों पर देखिये *सूरः तूर*-९ तथा १०, *सूरः नम्ल*-८८ तथा *सूरः ताहा*-१०५ से १०७ तक। धरती से जब पर्वत

सभी लोगों को हम एकत्रित करेंगे, उनमें से किसी को शेष न छोड़ेंगे ।[1]

مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾

(४८) तथा सब के सब तेरे प्रभु के समक्ष पंक्तियों में उपस्थित किये जायेंगे ।[2] नि:संदेह तुम हमारे समक्ष उसी प्रकार आये जिस प्रकार हमने तुम्हें प्रथम बार पैदा किया था परन्तु तुम तो इसी भ्रम में रहे कि हम कदापि तुम्हारे लिए कोई वचन का दिन निर्धारित नहीं करेंगे ।

وَعُرِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّن نَّجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

(४९) तथा कर्मपत्र आगे में रख दिये जायेंगे । फिर तू देखेगा की पापी उसके लेख से भयभीत हो रहे होंगे तथा कह रहे होंगे की हाय, हमारा नाश यह कैसा लेख है जिसने कोई छोटा-बड़ा बिना घेरे नहीं छोड़ा तथा जो कुछ उन्होंने किया था सब कुछ उपस्थित पायेंगे तथा तेरा प्रभु किसी पर अत्याचार तथा अन्याय न करेगा ।

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا ۚ وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ﴿٤٩﴾

(५०) तथा जब हमने फ़रिश्तों को आदेश दिया कि आदम के समक्ष दण्डवत् (सजदा)

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا

जैसी चीज़ निरस्त हो जायेगी तो भवन, वृक्ष तथा इसी प्रकार की अन्य वस्तुएं किस प्रकार अपना अस्तित्व शेष रख सकेंगी ? इसीलिए आगे कहा गया, "तू धरती को स्वच्छ खुली हुई देखेगा ।"

[1]अर्थात आदि-अन्त के छोटे-बड़े, काफिर, मुसलमान सभी को एकत्रित करेंगे, कोई धरती की तह में पड़ा नहीं रह जायेगा तथा न क़ब्र से निकलकर किसी अन्य स्थान पर छिप सकेगा ।

[2]इसका अर्थ है कि एक ही पंक्ति में अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे अथवा पंक्तिबद्ध होकर अल्लाह के सदन में उपस्थित होंगे ।

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوٓا اِلَّآ اِبۡلِيۡسَؕ كَانَ مِنَ الۡجِنِّ فَفَسَقَ عَنۡ اَمۡرِ رَبِّهٖؕ اَفَتَتَّخِذُوۡنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوۡلِيَآءَ مِنۡ دُوۡنِىۡ وَهُمۡ لَـكُمۡ عَدُوٌّ ؕ بِئۡسَ لِلظّٰلِمِيۡنَ بَدَلًا ۝

करो, तो इब्लीस के अतिरिक्त सबने दण्डवत् किया, यह जिन्नों में से था[1] उस ने अपने प्रभु के आदेशों की अवहेलना की।[2] क्या फिर भी तुम उसे तथा उसकी संतान को मुझे छोड़ कर अपना मित्र बना रहे हो ? यद्यपि वह तुम सबका शत्रु है।[3] ऐसे अत्याचारियों का कितना बुरा बदला है।[4]

---

[1]कुरआन का यह स्पष्ट वर्णन है कि शैतान फ़रिश्ता नहीं था, फ़रिश्ता होता तो अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना करने का साहस ही न होता, क्योंकि फ़रिश्तों का गुण अल्लाह तआला ने वर्णन किया है।

﴿لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ﴾

"वह अल्लाह के आदेश की अवहेलना नहीं करते तथा वही करते हैं जिसका उन्हें आदेश दिया जाता है।" (*सूर: अल-तहरीम-६*)

इस स्थिति में यह संदेह रहता है, यदि वह फ़रिश्ता नहीं था तो फिर वह अल्लाह के आदेश से सम्बोधित ही नहीं था क्योंकि इसके सम्बोधित तो फ़रिश्ते थे, उन्हीं को नतमस्तक होने का आदेश दिया गया था। 'रूहुल मआनी' के लेखक ने कहा है कि वह फ़रिश्ता अवश्य नहीं था, परन्तु वह फ़रिश्तों के साथ रहता था तथा उन्ही में गणना होती थी, इसलिए वह भी اسجدوا لآدم के आदेश से सम्बोधित था तथा आदम के समक्ष नतमस्तक के आदेश के साथ उसको सम्बोधित किया जाना निश्चित है। अल्लाह का आदेश है : "जब मैंने तुझे आदेश दिया तो फिर तूने सजदा क्यों न किया।" (*सूर: अल-आराफ़-१२*)

[2] فِسق का अर्थ होता है निकलना, चूहा जब अपने बिल से निकलता है तो उसे अरबी भाषा में कहते है. «فَسقَتِ الفَأرَةُ مِنْ جُحْرِهَا» शैतान भी सम्मान तथा आदर सूचक दण्डवत (सजदा) के आदेश की अवहेलना करके प्रभु के आज्ञापालन से निकल गया।

[3]अर्थात क्या तुम्हारे लिए यह उचित है कि तुम ऐसे व्यक्ति को तथा उसके परिवार वालों को मित्र बनाओ, जो तुम्हारे पितामह आदम का शत्रु, तुम्हारा शत्रु है तथा तुम्हारे प्रभु का शत्रु है तथा अल्लाह को छोड़कर उस शैतान का अनुकरण करो ?

[4]एक अन्य अनुवाद इसका यह किया गया है "अत्याचारियों ने क्या बुरा बदला अपना लिया है।" अल्लाह के आदेशों का पालन तथा मित्रता छोड़कर शैतान का अनुसरण एवं उससे मित्रता की है जो अत्यधिक बुरा बदला है जिसे उन अत्याचारियों ने अपनाया है।

(५१) मैंने उन्हें आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति के समय उपस्थित नहीं रखा था तथा न स्वयं उन की अपनी उत्पत्ति में ।[1] तथा मैं भटकाने वालों को अपना बाहु बल बनाने वाला भी नहीं ।[2]

مَآ أَشْهَدتُّهُمْ خَلْقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنفُسِهِمْ وَمَا كُنتُ مُتَّخِذَ ٱلْمُضِلِّينَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

(५२) तथा जिस दिन वह कहेगा कि तुम्हारे विचार से जो मेरे साझीदार थे, उन्हें पुकारो । ये पुकारेंगे परन्तु उनमें से कोई उत्तर न देगा । तथा हम उनके मध्य विनाश का साधन बना देंगे ।[3]

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا۟ شُرَكَآءِىَ ٱلَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا۟ لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُم مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

(५३) तथा पापी नरक को देखकर समझ लेंगे कि वे इसी में जाने वाले हैं, परन्तु उससे बचने का स्थान न पायेंगे ।[4]

وَرَءَا ٱلْمُجْرِمُونَ ٱلنَّارَ فَظَنُّوٓا۟ أَنَّهُم مُّوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا۟ عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

[1]अर्थात आकाश तथा धरती की उत्पत्ति तथा उसके उपाय, बल्कि स्वयं इन शैतानों की उत्पत्ति में मैंने उन से अथवा उन में से किसी एक से कोई सहायता नहीं ली, यह तो उस समय उपस्थित नहीं थे । फिर तुम उस शैतान तथा उसके परिवार के लोगों की पूजा अथवा अनुगमन क्यों करते हो ? जबकि यह रचित है तथा मैं उन सबका रचयिता हूँ ।

[2]मान लो, यदि मैं उनको सहायक बनाता भी तो कैसे बनाता जबकि यह मेरे भक्तों को भटकाकर मेरे स्वर्ग तथा मेरे अनुग्रह से रोकते हैं ।

[3] موبق का एक अर्थ पर्दे तथा आड़ के किये गये हैं । अर्थात उनके मध्य आड़ तथा दूरी कर दी जायेगी, क्योंकि उनके मध्य आपस में बैर होगा । इसके अतिरिक्त इसलिए कि हश्र की अवधि में एक-दूसरे से न मिल सकें । कुछ विद्वान कहते हैं कि यह नरक में रक्त तथा पीव की विशेष घाटी है । तथा कुछ ने इसका अनुवाद विनाश किया है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है अर्थात ये मूर्तिपूजक तथा उनके मनगढ़न्त देवता, यह एक-दूसरे को मिल ही न सकेंगे क्योंकि उनके मध्य विनाश का साधन तथा भयानक वस्तुएँ होंगी ।

[4]जिस प्रकार कुछ कथनों में है कि काफ़िर अभी चालीस वर्ष की दूरी पर होगा कि विश्वास कर लेगा कि नरक उसका ठिकाना है । (मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ ७५)

(५४) तथा हमने इस क़ुरआन में हर-हर प्रकार से सभी उदाहरण लोगों के लिए वर्णन कर दिये हैं, परन्तु सभी वस्तुओं से अधिक झगड़ालू (कलह प्रिय) मानव है ।[1]

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

(५५) लोगों के पास मार्गदर्शन आ जाने के पश्चात उन्हें ईमान लाने तथा अपने प्रभु से क्षमा-याचना करने से केवल इसी बात ने रोका कि पूर्वजों का सा व्यवहार उनके साथ भी हो[2] अथवा उनके सामने प्रत्यक्ष प्रकोप आ जाये ।[3]

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

(५६) तथा हम तो अपने रसूलों को केवल इसलिए भेजते हैं कि वे शुभसूचना सुना दें तथा सावधान कर दें। काफ़िर लोग अनृत को प्रमाण बनाकर झगड़े चाहते हैं कि इससे सत्य को लड़खड़ा दें, वह मेरी आयतों (मंत्रों)

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ ۖ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي

---

[1]अर्थात हमने मनुष्यों को सत्यमार्ग समझाने के लिए क़ुरआन में प्रत्येक विधि का प्रयोग किया है, भाषण तथा वर्णन, उदाहरण तथा घटनाएं तथा प्रमाण एवं निशानियाँ, इसके अतिरिक्त उन्हें बार-बार विभिन्न प्रकार से वर्णन किया है, परन्तु मनुष्य अत्यधिक झगड़ालू है, इसलिए शिक्षा एवं उपदेश का उस पर न प्रभाव होता है तथा न प्रमाण एवं निशानियाँ उसके लिए प्रभावकर।

[2]अर्थात झुठलाने की अवस्था में उन पर भी प्रकोप उसी प्रकार आये जिस प्रकार इनसे पूर्व के समुदायों पर आया।

[3]अर्थात यह मक्कावासी ईमान लाने के लिए इन दो बातों में से किसी एक की प्रतीक्षा में हैं। परन्तु इन मूर्खों को यह समझ में नहीं आता कि उसके पश्चात ईमान लाने का कोई लाभ नहीं अथवा उसके पश्चात उनको ईमान लाने का अवसर ही कब मिलेगा ?

وَمَآ أُنذِرُوا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

तथा जिस वस्तु से डराया जाये उसे उपहास में उड़ाते हैं ।[1]

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِن تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَن يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٥٧﴾

(५७) तथा उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है जिसे उसके प्रभु की आयतों द्वारा शिक्षा दी जाये वह फिर भी मुख मोड़े रहे, तथा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेज रखा है उसे भूल जाये ? नि:संदेह हमने उनके दिलों पर उसकी समझ से पर्दे डाल रखे हैं तथा उनके कानों में बोझ है, यद्यपि तू उन्हें संमार्ग की ओर बुलाता रहे, परन्तु यह कभी भी मार्गदर्शन नहीं पायेंगे ।[2]

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُم بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۚ بَل لَّهُم مَّوْعِدٌ

(५८) तेरा पालनहार अति क्षमावान एवं कृपानिधि है, वह यदि उनके कर्मों के दण्ड में पकड़े तो नि:संदेह उन्हे शीघ्र ही यातना करे, अपितु उनके लिए एक वायदे का समय

---

[1]तथा अल्लाह की आयतों का उपहास उड़ाना, यह झुठलाने की निम्न कोटि है। इसी प्रकार कुरीति कुचाल से सत्य को असत्य सिद्ध करने का प्रयत्न करना भी अति निन्दनीय है। कुरीति द्वारा झगड़ने का एक रूप यह है जो काफ़िर रसूलों को यह कहकर उनकी रिसालत को अस्वीकार करते रहे कि तुम तो हमारे जैसे मनुष्य ही हो। ما أنتم إلا بشر مثلنا (*सूर: यासीन*-१५) हम तुम्हें किस प्रकार रसूल मान लें ? دَحَض का मूल अर्थ फिसलने के हैं। अरबी भाषा में कहा जाता है دحضت رجله (उसका पैर फिसल गया) यहाँ से यह किसी वस्तु के पतन (टलने) तथा بطلان के अर्थ में प्रयोग होने लगा। कहते हैं « دَحَضَتْ حُجَّتُهُ دُحُوضًا» أي : بَطَلَتْ (उसका तर्क असत्य सिद्ध हो गया) इस आधार पर أدحض يدحض का अर्थ होगा असत्य करना। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात उनके इस अत्यधिक घोर अत्याचार के कारण उन्होंने प्रभु की आयतों से मुँह फेर लिया तथा अपने करतूत को भूले रहे, उनके दिलों पर ऐसे आवरण तथा उनके कानों पर ऐसे बोझ डाल दिये गये जिससे क़ुरआन का समझना, सुनना तथा उससे मार्गदर्शन प्राप्त करना उनके लिए असम्भव हो गया। उनको कितना भी सत्य की ओर बुला लो यह कभी भी सत्य का मार्ग अपनाने के लिए तैयार नहीं होंगे।

لَّن يَجِدُوا مِن دُونِهِ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾

निर्धारित है जिससे वह भागने का कदापि स्थान नहीं पायेंगे।[1]

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾

(५९) तथा ये हैं वह बस्तियाँ जिन्हें हमने उन के अत्याचार के कारण ध्वस्त कर दिया तथा उनके विनाश का एक समय हमने निर्धारित कर रखा था।[2]

---

[1]अर्थात यह तो क्षमावान पालनहार की कृपा है कि वह पाप पर तुरन्त पकड़ नहीं करता अपितु अवसर प्रदान करता है, यदि ऐसा न होता तो अपने कर्मों के कारण प्रत्येक व्यक्ति ही अल्लाह की यातनाओं के पंजों में जकड़ा रहता। परन्तु यह अवश्य है कि जब यह अवसर की अवधि समाप्त हो जाती है तथा विनाश का वह समय आ जाता है जो अल्लाह ने निर्धारित किया होता है तो भागने का कोई मार्ग तथा बचाओ की कोई विधि उनके लिए शेष नहीं रहती। موئل का अर्थ है शरणागर, भागने का मार्ग।

[2]इससे तात्पर्य आद, समूद, आदरणीय शुऐब तथा आदरणीय लूत आदि के समुदाय हैं, जो हिजाज के क्षेत्र के निकट तथा उनके मार्गों में आबाद थे। उन्हें भी यद्यपि उनके अत्याचार के कारण ही नाश किया गया परन्तु विनाश से पूर्व उन्हें भी पूर्ण अवसर प्रदान किया गया तथा जब यह बात सिद्ध हो गयी कि अत्याचार तथा क्रूरता इस चरम सीमा को पहुँच गये, जहाँ से मार्गदर्शन असम्भव हो जाते हैं तथा उनसे पुण्य तथा भलाई की आशा शेष नहीं रही तो फिर उनके कर्म करने का अवसर समाप्त तथा विनाश का समय प्रारम्भ हो गया। फिर उन्हें सदैव के लिए मिटा दिया गया कि जैसे उनका अस्तित्व ही न रहा हो। अथवा दुनिया वालों के लिए शिक्षा प्राप्त करने का नमूना बना दिया गया। यह वास्तव में मक्कावासियों को समझाया जा रहा हैं कि तुम हमारे अन्तिम नबी सर्वश्रेष्ठ रसूल आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठला रहे हो, तुम यह न समझना कि तुम्हें यह जो अवसर मिल रहा है तो इसका यह अर्थ है कि तुम्हें कोई पूछने वाला नहीं है। बल्कि यह अवसर अल्लाह का नियम है, जो एक निर्धारित समय तक प्रत्येक व्यक्ति, गुट तथा समुदाय को वह प्रदान करता है। जब यह अवधि समाप्त हो जायेगी तथा तुम अपने कुफ्र तथा विरोध से नहीं रूकोगे तो फिर तुम्हारा अन्त भी उससे भिन्न नहीं होगा जो तुम से पूर्व के समुदायों का हो चुका है।

(६०) तथा जब मूसा ने अपने नवयुवक से कहा[1] कि मैं तो चलता ही रहूँगा, यहाँ तक कि दो नदियों के संगम[2] के स्थान पर पहुँचूँगा, चाहे मुझे वर्षों चलना पड़े ।[3]

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَىٰهُ لَآ أَبْرَحُ حَتَّىٰٓ أَبْلُغَ مَجْمَعَ ٱلْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِىَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

(६१) जब वे दोनों वहाँ पहुँचे जहाँ दोनों नदियों के संगम का स्थान था, वहाँ अपनी मछली भूल गये जिसने नदी में सुंरग जैसा अपना मार्ग बना लिया ।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَٱتَّخَذَ سَبِيلَهُۥ فِى ٱلْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

(६२) जब दोनों वहाँ से आगे बढ़े तो मूसा ने अपने नवयुवक से कहा कि हमारा अल्पाहार

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَىٰهُ ءَاتِنَا غَدَآءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِن سَفَرِنَا

[1]नवयुवक से तात्पर्य आदरणीय यूशअ बिन नून हैं जो मूसा की मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारी बने ।

[2]इस स्थान का निर्धारण किसी निश्चित प्रमाण से नहीं हो सका है फिर भी निकटता के आधार पर इससे तात्पर्य सीनाई के मरूस्थल का दक्षिणी किनारा है जहाँ अक़बा की खाड़ी तथा स्वेस की खाड़ी दोनों आकर मिलती तथा लाल सागर में जाकर विलीन हो जाती हैं । दूसरे स्थान जिनका वर्णन व्याख्याकारों ने किया है उन पर किसी प्रकार से दो सागरों के संगम का कथन सिद्ध ही नहीं होता ।

[3] حقبٌ का एक अर्थ ७० अथवा ८० वर्ष तथा दूसरा अर्थ अनिश्चित काल की अवधि है । यहाँ यही दूसरा अर्थ तात्पर्य है । अर्थात जब तक दो सागरों के संगम तक नहीं पहुँच जाऊँगा, चलता रहूँगा तथा यात्रा निरन्तर जारी रखूँगा, चाहे कितना भी समय लग जाये । आदरणीय मूसा को इस यात्रा की आवश्यकता इसलिए हुई कि उन्होंने एक अवसर पर एक प्रश्नकर्ता के उत्तर में कह दिया कि इस समय मुझसे बड़ा ज्ञानी कोई नहीं । अल्लाह तआला को उनका यह कथन पसन्द नहीं आया तथा प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा उन्हें बताया गया कि हमारा एक भक्त (ख़िज़्र) है जो तुझसे भी अधिक ज्ञानी है । आदरणीय मूसा ने पूछा कि हे अल्लाह ! उससे मुलाक़ात किस प्रकार हो सकती है ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जहाँ दो समुद्र मिलते हैं, वहीं हमारा वह भक्त होगा । इसके अतिरिक्त फ़रमाया कि मछली साथ ले जाओ, जहाँ मछली तुम्हारी टोकरी से निकलकर खो जाये तो समझ लेना कि यही स्थान है (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: *अल-कहफ़*) । अत: इस आदेश के अनुसार उन्होंने एक मछली ली तथा यात्रा प्रारम्भ कर दी ।

هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

दे, हमें तो अपनी इस यात्रा से अत्यधिक कठिनाई उठानी पड़ी।

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۡ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾

(६३) (उसने) उत्तर दिया कि क्या आप ने देखा भी ? जब हम पत्थर से टेक लगाकर विश्राम कर रहे थे, वहीं मैं मछली भूल गया था, वास्तव में शैतान ने मुझे भुला दिया कि मैं आप से इसकी चर्चा करूँ। उस मछली ने एक विचित्र रूप से नदी[1] में अपना मार्ग बना लिया।

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۙ ﴿٦٤﴾

(६४) (मूसा ने) कहा यही था जिसकी खोज में हम थे, तो वहीं से अपने पदचिन्हों को ढूँढते हुए वापस लौटे।[2]

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ

(६५) फिर हमारे भक्तों में से एक भक्त[3] को पाया, जिसे हमने अपने पास से विशेष

---

[1]अर्थात मछली जीवित होकर समुद्र में चली गयी तथ उसके लिए अल्लाह तआला ने समुद्र में सुरंग की भाँति मार्ग बना दिया। आदरणीय यूशअ ने मछली को समुद्र में जाते और मार्ग बनते हुए देखा, परन्तु आदरणीय मूसा को बताना भूल गये। यहाँ तक कि विश्राम करके वहाँ से फिर यात्रा प्रारम्भ की, उस दिन तथा उसके पश्चात रात्रि की यात्रा करके, जब दूसरे दिन आदरणीय मूसा को थकान तथा भूख का संवेदन हुआ तथा अपने नवयुवक साथी से कहा कि लाओ अल्पाहार कर लें। उसने उत्तर दिया, मछली तो जहाँ हमने पत्थर से टेक लगाकर विश्राम किया था, वहाँ जीवित होकर समुद्र में चली गयी थी तथा वहाँ विचित्र रूप से उसने अपना मार्ग बना लिया था, जिसकी मैं आपसे चर्चा करना भूल गया। तथा शैतान ने मुझे भुला दिया।

[2]आदरणीय मूसा ने कहा "अल्लाह के भक्त ! जहाँ मछली को जीवित होकर गायब होना था वहीं तो हमारा लक्ष्य था, जिसकी खोज में हम यात्रा कर रहे हैं।" अत: अब पद चिन्ह देखते हुए वापस लौटे तथा उसी दो साग़रों के संगम के स्थान पर वापस आ गये। قصصاً का अर्थ है पीछे लगना, पीछे-पीछे चलना अर्थात पद चिन्ह देखते हुए उनके पीछे-पीछे चलते रहे।

[3]उस भक्त से तात्पर्य आदरणीय ख़िज्र हैं जैसाकि सहीह हदीसों में स्पष्टीकरण है। ख़िज्र का अर्थ हरियाली है, यह एक बार धरती पर बैठे तो वह धरती का टुकड़ा नीचे से

مِنۡ لَّدُنَّا عِلۡمًا ﴿٦٥﴾

कृपा[1] प्रदान कर रखी थी तथा उसे अपने पास से विशेष[2] ज्ञान सिखा रखा था।

قَالَ لَهٗ مُوۡسٰى هَلۡ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنۡ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمۡتَ رُشۡدًا ﴿٦٦﴾

(६६) उससे मूसा ने कहा कि मैं आप का पालन करूँ कि आप मुझे उस सत्य ज्ञान को सिखा दें, जो आपको सिखाया गया है ?

قَالَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ صَبۡرًا ﴿٦٧﴾

(६७) उसने कहा आप हमारे साथ कदापि धैर्य नहीं रख सकते।

وَكَيۡفَ تَصۡبِرُ عَلٰى مَا لَمۡ تُحِطۡ بِهٖ خُبۡرًا ﴿٦٨﴾

(६८) तथा जिस वस्तु को आप ने अपने ज्ञान में[3] न लिया हो उस पर धैर्य रख भी कैसे सकते हैं ?

हरियाली बनकर लहलहाने लगा, इसी कारण उनका नाम ख़िज्र पड़ गया। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: *अल-कहफ़*)

[1]कृपा से कुछ व्याख्याकारों ने वे विशेष उपहार तात्पर्य लिये हैं, जो अल्लाह ने अपने उस विशेष भक्त को प्रदान किये तथा अधिकतर व्याख्याकारों ने इससे तात्पर्य नबूअत (ईशदूत्व) लिया है।

[2]उससे नबूअत के ज्ञान के अतिरिक्त जिससे आदरणीय मूसा भी परिचित थे, कुछ उत्पत्ति से सम्बन्धित बातों का ज्ञान है जिसे अल्लाह तआला ने केवल आदरणीय ख़िज्र को प्रदान किया था, आदरणीय मूसा के पास वह ज्ञान नहीं था। इससे भावार्थ निकालते हुए कुछ सूफ़ी (योगी) दावा करते हैं कि अल्लाह तआला कुछ लोगों को, जो नबी नहीं होते علم لـدني से सुशोभित करता है, जो बिना गुरू के मात्र अल्लाह की कृपा से प्राप्त होता है तथा यह आध्यात्मिक ज्ञान धार्मिक नियमों के भिन्न एवं विरूद्ध होता है। परन्तु यह भावार्थ इसलिए उचित नहीं कि आदरणीय ख़िज्र के विषय में तो अल्लाह तआला ने स्वयं उनको विशेष ज्ञान प्रदान करने का स्पष्टीकरण कर दिया है, जबकि किसी अन्य के लिए ऐसा स्पष्टीकरण कहीं नहीं, यदि इसको सामान्य कर दिया जाये तो फिर प्रत्येक जादूगर इस प्रकार का दावा कर सकता है, इस सम्प्रदाय में यह दावे सामान्य हैं। इसलिए ऐसे दावों का कोई औचित्य नहीं।

[3]अर्थात जिसका पूर्ण ज्ञान न हो।

قَالَ سَتَجِدُنِيٓ إِن شَآءَ ٱللَّهُ صَابِرًا وَلَآ أَعۡصِي لَكَ أَمۡرًا ۝٦٩

(६९) मूसा ने उत्तर दिया कि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान पायेंगे तथा किसी बात में आपकी अवज्ञा नहीं करूँगा।

قَالَ فَإِنِ ٱتَّبَعۡتَنِي فَلَا تَسۡـَٔلۡنِي عَن شَيۡءٍ حَتَّىٰٓ أُحۡدِثَ لَكَ مِنۡهُ ذِكۡرًا ۝٧٠

(७०) (उसने) कहा कि यदि आप मेरे साथ ही चलने की पुनराग्रह करते हैं, तो ध्यान रहे कि किसी वस्तु के सम्बन्ध में मुझ से कुछ न पूछना जब तक मैं स्वयं उसके सम्बन्ध में न बताऊँ।

فَٱنطَلَقَا حَتَّىٰٓ إِذَا رَكِبَا فِي ٱلسَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۖ قَالَ أَخَرَقۡتَهَا لِتُغۡرِقَ أَهۡلَهَا لَقَدۡ جِئۡتَ شَيۡـًٔا إِمۡرًا ۝٧١

(७१) फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि एक नाव में सवार हुए, (ख़िज़्र ने) उसके पटरे तोड़ दिये। (मूसा ने) कहा क्या आप उसे तोड़ रहे हैं कि नाव वालों को डूबा दें, आप ने तो बड़ा अनुचित[1] काम किया।

قَالَ أَلَمۡ أَقُلۡ إِنَّكَ لَن تَسۡتَطِيعَ مَعِيَ صَبۡرًا ۝٧٢

(७२) (ख़िज़्र ने) उत्तर दिया कि मैंने तो पहले ही तुझसे कह दिया था कि तू मेरे साथ कदापि धैर्य न रख सकेगा।

قَالَ لَا تُؤَاخِذۡنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرۡهِقۡنِي مِنۡ أَمۡرِي عُسۡرًا ۝٧٣

(७३) (मूसा ने) उत्तर दिया कि मेरी भूल पर मुझे न पकड़िये तथा मुझे मेरे विषय में कठिनाई में न डालिये।[2]

---

[1]आदरणीय मूसा को चूँकि इस विशेष ज्ञान की सूचना नहीं थी जिसके आधार पर ख़िज़्र ने नाव के पटरे तोड़ दिये थे, इसलिए धैर्य न रख सके तथा अपने ज्ञान तथा बुद्धि के आधार पर इसे अत्यन्त भयानक कार्य बताया। إمرا का अर्थ है الداهية العظيمة "अत्यन्त भयानक कार्य।"

[2]अर्थात मेरे साथ कोमल व्यवहार करें, कठोरता का नहीं।

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ۝

(७४) फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक बालक [1] को पाया, (ख़िज़्र ने) उसे मार डाला, (मूसा ने) कहा कि क्या आप ने एक पवित्र आत्मा को बिना किसी प्रतिहत्या के मार डाला? नि:संदेह आप ने तो बड़ी बुरी बात की ।[2]

[1]ग़ुलाम से तात्पर्य वयस्क नवयुवक भी हो सकता है तथा अल्पवयस्क बच्चा भी ।

[2] نُكراً، فظيعا منكرا لا يعـرف في الشـرع ऐसा बड़ा बुरा कार्य जिसका धार्मिक नियम में स्थान नहीं । कुछ ने कहा कि इसका अर्थ أنكر من الأمر الأول प्रथम कार्य (नाव के पटरे तोड़ने) से अधिक बुरा कार्य । इसलिए कि हत्या ऐसा कार्य है जिसकी क्षतिपूर्ति तथा समापन करना असम्भव है । जबकि नाव के पटरे उखाड़ देना, ऐसा कार्य है जिसकी पूर्ति तथा समापन का साधन है । कुछ ने इसके अर्थ किये हैं, प्रथम कार्य से कम, इसलिए कि एक प्राण की हत्या करना पूरी नाव में सवार यात्रियो को डुबो देने से कम है (फ़तहुल क़दीर) । परन्तु प्रथम भावार्थ ही उचित है क्योंकि आदरणीय मूसा को जिन धार्मिक नियमों का ज्ञान प्राप्त था, उसके आधार पर आदरणीय ख़िज़्र का यह कार्य किसी भी प्रकार से नियम के विरूद्ध था, जिसके आधार पर उन्होंने विरोध किया तथा उसे अत्यधिक बुरा कार्य बताया ।